मेरा राजस्थान

वर्ष-१५, अंक- ०५-०७ मुम्बई, जुलाई-सितम्बर २०२० सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ६४ मूल्य - १००.०० रूपए प्रति

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

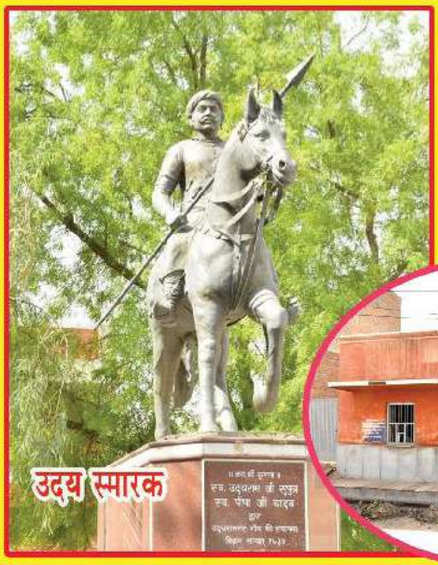

उदयरामसर

मिलवर्तन का मिसाल जन-जन में है
भाईचारा राजस्थान की गोद में राजस्थान की शान 'उदयरामसर'
के ऐतिहासिक प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

सुंदरलाल सिपानी

Lalit Sipani

Mob. : 9910249321

Sipani Electricals

Schneider Electric HAVELLS SIEMENS WIPRO EPSORI POLYCAB WIRES & CABLES SYSKA

1793, G/F, Bhagirath Palace, Delhi, Bharat - 110006
Ph. : 011 - 40396741 e-mail : sipani_delhi@yahoo.com

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान 'हिंदी' को दिलाओ राष्ट्रभाषा का सम्मान

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

http:// www.merarajasthan.co.in

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

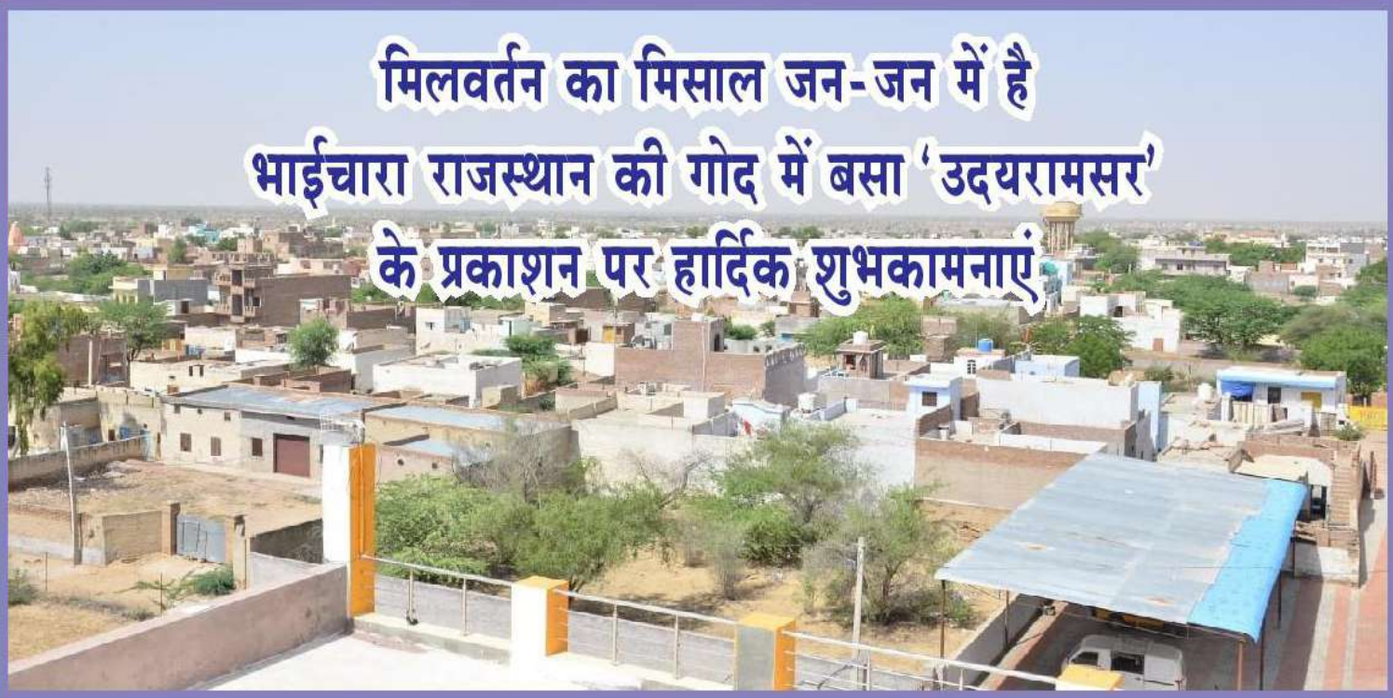

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Late Champalal Bothra

Thanmal Bothra
Mob. : 9830115759

उदयरामसर बीकानेर निवासी-हावड़ा प्रवासी

PAWAN DRESSMATERIAL PVT. LTD.

T-28, Akra Road, (Anand Market), 2nd Floor,
Kolkata, West Bengal, Bharat - 700 018
Ph. 033 - 2469 0688 / 1075, Mob. : 9830775152

मेरा राजस्थान

सम्पादक-बिजय कुमार जैन

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

पधारो म्हारे देश

मात्र रु. 100/- में, प्रति महिना

राजस्थान का इतिहास
पहुँचाए आपके हाथ

वार्षिक शुल्क 1,111/-
आजीवन शुल्क 11,111/-

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
पत्रिका मुफ्त

उदयरामसर माटी का...

उदयरामसर का एक...

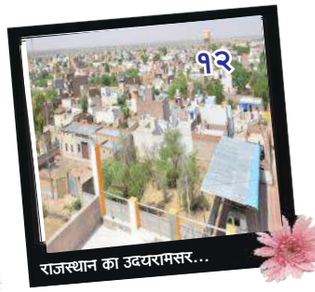

राजस्थान का उदयरामसर...

गाँव के भामाशाह...

धर्म के लिए...

महादानी महर्षि दधीचि...

जुलाई -सितम्बर २०२० के अंक की झलकियाँ

और भी बहुत कुछ....

'मेरा राजस्थान' अक्टूबर २०२० री विशेषतावां

महाराजा अग्रसेन जयंती

राजस्थान के बीकानेर जिले का एक कस्बा लूणकरनसर

वर्ष-१५ संयुक्तांक- ५-७ जुलाई-सितम्बर २०२०

१२ अंक वार्षिक १११/-

मेरा राजस्थान

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

'मेरा राजस्थान' के संरक्षक
स्व. रामनारायण घ. सराफ, मुम्बई

सम्पर्क करें...
सम्पादकीय कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राईवेट लिमिटेड
की शानदार प्रस्तुति
मेरा राजस्थान
बी- २१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, भारत - ४०० ०५९.
दूरध्वनि - ०२२-२८५० ९९९९
भ्रमणध्वनि: 9322307908
अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना : http//: www.merarajasthan.co.in
http//:www.bijayjain.com
bijaykumarjain1956@gmail.com
hindiwelfaretrust@gmail.com
Linkedin:hindiwelfaretrust@gmail.com
Instagram: hindiwelfaretrust@gmail.com

अपने व्यापार-समाज-स्वयं की वेबसाइट बनाने के लिए या
digital marketing के लिए संपर्क करें
gdigital World Ph: 022-28509999

सम्पादकीय ....

मीठा पाणी व वाणी री नगरी उदयरामसर

राजस्थान स्थित कई-कई गावों व शहरों का इतिहास प्रकाशन का मौका मुझे राजस्थान प्रवासियों व निवासियों ने दिया जिसके लिए 'मेरा राजस्थान' परिवार गौरवान्वित हुआ है।

'बीकानेर' जिले का एक नगर 'उदयरामसर' का इतिहास प्रकाशन का सौभाग्य मुझे मिला, करीब ३ महीने का वक्त लगा, वैसे तो यह वक्त ज्यादा ही लगा कारण यह भी रहा कि विश्व अभी प्रकृति की मार 'कोरोना' जैसी महामारी झेल रहा है इसके कारण हम भी परेशान हुए पर जिद्दी राजस्थानी स्वभाव के कारण 'उदयरामसर' का इतिहास प्रकाशन हो ही गया और अति पठनीय अंक बन गया। विशेष रुप से उल्लेख करना चाहूंगा 'उदयरामसर' के बारे में की 'उदयरामसर' के टीले व माटी की समृद्धि, साथ ही मीठे पाणी व वाणी की समृद्धता, सचमुच मन मोहित हो गया, ऐसे-ऐसे प्रभुत्वों से परिचित होना, सचमुच जीवन ज्वाजल्यमान हो गया।

'उदयरामसर' के बारे में उल्लेख तो विस्तृत रुप से प्रस्तुत अंक में पढने को 'मेरा राजस्थान' के प्रबुद्ध पाठकों को तो मिलेगा ही पर संक्षिप्त में बताना चाहूंगा कि 'उदयरामसर' की माटी के प्रभुत्वगण उदारशाली मितव्यतता के भी धनी हैं।

दाधीच जयंती के उपलक्ष पर समस्त दाधीच वंशों को शुभकामनायें देते हुए यह ही निवेदन करुंगा कि एकतावश समाज के साथ भारत विकास व सम्मान के लिए कार्य करें,

'भारत को भारत बोला जाए' के अभियान में समर्थन करें।

मैं भारत वर्ष के समस्त १३० करोड़ भारतीयों से निवेदन करता हूँ कि मेरी भारत माँ का सम्मान विश्व में हो, भारत को 'भारत' ही कहा जाए, India तो गुलामी का नाम है, हम भारतीय विशेषकर राजस्थानी गुलाम नहीं है, आजाद 'भारत' के नागरिक हैं हमारे 'भारत' का नाम केवल एक हो।

भारत! भारत!! भारत!!!

'उदयरामसर' का प्रस्तुत विशेषांक कैसा लगा, आपके मार्गदर्शन के इंतजार में...

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

पूर्ण राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि और भाषा

-बिजय कुमार जैन
अपनी बोली-अपनी भाषा
संवर्धन का एक सिपाही

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

'उदयरामसर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

सिध्दार्थ सिपानी आशीष सिपानी वंश सिपानी

अशोक कुमार सिपानी
Mob. : 9381047767
9840141051

10/54, Moosa Street, T.Nagar, Chennai, Tamil Nadu, Bharat -600017, Ph. : 044-42129159

नीम लगायें पर्यावरण बचाये भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

अर्जुन राम मेघवाल, आई.ए.एस. (रिटायर्ड)
Arjun Ram Meghwal, IAS (Retd.)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

भारी उद्योग एवं लोक उद्यम और
संसदीय कार्य राज्य मंत्री
भारत सरकार, नई दिल्ली-110011
MINISTER OF STATE FOR
HEAVY INDUSTRIES & PUBLIC ENTERPRISES
AND PARLIAMENTARY AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA, NEW DELHI - 110011

संदेश

प्रिय श्री बिजय कुमार जैन,

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि **'मेरा राजस्थान'** पत्रिका का विशेषांक उदयरामसर के इतिहास के साथ प्रकाशित किया जा रहा है।

यह हम सभी के लिए गर्व की बात है कि इसमें उदयरामसर के इतिहास के बारे में प्रामाणिक जानकारी प्रकाशित की जाऐगी। इस विशेषांक से आमजन को बीकानेर के इतिहास की जानकारी प्राप्त होगी।

मैं आपको व पत्रिका से जुडे सभी पदाधिकारियों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए इस विशेषांक की सफलता की कामना करता हूं।

(अर्जुन राम मेघवाल)

श्री बिजय कुमार जैन,
संस्थापक अध्यक्ष, मेरा राजस्थान।

36, उद्योग भवन, नई दिल्ली –110 011, फोन : 23062676/78, 23061593, फैक्स : 23060584
36, Udyog Bhawan, New Delhi-110 011, Phone : 23062676/78, 23061593, Fax : 23060584
Delhi Residence : 5A, K. Kamraj Marg, New Delhi-110001, Phone : 011-23011770/71 Telefax : 011-23011772
Residence : Sansad Seva Kendra, C-66, Khaturia Colony, Bikaner, Rajasthan, Phone : 0151-2230260
Parliament : 56, Parliament House, New Delhi-110001, Tel.: +91-11-23010895, Fax : +91-11-23011824
E-mail : roffice.arm@gov.in/arjunrammeghwal@gmail.com

सिद्धि कुमारी
विधायक, बीकानेर (पूर्व)

"शिव विलास"
लालगढ़ पैलेस
बीकानेर (राज.)
✆ 0151-2524115

दिनांक 1/9/2020

क्रमांक : 1140

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी है कि राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने के लिए मुम्बई से प्रकाशित होने वाली "मेरा राजस्थान" पत्रिका द्वारा उदयरामसर के इतिहास के साथ विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

उदयरामसर का इतिहास स्थापना से लेकर आज तक गरिमामय रहा है तथा उदयरामसर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित जानकारियां सभी समाज के लिए मार्गदर्शक व उपयोगी सिद्ध होगी।

उदयरामसर विशेषांक प्रकाशन पर मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

सिद्धि कुमारी

सिद्धि कुमारी
सदस्य
राजस्थान विधान सभा
जयपुर

4/4, विधायक नगर (पश्चिम), जयपुर

उदयरामसर माटी का सुपुत्र कार्यसम्राट व समाजसेवी

थानमल बोथरा जैन
व्यवसायी व समाजसेवी,
उदयरामसर बीकानेर निवासी-हावड़ा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३०११५७५९

आज से ५०-६० वर्ष पूर्व गाँव में चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं हुआ करती थी। उदयरामसर के श्री चम्पालालजी बोथरा उस समय ब्राह्मी की गोली एवं घरेलू उपचार बता कर रोगियों का इलाज किया करते थे, समय परिवर्तन हुआ, उनके पुत्र पारसमल, धर्मचन्द, थानमल, हरकचन्द बोथरा ने अपने व्यवसाय के लिए कोलकाता शहर चुना, इनके सपुत्र श्री थानमल बोथरा भी अपने पिता की तरह सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में रुची रखते है।

स्व. श्री चम्पालालजी बोथरा

थानमल बोथरा पुत्र श्री चम्पालाल जी बोथरा का जन्म 'उदयरामसर' में हुआ, आपकी प्राथमिक शिक्षा उदयरामसर एवं भीनासर में सम्पन्न हुई। बचपन में कबड्डी खेलने का शौक रहा। कबड्डी में चेम्पियन भी रहे।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से भी जुड़े रहे, शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात 'कोलकात्ता' आना हुआ, कुछ वर्षों तक नौकरी करने के पश्चात स्वयं का व्यवसाय प्रारंभ किया, जिसके लिए धर्मपत्नी जी ने आपको प्रेरित किया।

ईश्वर की कृपा व अपनी मेहनत से व्यापार को बढ़ाया। आज कोलकाता में ड्रेस मेटेरीयल के बड़े व्यापारी के रुप में आपकी गिनती होती है, आपकी मैन्युफैक्चरिंग युनिट्स मुंबई, सुरत, अहमदाबाद में भी है, जहाँ से आयात और निर्यात दोनो कारोबार होता है। कोलकाता स्थित कई सामाजिक संस्थाओं में सेवारत हैं।

कोलकाता बड़ी पंचायत (बड़ा मंदिर) में अध्यक्ष पद पर सेवारत हैं। जैन पार्श्वनाथ दादाबाड़ी के सारे काम की जिम्मेदारी निभाते हैं। कार्तिक सूदि पूर्णिमा को निकलने वाली सामुहिक जुलूस की सम्पूर्ण व्यवस्था की देखरेख व संतों के चातुर्मास का भार का निर्वहन करते हैं, इसके अतिरिक्त समय-समय पर जरुरतमंदों को आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं, जैन स्कूल में जरुरतमंद बच्चों को पुस्तक वितरण, गणवेश, शिक्षा शुल्क आदि का सहयोग करते हैं।

थानमल बोथराजी केंद्रिय मंत्री अर्जुन मेघवाल जी के साथ

जैन विद्यालय बीकानेर व हावड़ा को आर्थिक सहयोग प्रदान करते हैं, आपके पिताजी श्री चम्पालाल जी लोगों को आर्युवेंदिक औषधी मुफ्त में देते थे, आप गौशाला से भी जुड़े हैं व गायों की सेवा करते हैं। आपके दो पुत्र हैं जो व्यवसाय में आप के साथ संलग्न है।

आपको गांव की माटी 'उदयरामसर' से बहुत प्यार है एवं हमेशा गांव की उन्नति की सोचते हैं। उदयरामसर में आदर्श विद्या मंदिर आपके सहयोग से बनाया गया, आपने गांव में एक गेस्ट हाउस का निर्माण किया, जो कि विवाह एवं कोई भी धार्मिक कार्य के लिए नि:शुल्क दिया जाता है। गांव में कोविड की महामारी में आपने गरीब परिवारों को राशन की व्यवस्था कराई। प. बंगाल में स्थित गंगासागर की धर्मशाला में कमरे की व्यवस्था आपने करवाई। कोलकाता में धार्मिक कार्यों में आप हमेशा लोगों की सेवा करने में तत्पर रहते हैं।

साधु-संतों के चातुर्मास हो या अन्य मानव सेवा हो हमेशा तैयार रहते हैं। कोलकाता के जैन मंदिर बड़ा बाजार में आपने भोजनशाला की व्यवस्था करवाई एवं आवास की व्यवस्था सुचारु रुप से किया, कमरों को नया रूप दिया।

आपने अमरावती महाराष्ट्र के जैन मंदिर में कमरे का निर्माण कराया एवं सम्मेद शिखरजी झारखंड में आपने मंदिरों के निर्माण में आर्थिक सहयोग दिया। हवड़ा में जैन हॉस्पिटल में चंदा दिया।

बीकानेर में जैन पब्लिक स्कूल ब्वॉयज एवं जैन पब्लिक गर्ल्स स्कूल में कमरों का निर्माण कराया। बीकानेर गोगा गेट गौशाला में गायों की सेवा के लिए चंदा की व्यवस्था करते हैं। आपने निश्चय किया है कि अपनी आय का कुछ प्रतिशत दान करते रहेंगे। आपके पास जो भी आता है आपसे से कुछ लेकर जाता है, आप खाली हाथ उसे नहीं जाने देते, कुछ दे कर ही विदा करते हैं। आपकी हमेशा यही सोच रहती है सभी स्वस्थ रहें सुखी रहें। आप दिर्घायु रहे, यही मंगलकामना 'मेरा राजस्थान' परिवार नीली छतरी वाले से करता है।

उद्योगपति सरदारमल कांकारिया,
श्री थानमल जी बोथरा, राजस्थान के मंत्री बी.डी. कल्ला

उदयरामसर का एक उदारमना व्यक्तित्व

सुंदरलाल सिपानी
भ्रमणध्वनि: ९४३५१९०६७८

'यथा नाम तथा गुण' के धनी श्री सुंदरलाल सिपानी का जन्म 'उदयरामसर' में हुआ। स्वर्गीय श्री भंवरलालजी एवं श्रीमती अजी देवी के पुत्र श्री सुंदरलाल सिपानी का बचपन गांव की गलियों में बीता, आपने उदयरामसर के प्राथमिक विद्यालय तथा भीनासर में जवाहर विद्यालय से प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की। अपने बचपन के दिनों से ही आप बड़े परिश्रमी व उदारवादी रहे हैं एवं समाज से जुड़ी सभी प्रकार के कार्यों में हमेशा से ही रुचि रखने वाले सुंदरलालजी हमेशा तन-मन-धन से सहयोग देते रहे हैं। बचपन से ही आपका झुकाव सदैव व्यवसाय की तरफ रहा। प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात व्यवसाय के सिलसिले में आपने पूर्वोत्तर के राज्य आसाम की तरफ रुख किया और आसाम को अपना कर्म क्षेत्र बनाया, यहां आपने सुपारी के व्यवसाय की शुरुआत की तथा अपने परिश्रम दूरदर्शी सोच, व्यापारिक समझ तथा कार्य कुशलता से अपने व्यवसाय में निरंतर प्रगति हासिल की एवं ईमानदारी और नैतिकता की बदौलत अपने व्यवसाय को उच्च आयाम तक पहुंचाया, जिससे सुपारी के व्यापार में आपका नाम अग्रिम पंक्ति में स्थापित हुआ आज आसाम में आपको आदर्श उद्यमी के रूप में जाना जाता है।

सफल व्यवसायिक जीवन के साथ आपकी रूचि सदैव ही सामाजिक व धार्मिक कार्यों में रही। आपका अधिकांश समय आसाम में व्यतीत होने के पश्चात अपने गांव 'उदयरामसर' एवं उसकी मिट्टी को आप कभी नहीं भूले। आप अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ से जुड़े रहे एवं निरंतर रूप से

संघ के विभिन्न प्रकार के प्रकल्पों में सहयोग देते रहे। आपने 'उदयरामसर' में समता भवन के निर्माण में अर्थ का सहयोग किया एवं आज के आधुनिक एवं प्रतिस्पर्धी परिदृश्य में अपने गांव के बच्चों को तकनीकी रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए आदर्श विद्या मंदिर स्कूल में आधुनिक कंप्यूटर लैब का निर्माण करवाया। आप सच्चियाय माता मंदिर दिल्ली के निर्माण में प्रमुख सहयोगी रहे हैं। दिल्ली में ही भारत माता गोधाम द्वारा संचालित गोशाला में भी निरंतर सहयोग करते रहते हैं।

सफल व्यवसायिक एवं सामाजिक जीवन के साथ-साथ आप समृद्ध दांपत्य

जीवन के धनी हैं। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती उर्मिला देवी बहुत ही सरल व मृदुभाषी है एवं धार्मिक रूप से भी सक्रिय हैं। आपकी धर्मपत्नी सदैव आपको धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों के लिए प्रेरित करती रहती हैं। श्रीमती उर्मिला देवी समय-समय पर तपस्या भी करती रहती हैं इसी क्रम में आपने एक से १५ तक की तपस्या की है। आपका पुत्र ललित सिपानी भी आप से प्रेरणा लेते हुए आपके पद चिन्हों पर चल रहे हैं एवं दिल्ली में अपने व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। आपकी दोनों पुत्रियां भी अपने माता-पिता की तरह आदर्श दांपत्य जीवन में अग्रसर हैं।

आपका सफल जीवन एवं उदार व्यक्तित्व की छवि सदैव समाज के अनेक युवाओं को प्रेरित करती रहे, यही 'मेरा राजस्थान' परिवार की मंगलकामना है।

श्री सुंदरलाल जी उदयरामसर के बारे में बताते है कि गाँव में आपसी भाईचारा प्रेम काबिले तारीफ है। प्रत्येक जाति के साथ एक दूसरे का प्रेम भाव बहुत है, सभी लोग हर वक्त एक दूसरे के सुख-दुख में सहयोग को तत्पर रहते हैं। ओसवाल-महेश्वरी समाज का आपस में पीढ़ियों से भाईचारा चला आ रहा है, ऐसा लगता है हम एक ही माँ की दो सन्तान हैं। हमारे बुर्जुगों के दिये हुए संस्कार पीढी-दर-पीढी ऐसे ही चलती रहे ऐसी मेरी भावना एव् मंगलकामना है।

प्रकृति रुप से भी हमारा 'उदयरामसर' बहुत सुंदर है, यहां के रेतीलों धोरों पर घुमने का आनंद उठाने सैलानी अक्सर आते हैं। यहां का वातावरण बहुत ही रमणीय है। यहां आकर तन और मन दोनों ही स्वस्थ व प्रसन्न हो जाता है, यहां कई धार्मिक स्थल हैं जिनमें 'दादावाड़ी' प्रमुख है, यह गांव वालों की आस्था का प्रमुख केंद्र है। यहां के निवासी देश के विभिन्न क्षेत्रों में बसे हैं अपना व समाज का नाम रौशन कर रहे है। यहां के निवासी सामाजिक सेवाओं में भी अपनी अहम भूमिका निभाते हैं, इस गांव ने देश को कई भामाशाह दिए हैं, कई विशेषताओं से परिपूर्ण है हमारा 'उदयरामसर'।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

सुशिल महात्मा भ्रमणध्वनि : ९४६०१००९९८
धीरज महात्मा भ्रमणध्वनि : ९८९९२८००८०
अजय महात्मा भ्रमणध्वनि : ९४१३३८४७६८

मैं एक, काम अनेक

महात्मा जी कूलर वाले
रेखा फाईबर प्रोडक्ट
फाईबर कूलर के निर्माता व विक्रेता
शारदा जनरल इण्डस्ट्रीज
लोहे के कूलर, पेड व ऐससरीज के निर्माता व विक्रेता

महात्मा जी कूलर वाले, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने, उदयरामसर,
बीकानेर, राजस्थान, भारत -३३४४०२ दूरध्वनि : ०१५२१-२७८७५६२

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

'उदयरामसर' के इतिहास प्रकाशन पर
बजाज परिवार की तरफ से
हार्दिक शुभकामनाएं

Hari Narayan Bajaj
Mob. : 9831032437
Shiw Chand Bajaj
Mob. : 9330836915
Ramesh Kumar Bajaj
Mob. : 9748102814

216, MG Road,
Kolkata, West Bengal, Bharat - 700007

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

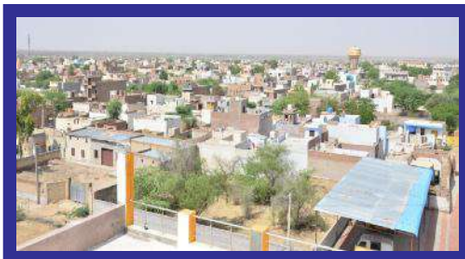

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

'उदयरामसर' के इतिहास प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Jaidayal Didwania
Mob. : 9460000907

Sumit Didwania
Mob. : 8003457175

Shagun Fancy
Deal Off-
Cosmetics & Artificial Jewellers,
Ladies Persh, Undergarments

Shop No.05, Ganpati Complex, Tolyasar Bheruji ki Gali,
Bikaner, Rajshthan, Bharat -334401

नीम लगायें पर्यावरण बचाये भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

शहीदों की पावन भूमि 'उदयरामसर' के इतिहास प्रकाशन पर
'मेरा राजस्थान' परिवार को धन्यवाद

N.K. Sipani

Mob. : 9928369645 / 7014895708
9079050545 / 9079166774

N.R. Builder & Developers

A Unit of N.R. Group

(Deals in Real Estates & Construction)

Ridhi Creation

(A Undertaking Unit of N.R. Group)

Supplier of All Kinds School Bags, Tour Bags,
File & Laptop Bags, Camera & Jewellery Bags

Sipani Chowk, Mawa Patti, Bikaner, Rajasthan, Bharat - 334401
e-mail : nksipani@gmail.com

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान नीम लगायें पर्यावरण बचाये

राजस्थान का उदयरामसर : एक विहंगम दृश्य

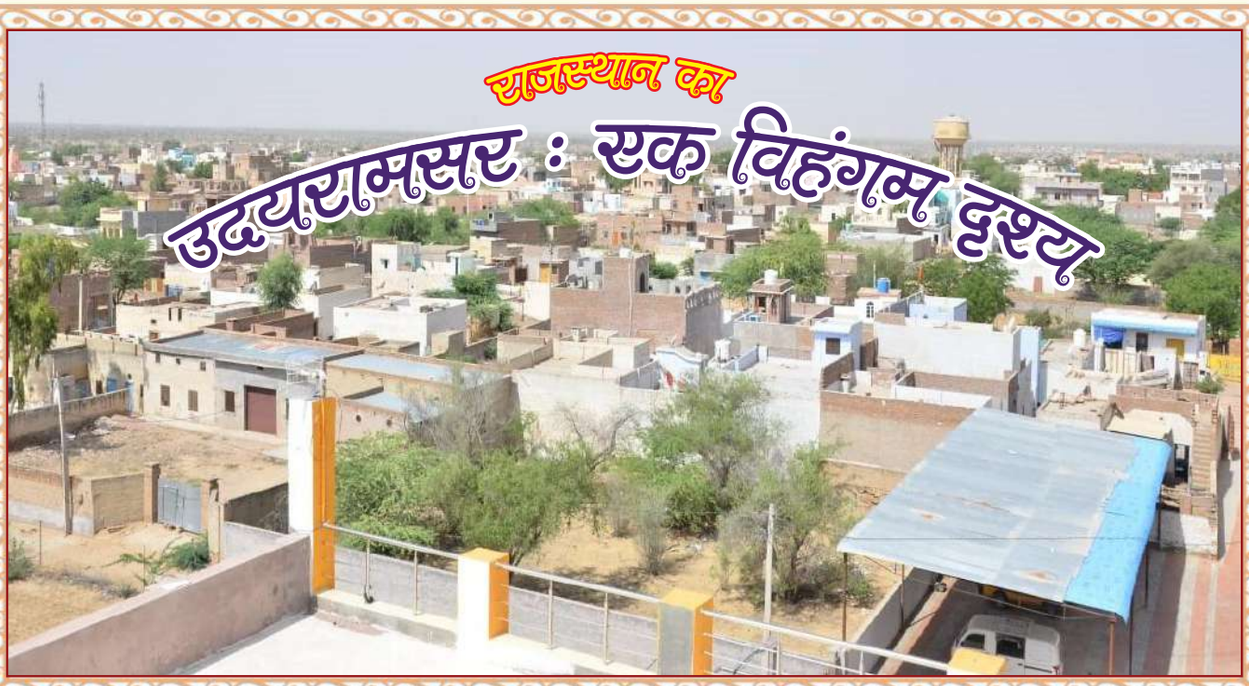

स्वर्णमयी रेतीले टीबों की गोद में बीकानेर रियासत के अक्लमंद, दूरदर्शी, निष्ठावान, वीर पुरुष अहीर उदैरामजी ने आषाढ़ बदी दूज विक्रम संवत् १७३५ (अर्थात् शुक्रवार, २० जून १६७७) को उदय, ऊर्जा और उत्कर्ष के पर्याय 'उदयरामसर' की स्थापना की। तत्कालीन वीर, दयालु और विद्या प्रेमी महाराजा अनूपसिंहजी की विशेष इच्छा-शक्ति से बसा गाँव प्रकृति का अनुपम उपहार है। यहां की जलवायु शुष्क, किन्तु आरोग्यप्रद है। गर्मियों में अधिक गर्मी और सर्दियों में अधिक सर्दी यहां की विषम विशेषता है। इस गाँव के आम आदमी का मनोबल आसमान से भी अधिक ऊँचा और चट्टान से अधिक मजबूत है। लू, शीत लहर, धूल भरी आँधियां और अकाल की विभीषिका भी दांत निपोरे चोर की तरह पराजित होकर निकल जाती है।

आसमान की मेहरबानी होते ही चारों तरफ हरियाली हो जाती है। 'उदयरामसर' में सुरंगा सावन झूमकर आता है। बाजरा, मोठ, तिल, ग्वार यहां की मुख्य फसलें हैं। यहां के मतीरे और बेर का मिठास पूरे परगने में मशहूर है। यहां का गणगौर, तीज और दादाबाड़ी का मेला लोक संस्कृति की याद को ताजा करता है। ३५००० बीघा भूमि कण-कण में पराक्रम, परमार्थ और परिश्रम का त्रिगुणात्मक पूर्व स्थापित सामंजस्य देखने को मिलता है। ईस्वी सन् १६८६ से १६९५ तक दक्षिण की लड़ाइयों में अहीर उदैराम के सपूतों का बलिदान भारतीय इतिहास के शौर्य का ऐसा बेबाक दस्तावेज है जो समरांगण के योद्धाओं के लिए सदैव वंदनीय रहेगा। आध्यात्मिक तपोवन में तपते जिणदत्त सूरिजी, चन्द्रदेवनी यादवजी, देवनाथजी, गंगानाथजी, निहालनाथजी, स्वामी रामसुखदासजी जैसे परमहंसों और तत्त्ववेत्ताओं ने इसी धरा की मिट्टी का अभिषेक कर मानव कल्याण का रास्ता बताया, इतना ही नहीं सन् १८५७ के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के युवा जांबाज महानायक वीर तुलाराव के प्रधान सेनापति एवं उनके भाई राव गोपालदेव ने यहां चार वर्ष तक गुप्त वेश में रहकर स्वाधीनता संग्राम का सफलतापूर्वक संचालन किया। धन्य है यह माटी, जिसने स्वाधीनता के इस जांबाज वीर को आमंत्रित कर अपने प्रयोजन को सिद्ध किया। धन्य है गाँव, जिसने अनगिनत बाधाओं के बावजूद भी स्वतंत्रता संग्राम के इन जांबाजों को चार साल तक रखा।

उदयरामसर बस स्टॅण्ड

वर्तमान उदयरामसर से पहले उदयसरोवर के समीप गौशाणा मंदिर (विक्रम संवत् १६५८) जिनदत्त सूरि का उपाश्रय (विक्रम संवत् ११४५) सायमंड की जाल, नोडिया टाडा (पुराना कुंआ) के पास खड़े शिलालेख ऐसे पुरातत्त्व स्मारक चिह्न हैं, जो बागोडिया राजपूतों की बसावट का सबूत प्रदान करते है। गाँव की बसावट से पूर्व बागोडा के ५२ ताल-तलैया एवं बारह नाल की जनश्रुतियां आज भी जनमानस के होठों पर बुलंद है। सिंढायच दयालदास की ख्यात 'देश दर्पण' के अनुसार वर्तमान 'उदयरामसर' से पहले यहां मात्र ढाणी थी, परन्तु यह बात सत्य प्रतीत नहीं होती है। लगता है तथ्यों के अभाव में आंशिक सत्य को उजागर किया गया है।

यादव वंश की उत्पत्ति श्रीमद् भागवत के अनुसार-

महाराज यदु के वंशज यादव कहलाए। यदु का वंश परम पवित्र और मनुष्यों के समस्त पापों को नष्ट करने वाला है। इसलिए इस वंश में भगवान श्री कृष्ण ने जन्म लिया तथा और भी अनेक प्रख्यात नृप इस वंश में हुए। अत्रि ने चन्द्रमा, **शेष पृष्ठ १३ पर...**

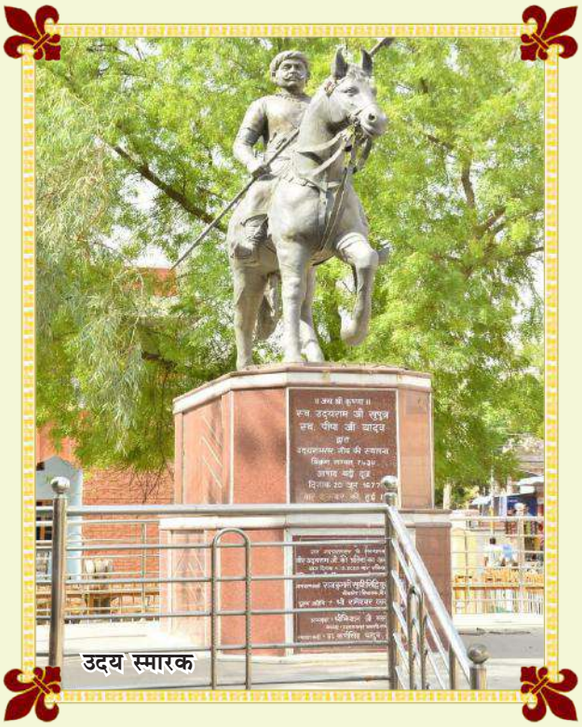
उदय स्मारक

पृष्ठ १२ से... चन्द्रमा से बुध, बुध से पुरूरूवा, पुरूरूवा से आयु, आयु से नहुष, नहुष से ययाति और ययाति से यदु।

उदैरामजी एक व्यक्तित्व के रूप में-अहीर उदैरामजी (बीकानेर रियासत के चाणक्य)

मूलत: रिवाड़ी के पास डूमेडा गाँव के रहने वाले थे। वर्तमान में डूमेडा गाँव कोटकासित तहसील अलवर के अन्तर्गत आता है। उदैरामजी के जन्म तिथि के बारे में निश्चित विवरण नहीं है, किन्तु जनश्रुति के अनुसार उनका जन्म विक्रम संवत् १६८० के आसपास हुआ। बचपन से ही बालक उदैराम जिज्ञासु, कुशाग्रबुद्धि तथा घुमंतू प्रवृत्ति के थे। इनके पिता का नाम पींपाजी था। वे सीधे और सरल मिजाज के व्यक्ति थे। उनके पितामह डूंगरजी ने 'डूमेडा' गाँव बसाया था। उदैरामजी के चार भाई तथा एक बहन मानवकंवरजी का उल्लेख मिलता है। अपने प्रारम्भिक अध्ययन के पश्चात् विक्रम संवत् १७०३ में उनके बीकानेर आने का उल्लेख मिलता है। विक्रम संवत् १७०३ में उनकी 'नाल' के ठाकुर से मुलाकात हुई। कुछ समय 'नाल' में ही रहे। चूंकि उदैरामजी तीक्ष्ण बुद्धि के थे, इसलिए ठाकुर साहब के चहेते हो गये। धीरे-धीरे राजदरबार में भी ठाकुर साहब के साथ आना-जाना रहा। राज के कायदों और रीति-रिवाजों के महापण्डित बन बैठे। मारवाड़ी भाषा पर तो आपका गजब का नियंत्रण था। बोलते ही हर किसी का मन मोह लेते थे।

एक दिन ठाकुर साहब के बीमार होने पर उदैरामजी अकेले ही दरबार पहुँचे। उदैरामजी के रहन-सहन, अदब और बोलने के ढंग से महाराजा कर्णसिंहजी बड़े प्रभावित हुए। इतना ही नहीं, चमत्कार तो तब घटित हुआ जब उदैरामजी ने महाराजा साहब की पगड़ी को इतना नफीस अंदाज़ से बांधा कि वे दर्पण के सामने जाते ही झूम उठे। बस यही था महाराजा से प्रथम मुलाकात का प्रभाव। महाराजा से भविष्य में सीधे सम्पर्क रखने की इच्छा प्रदान की। फिर क्या, चंद दिनों में ही उदैरामजी ने महाराजा एवं राजकुमार अनुपसिंह के दिल में जगह बना ली। राजदरबार में उदैरामजी का रुतबा बन गया था। दरबार के छोटे-मोटे कार्यों के निस्तारण में पूर्णत: स्वतंत्र हो गये थे। राजकुमार अनुपसिंह से भी सदैव भेंट होने लगी। एक दिन 'नाल' से दूर कोलायत परिक्षेत्र में राज के कार्य से भ्रमण कर रहे थे, अकस्मात् बाला के राठौड़ कर्मचंद से मुलाकात हो गई। कर्मचंद आसपास में लूटपाट **शेष पृष्ठ १४ पर...**

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

पुण्य स्मृति में

स्व. सोहन लाल जी सिपानी
स्वर्गवास : १३.०६.१९८८

स्व. बक्का देवी सिपानी
स्वर्गवास : १६.०४.२००७

सिपानी परिवार

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

शहीदों की पावन भूमि 'उदयरामसर' के इतिहास प्रकाशन पर 'मेरा राजस्थान' परिवार को धन्यवाद

Shreyans Sipani
Mob. : 9818012935
Co-Founder & CTO
shreyans@o4s.io
1800 123 208 208
www.o4s.io

406, Address One by Baani,
1. Golf Course Road,
Gurugram, Haryana, Bharat- 122002

O4S

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

पृष्ठ १३ से...का काम करता था। स्थानीय लोग उससे बड़े ही परेशान थे, साथ ही महाराजा भी काफी नाखुश थे। अपनी प्रथम मुलाकात में ही उदैरामजी ने उसे इस कृत्य को छोड़ने के लिए कहा। कर्मचंद ने कृत्य को छोड़ने की हां तो भर ली, किन्तु महाराज की क्षमा से बड़ा शंकित था। उदैरामजी ने उसे आश्वस्त किया कि यदि वह इस कार्य को छोड़ देता है तो महाराजा साहब से माफी की पुरजोर कोशिश करेंगे। दूसरा दिन कर्मचंद को साथ लेकर उदैरामजी महाराजा के समक्ष उपस्थित हुए। यद्यपि महाराजा कर्मचंद से कुपित थे, किन्तु उदैरामजी के निवेदन पर उसे इस शर्त पर माफ कर दिया गया कि अपनी बेटी की शादी उदैराम के साथ कर दे। कर्मचंद ने बड़े अहोभाव से इस शर्त को स्वीकार कर लिया। विक्रम संवत् १७१४ में उदैरामजी की प्रथम शादी को लेकर राजपूतों के एक वर्ग में जहां हल्का-सा असंतोष था, वहीं रिवाड़ी के यादव चाहते थे कि उनका रिश्ता यादवों में हो। महाराजा साहब से अनुमति प्राप्त कर उदैरामजी ने विक्रम संवत् १७२१ में बादली (हरियाणा) में हरदासजी की पुत्री मानकंवरजी से दूसरी शादी की। विक्रम संवत् १७२६ के आसपास महाराजा अनुपसिंहजी ने बाधोड़ो से ख्वासी जब्त कर उदैरामजी को ख्वासी इनायत की, साथ ही उन्हें दरबार में महाराजा को पाग पहनाने और पगड़ी बांधने का काम सौंपा गया। महाराजा साहब के साथ हाथी-सवारी के समय ख्वासी में बैठने की व्यवस्था भी प्रदान की गई।

वनमाली दास को मरवाना

महाराजा कर्णसिंहजी के अनौरस पुत्र वनमाली दास ने बादशाह के खिदमत में रहकर वहां के एक कार्मिक सैय्यद हसन अली से बड़ी गहरी मित्रता कर ली तथा बादशाह के समक्ष इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिया। सैय्यद हसन अली की सिफारिश पर बादशाह ने वनमाली दास को आधा मनसब प्रदान कर दिया। लगभग ३००० सैनिकों के साथ एक दिन पुराने गढ़ के पास ठहरा और जनता की भावना का अनादर करता हुआ लक्ष्मीनारायणजी के मन्दिर के समीप बकरे कटवाए। इस घटना की खबर लगते ही महाराजा अनूपसिंहजी ने मोहता दयालदास तथा कोठारी जीवणदास को भेज कर यह कहलाया कि अपने पूर्वजों के बनाए हुए इस मंदिर की अस्मिता को खण्डित ना करे, परन्तु वनमाली दास ने कहा कि जो उसकी मर्जी होगी वो वही करेगा। साथ ही उसने मुंधड़ा रघुनाथ इत्यादि खजांचियों को पट्टा लाने को कहा। इनकार करने पर कैद कर लिया। महाराजा अनूपसिंहजी के लिए गहरा धर्म संकट खड़ा हो गया। यदि वे इस घटना को नजर अंदाज करते हैं तो उदण्ड वनमाली दास पूरी मनसबदारी का दावा करेगा और यदि वे सैनिक कार्यवाही करें तो दिल्ली दरबार तक शिकायत होने का डर था। महाराजा बड़े चिंताग्रस्त हो उठे। महाराजा को अति व्याकुल देख उदैरामजी ने कहा, महाराज आज्ञा दें तो सेवक हाजिर है। शीघ्र ही उदैरामजी अहीर वनमाली दास के पास पहुँचे। वहाँ अपनी कुशाग्र बुद्धि, निर्णय शक्ति से वनमाली दास के मन को मोह लिया, एक-दो दिन में ही उसने वनमाली दास से खूब मेल-जोल कर लिया, फिर चंगोई के पास गढ़ बनाने तथा बीकानेर के आधे गाँवों के पर्चे को बड़ी चालाकी से वनमाली दास को थमा दिया। वनमाली दास उदैरामजी की इस सेवा से बहुत प्रसन्न हुआ और वह चंगोई चला गया। तत्पश्चात् उदैरामजी ने महाराजा अनूपसिंह और महाराजा के एक ससुर लक्ष्मणदास से वनमाली दास को मरवाने की गहरी योजना के बारे में मंत्रणा की। इस योजना में उदैरामजी के साथ-साथ लक्ष्मणदास एवं राजपुरा के बीका भीम राजोत का भी महत्वपूर्ण योगदान था। उदैरामजी की सलाह पर लक्ष्मणदास और बीका भीम राजोत को चालाकी से अनूपसिंहजी के विद्रोहियों के रूप में चंगोई वनमाली दास के पास भेजा। भावुक और उदण्ड वनमाली दास ने बिना जाँच पड़ताल के शीघ्र ही उनको अपनी सेवा में रख लिया। कुछ दिन पश्चात् लक्ष्मणदास ने वनमाली दास से अर्ज की, कि मैं साथ में डोला भी लाया हूं यदि आप विवाह कर लें तो बड़ी मेहरबानी होगी। वनमाली दास ने तत्काल इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। उदैरामजी की योजनानुसार लक्ष्मणदास ने एक दासी पुत्री का विवाह उसके साथ कर दिया, जिसने विवाह की रात्रि को ही योजनानुसार शराब में संखिया मिलाकर वनमाली दास को मौत के घाट उतार दिया। वनमाली दास के साथ दिल्ली से एक नवाब भी आया था। उसने भंडा फोड़ने की धमकी दी। पुन: बीकानेर रियासत के सामने गहरा संकट खड़ा हो गया। पुन: अनूपसिंहजी एवं उदैरामजी में मंत्रणा हुई, फिर उदैरामजी की योजनानुसार नवाब का मुंह बंद करने के लिए उसे एक लाख रुपये दिये गए, उसने बादशाह को सूचित किया कि वनमाली दास की स्वभाविक मृत्यु शराब अधिक पीने से हुई है। इस घटना से महाराजा अनूपसिंहजी ने मुक्त कण्ठ से उदैरामजी की प्रशंसा की, कर्नल पाउलेट बीकानेर गजेटियर के पृष्ठ (४२) के अनुसार इस घटना से खुश होकर महाराज अनुप सिंहजी ने उदयरामजी को अपना एक गाँव बसाने की पेशकश की उस पेशकश का परिणाम ही है वर्तमान में 'उदयरामसर' ग्राम बसाने से पहले इस जगह पर सघन जंगल था। जंगल में एक तालाब था, तालाब के बगल मैं एक मन्दिर था, जो 'गोसाणा' मन्दिर के रूप में जाना जाता है, जो आज भी विद्यमान् है। तालाब के थोड़ी दूर एक उपासरा बना हुआ था जहाँ जैन मुनि साधना किया करते थे। कालान्तर में इस उपासरे का जिर्णोद्धार हुआ जो आज 'दादाबाड़ी' के रूप में मौजूद है।

दादाबाड़ी

तत्पश्चात् उदैरामजी के चारों पुत्र महाराजा की सेना में महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन हुए। इतना ही नहीं राज के महत्वपूर्ण कार्यों में उदैरामजी की राय ली जाती थी। विक्रम संवत् १७३७ में महाराजा अनूपसिंहजी ने एक परवाना दक्षिण बीजापुर से जारी किया गया था, जिसमें कुंवर हरराम राठौड़ एवं उदैरामजी के मार्फत जसनाथजी के शिष्य रुस्तमजी को एक हजार एक बीघा जमीन 'छाजूसर' में देने के लिए कहा गया था। जसनाथी संप्रदाय के 'सबद ग्रन्थ' में इसकी व्याख्या सविस्तार मुद्रित है।

उदैरामजी के चार पुत्र थे- गोविन्ददासजी, नारायणदासजी, सुन्दरदासजी एवं किसनदासजी तथा एक बहन भगवत कंवर जी, जिनकी 'पटीकरा' हरियाणा में अखैराजजी के साथ शादी हुई थी।

महाव्यक्तित्व के धनी महापुरूष के हाथों बसा 'उदयरामसर' चारों तरफ धौरों के बीच कुछ ऐसा लग रहा था कि सोने के बीच जड़ा कोई नगीना हो। आज भी यह भुमि तपोभुमी के रूप में मान्यता प्राप्त है। महान् संत श्रद्धेय श्री रामसुख दास जी महाराज ने अपनी कुटिया बना कर इस बात का प्रमाण दिया है।

जैन आचार्य श्री गणेशी लाल जी महाराज एवं नानालाल जी म.सा. ने भी ५/६ दिन की जगह महीना-महीना भर इस भुमि पर विचरण कर, इस भूमि को तपो-भुमी होने की मान्यता दी है। यहाँ की हवा यहाँ का पानी दूर-दूर तक प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है।

कोई जमाने में क्षय रोग से ग्रस्त रोगी यहाँ आरोग्य लाभ के हेतु आया करते थे और तो और यहाँ के पानी एवं मिट्टी से निर्मित मटकी भी स्वास्थ्य वर्द्धक मानी जाती है। यहाँ की मटकी में रखा पानी शीतल सुस्वादू एवं हाजमा के लिये उपकारी माना गया है। यहाँ के धोरों पर चलती मन्द-मन्द मलियानिल मानसिक तनाव को दूर करने में बहुत ही उपयोगी सिद्ध हूई है।

सुन्दरदासजी: उदैरामजी के तीसरे पुत्र उच्च कोटि के वीर और बीकानेर रियासत के वफादार योद्धा थे। महाराजा अनूपसिंहजी के सदैव साथ **शेष पृष्ठ १५ पर...**

पृष्ठ १४ से...रहते थे। विक्रम संवत् १७५२ में बीजापुर में लड़ाई में शौर्य एवं पराक्रम दिखाते हुए शहीद हुए। उनके पीछे उनकी धर्मत्नी मनोहर कंवरजी ने दासी पारा के साथ मिगसर बदी छठ को गाँव के प्रांगण में अग्नि स्नान करके आर्य स्त्री धर्म को निभाया। पूरे गाँव की आँखें नम हो गई थी।

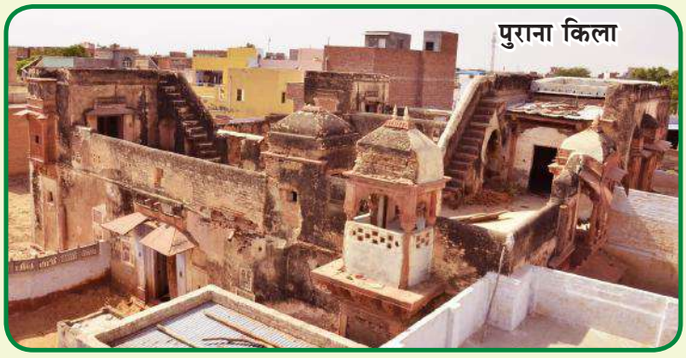
पुराना किला

किसनदासजी: उदैरामजी के सबसे छोटे लाडले पुत्र किसनदास जी तरूण, जांबाज थे। वे महाराजा अनूपसिंहजी के विशेष कृपा पात्र थे। किसनदासजी विक्रम संवत् १७४७ आदुणी अमतियागढ़ में शहीद हुए। उनके पीछे विक्रम संवत् १७४७ माघ बदी अमावस के दिन सीता कंवर ने अग्नि-स्नान किया।

युवा जांबाज को पूरे गाँव ने गर्व से शहादत दी गई। अग्नि-स्नान की पावन धरा में महायोद्धा अखैराज के पीछे विक्रम संवत् १७४७ मिगसर बदी चौथ को (भगवत) कंवरजी ने अग्नि-स्नान किया। गाँव के प्रांगण में आज भी सतीत्व के स्मारक ज्यों त्यों स्थापित हैं। इन स्मारकों को देखकर राह चलता पथिक अतीत की असीम गहराइयों में डूब जाता है।

अणदरामजी: महाराजा अनूपसिंह जी के पश्चात् भी अनवरत बीकानेर राजघराने में उदैरामजी के वंशजों का पराक्रम और राजघराने के कार्यों में सक्रिय भागीदारी चलती रही। किसनदासजी के पुत्र अणदरामजी भी महाराजा सुजानसिंहजी के विशेष कृपा-पात्र रहे। महाराजा सुजानसिंहजी प्रत्येक कार्य में उनकी सलाह लिया करते थे। राजघराने में सामंतों का एक गुट ऐसा भी तैयार हो गया था, जो अणदराम जी को दूर करने लग गया। उनकी जगह बख्तावरसिंह को रखना चाहते थे। समय पाकर उस गुट ने महाराजा साहब के कुंवर जोरावर सिंह को भी साथ कर लिया। मौका पाकर विक्रम संवत् १७८९, चैत्र बदी अष्टमी को आधी रात के समय अणदरामजी को कत्ल करके मरवा दिया गया। जब महाराजा सुजानसिंहजी को इस अपकृत्य की सूचना मिली तो बड़े दु:खी हुए, साथ ही अपने पुत्र को वहां से निकाल दिया। कालान्तर में कुछ दिन जोरावरसिंह 'उदासर' जाकर रहे थे।

गंगाराम जी: सुन्दरदासजी के पौत्र गंगारामजी अत्यंत निडर एवं विलक्षण पराक्रम के धनी थे। जिस समय जोधपुर रियासत के विद्रोही जोरावरसिंह उत्पात कर रहा था उस समय बीकानेर महाराजा राजसिंह ने जोधपुर महाराजा को सहायता देकर विद्रोह को दबाया, साथ ही गंगारामजी को पोकरण में शांति हेतु भेजा। पोकरण से वापस लौटते समय गंगारामजी भाटियों के साथ 'उदयरामसर' पहुँचे। विक्रम संवत् १८१६ की यह अद्भुत घटना बीकानेर इतिहास की शौर्य की एक बेबाक कहानी है। इस महापराक्रमी योद्धा ने 'माण्डण' में विक्रम संवत् १८३१ में अपने प्राणों का बलिदान किया।

G S Group of Companies
(Serving Customers for 30+ Years)

Address: J1/5 Kariwala Towers 6th Floor Block EP, Sector-V
Salt Lake City, Kolkata 700 091, West Bengal, India

Mr. Gouri Shankar Sharma
+91 9830021754
md@gsgroupindia.co.in

Mr. Umesh Sharma
+91 7595902947
usharmawb@gmail.com

Mr. Abhishek Sharma
+91 9831668775
laduism@gmail.com

www.gsgroupindia.co.in

IT & ITES, Hospitality, Telecommunication, Infrastructure Development
Garments, Investment Banking, Dept. Syndication & Private Equity

राजस्थान स्थित
उदयरामसर के पवित्र स्थल

बालकिया धोरा

गाँव के दक्षिण-पूर्व दिशा में लगभग ७ किमी दूर (जोड़बीड़) स्थित, यह धोरा वह तपस्थली है, जहाँ किसी बालयोगी ने अपनी माँ के लौटने तक महीनों भूखे रहकर धोरे की गोद में अपने प्राणों को अक्षुण्ण रखा। अकाल की भीषण विभीषिका के चलते दुर्बल माँ बच्चे को साथ लेकर उदरपूर्ण नहीं रह सकती थी, इसलिए फोग (रेगिस्तानी झाड़ी) के भरोसे छोड़, ननिहाल

से दाल बाटि लाने को कह कर काफिले के संग चल पड़ी। लम्बी अवधि से वापस लौटने पर देखा तो बच्चा वहीं फोग के साये में सत् से जीवित था। माँ को देखते ही बच्चे ने दाल-बाटि को खाने के लिए कहा। माँ, कुछ बोल नहीं सकी। माँ को खाली हाथ देख बच्चे ने अपने प्राणों को छोड़ दिया। उपरोक्त जनश्रुति के अनुसार आज भी उस बालयोगी की याद में दूर-दूराज के श्रद्धालु यहाँ आ कर अतीत की अनूठी घटना का स्मरण करते हैं।

साइमंड के शिलालेख

राष्ट्रीय राज मार्ग सं. ८९ के पास गाँव से लगभग २ किमी दूर दक्षिण-पश्चिम दिशा में स्थित साइमंड के शिलालेखों पर सूर्यनारायण के प्रतीक चिह्न आज भी मौजूद हैं। दो बड़े शिला स्तम्भ आज भी आदिम जाल के पेड़ के पास खड़े हैं। कालान्तर में ये शिला स्तम्भ चार थे, किन्तु वर्तमान में मात्र दो ही शेष रह गये हैं।

जाल भी अब मात्र नाम रूप में रह गयी हैं। गाँव की बसावट से पूर्व के इस स्मारक से जुड़ी दन्त कथा लोमहर्षक है।

बाघोड़िये राजपूत के एक दामाद रात्रि के समय यहाँ विश्राम कर रहे थे, जाल के पास खड़े सांड ने दामाद को बुरी तरह से कुचल दिया। जिससे वे तत्क्षण यमलोक सिधार गये। खबर लगते ही उनकी धर्मपत्नी ने सतीत्व को ग्रहण किया। उनकी याद में ये शिलालेख आज भी दर्दभरी कहानी का मूक साक्ष्य प्रदान कर रहे हैं।

आसोपा धोरा

यह धोरा सुनहरे रेतीले टीबों में बीकानेर के (उदयरामसर) आसपास एक खासियत से पहचाना जाता है। यहाँ पर गणेशजी, शिवजी, रामजी व हनुमानजी के मन्दिर अत्यधिक मनमोहक हैं। यहाँ पूजा-अर्चना के अलावा

आरोग्य के हिसाब से यह स्थान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। ध्यान व धारणा के लिए अनूठा स्थान माना जाता है। 'आसोपा धोरे' पर लोग स्वास्थ्य लाभ के लिए भी आते हैं। यहाँ कभी गुफा थी, जो आज देख-रेख के अभाव में जमींदोज हो चुकी है। भैरवदान आसोपा के समय में यहाँ राजयक्ष्मा एवं अस्थमा के रोगियों का सफल इलाज होता था, इसलिए यहाँ स्वास्थ्य लाभ के लिए दूर-दराज से रोगी आते थे, हवा, पानी, मिट्टी का प्रभाव आज भी रोगियों के स्वास्थ्य को सुकून प्रदान करता है। यह स्थान 'आसोपा धोरे' के नाम प्रसिद्ध है।

रामसुखदासजी की कुटिया

परम श्रद्धेय महान् संत श्री रामसुखदासजी महाराज द्वारा स्थापित वह कुटिया आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। अनेक बार स्वामीजी

ने यहाँ चार्तुमास सत्संग से भी जन-मानस को लाभान्वित किया था। इस कुटिया की पावन मिट्टी का लाभ लेने भारतवर्ष के कोने-कोने से लोग आते रहे हैं। सनातन धर्म की अनुपम स्थली, जहां प्रत्येक व्यक्ति को शांति मिलती है।

दादा बाड़ी

जैन सम्प्रदाय के दादा गुरुदेव जिनदत्त सूरि के नाम से यह स्थल 'दादा बाड़ी' के नाम से विख्यात है। यहां पर दादा गुरुदेव के चमत्कारों की चर्चा गाँव एवं दूर दराज में भी होती रहती है। दादा बाड़ी की प्रतिष्ठा एक तपोभूमि के रूप में आज भी जगजाहिर है। **शेष पृष्ठ १८ पर...**

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मिलवर्तन का मिसाल जन-जन में है भाईचारा राजस्थान की गोद में राजस्थान की शान 'उदयरामसर' के ऐतिहासिक प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

स्व. भैरुधनजी सिपानी

स्व. सोहनलालजी सिपानी

जेठीदेवी सिपानी

विमला कमल सिपानी
कविता यशवंत बोथरा
काजल संजय सांखला
पूजा चंदन बोरा

एकता संकेत देवडा
स्नेह हितेह शाह
अभिषेक सिपानी
पावन स्मृति

Now we are also Manufacturers of:

ALIMINIUM WIRE RODS

Size: 6mm, 7.5mm, 9.5mm, 13mm

For Your requirements Contact:
Yaswant Bothra: 9845844449
abhinandanaluminium@gamil.com

ABHINANDAN

कमल सिपानी

Abhinandan Petro Pack Pvt. Ltd.

Manufacturors of: PLASTIC WOVEN SACKS & LENO SACKS EC/ALLOY WIRE ROD/DEOX ROD & ALUMINUM WIRE

Work & Factory : No. 27/1A, Vadera Manchena Halli, Kallu Balu Post, Jigani Hobli, Anekal Taluk., Bangalore, Karnataka, Bharat - 562106.

दूरध्वनि - 080-27825204 Grams : ABHISHEK

email: abhinandanppi@gmail.com

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान 'हिंदी' को दिलाओ राष्ट्रभाषा का सम्मान

पृष्ठ १६ से... 'बीकानेर' रियासत एवं अन्य प्रान्तों से भी जैन श्रद्धालु यहाँ पूज्यवर गुरुदेव जिनदत्तसूरिजी महाराज के दर्शन को लालायित होकर आते हैं। यह प्राचीन मन्दिर 'उदयरामसर' की स्थापना से पूर्व एक जैन उपाश्रय के रूप में विख्यात था। उदैरामजी द्वारा 'उदयरामसर' की स्थापना के बाद सन् १७३५ में आचार्य जिनदत्त सूरिजी महाराज की चरण पादूकाएँ यहाँ

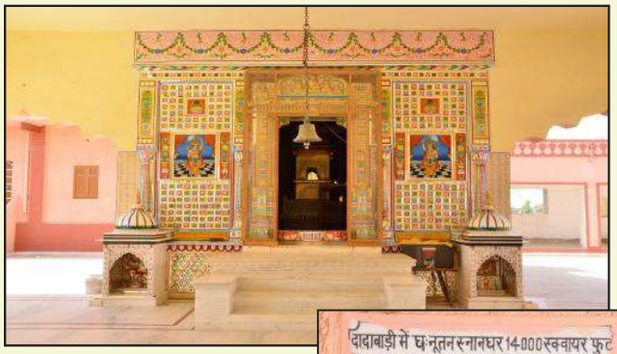

दादाबाड़ी में घ नूतन स्नानघर 14000 स्क्वायर फुट
पेवर का कार्य एवं मंदिर के आगे की सात जगन्नाथजी
र घुनाथजी की घतरिया एवं कुंड के आगे की साल
का जीर्णोद्धार का कार्य श्री चिन्तामणी जैन मंदिर
प्रन्यास द्वारा करवाया गया वर्ष 2018 विक्रम संवत् 2074
सचिव
चन्द्र सिंह पारख
अध्यक्ष
निर्मल कुमार घारीवाल

स्थापित की गईं। सन् १८८३ में इस उपासरे का जीर्णोद्धार कर उस जगह को वर्तमान रूप में परिवर्तित किया गया। भादवा सुदी पूर्णिमा को प्राय: १० से १६ हजार श्रद्धालु यहाँ दर्शन लाभ को आते हैं।

सम्पूर्ण आयोजन का कार्यभार श्री चिन्तामणी जैन मन्दिर ट्रस्ट बीकानेर द्वारा उठाया जाता है। ठहरने की समुचित व्यवस्था भी की हुई है।

गणेश मन्दिर

विगत वर्षों में स्थापित गणेश मन्दिर स्वामी रामसुखदासजी की कुटिया के पूर्व दिशा में स्थित है। प्रत्येक बुधवार को यहाँ दर्शनार्थियों का तांता लगा रहता है। ये करामती गणेश के रूप में विख्यात है। एक मान्यता के अनुसार निज मंदिर के नीचे विनायकजी का प्राचीन भव्य मंदिर है। यहाँ का धूणा एवं सिद्ध महाराज लोक कल्याणकरी है।

डन्डी बाबा

डन्डी बाबा मन्दिर स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर के पास स्थित है। यह मन्दिर बहुत ही प्राचीन है। दन्त कथाओं के अनुसार यहाँ किसी फक्कड़ साधु ने गहन साधना की, आज भी सच्चे साधक को यहाँ अलात् शांति मिलती है।

जसनाथ मन्दिर

गाँव के मनभावन केन्द्र में स्थापित जसनाथ मंदिर गुरु गोरखनाथ और जसनाथजी के आशीर्वाद का जीवंत नमूना है। वर्षों पूर्व चन्द्रदेवजी यादव ने यहाँ जीवित समाधि लेकर उदक भूमि के प्रयोजन को सिद्ध किया। निर्मल ह्रदय से इबादत करने पर व्यक्ति के अधिदैविक, अधिभौतिक और आध्यात्मिक दु:खों अर्थात् दु:खत्रयी का उपशमन हो जाता है। यदा-कदा श्रद्धालुओं द्वारा यहाँ अंगारों पर नृत्य भी करवाया जाता है।

गुन्दी वाले हनुमान बाबा

गुन्दी वाले हनुमान मन्दिर गाँव से लगभग २ किलोमिटर दूर दक्षिण दिशा में स्थित है। यह हनुमान मन्दिर बड़ा चमत्कारी है। मन्दिर के आसपास गुन्दी के वृक्षों का मनोहर दृश्य देखने को मिलता है। यह मन्दिर बड़ा सात्विक है, तामसिक क्रिया कलापों एवं तामसिक वृत्तियों का यहाँ पूर्ण निषेध है।

शेष पृष्ठ १९ पर...

राजस्थान की झलकियां

पृष्ठ १८ से...

गौशाला मन्दिर

धर्मपरायण एवं विद्यानुरागी महाराज रायसिंह के शासनकाल में निर्मित गौशाणा मन्दिर गाँव के उदयसरोवर की मेढ़ पर नूतन रूप में स्थित है।

जनश्रुति के अनुसार किसी सिद्ध पुरुष ने पानी की किल्लत को दूर करने के लिए तालाब खोदने के लिए भूतों को आहवान किया। भूतों को तालाब खोदने के कार्य में लगाकर खुद समाधिस्थ हो गये। तालाब खुद जाने के पश्चात् भूतों ने बार-बार कहा-बाबा मिट्टी कहाँ डाले? क्षुब्ध होकर बाबा ने कहा-मेरे ऊपर! फिर क्या! देखते ही देखते भूतों ने बाबा को मिट्टी में ही समाधिस्थ कर दिया। उनकी याद में उनके एक शिष्य ने राज की मदद से मन्दिर को निर्मित करवाया। उदयसरोवर की तलहटी अतिपावन एवं आरोग्यप्रद है।

गाँव के उम्रदराज आज भी इसे तांबे की तलहटी के रूप में मानते हैं। इस तालाब के छोर पर स्थापित ''काला भाटा'' अनेक उतार-चढ़ावों का मूक साक्षी है। काले भाटे तक बरसात के पानी का आना अति शुभ एवं फसल के लिए उत्तम माना जाता है।

भभूता सिद्ध मन्दिर

सोलंकी (राजपूत) समाज के सिद्ध लोक देवता जो मूलत: चारणवाला कोलायत के रहने वाले थे। बचपन से ही आप मन्त्र सिद्ध एवं चमत्कारिक देवता के रूप में विख्यात हुए। ऐसी मान्यता है कि विषैले जन्तुओं के दंश का असर आपके नाम मात्र से समाप्त हो जाता है। आज भी प्रति वर्ष चारणवाला से बड़ा मेला लगता है। गाँव उदयरासर में मधुसिंह यादव पुत्र रामबख्शजी द्वारा इस मन्दिर की स्थापना की गई थी।

गोगाजी का मन्दिर

हड़बू, पाबू, रामदेव के साथ-साथ गोगाजी का नाम भी राजस्थान के प्रमुख लोक देवता के रूप में विख्यात है। गाँव का यह प्राचीन मन्दिर जो नागदेवता के रूप में भी प्रसिद्ध है, कालान्तर में गोगाजी के भोपे सांकल ठोक नृत्य करके भाप एवं आखा लेते थे। आजकल यह रिवाज बन्द हो चुका है।

नामदेवजी का मन्दिर

श्री हरि विष्णु के अनन्य भक्त, जो जीव मात्र को समग्र **शेष पृष्ठ २८ पर...**

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
मिलवर्तन का मिसाल जन-जन में है भाईचारा
राजस्थान की गोद में राजस्थान की
शान 'उदयरामसर' के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Mahendra Kumar Sipani
Mob. : 9932281641

P.O. Kolaghat, Dist. Medinipur East,
West Bengal, Bharat - 721134
Ph. : 3220 - 825 6642

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
With Best Compliments

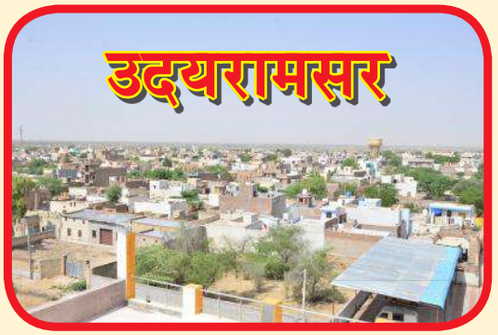

Om Prakash Mall
Kolkata

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

नामदेवजी का मन्दिर

सतीदादी छतरी

शिव-मन्दिर और शिव मंदिर के अंदर का भाग

मजी का मन्दिर, सत्यनारायणजी का मन्दिर भी स्थापित है।

जैन मन्दिर :- जैन समाज की उपासना स्थली का अभाव दूर करने में सक्षम यह मन्दिर हाल ही में निर्मित हुआ है। पूराने मन्दिर का जीर्णोद्धार कर इस नये मन्दिर का निर्माण श्री चम्पालाल जी बोथरा के सुपुत्र पारस मल जी बोथरा की अगुवाई में सम्पन्न हुआ। पारस मल जी बोथरा के तीनों भाई श्री धूड़ मल जी बोथरा, थान मल जी बोथरा तथा हरख चन्द जी बोथरा का आर्थिक योगदान अन्य महानुभावों के साथ रहा है।

गोचर भूमि स्व. शीव प्रताप जी बजाज ने गाँव के पशुधन के हेतु ३०० बीघा से अधिक भूमि गोचर भूमि के रूप में गाँव के बाहर छोड़ रखी है। बजाज परिवार द्वारा किया गया यह उपक्रम अपने आप में महान है।

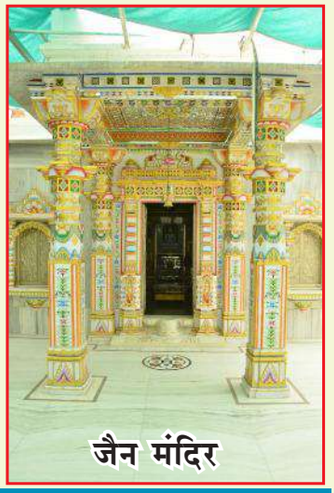
जैन मंदिर

पृष्ठ २७ से... दृष्टि से देखते थे, जिन्होंने भक्ति के नये आयाम स्थापित किये, दौड़ते श्वान को चिकनी रोटी खिलाने की मांग का उदाहरण अद्वितीय है। गाँव में छींपा समाज के साथ-साथ सभी समाजों के लोग नामदेवजी का नाम आदर से लेते हैं।

सती दादी का मन्दिर

गाँव की वीरांगनाओं एवं आर्य स्त्रियों ने अपने वीर योद्धाओं की वीरगति की याद में अग्नि-स्नान किया। (सीता कंवर जी, मनोहर कंवर जी, दासी पारा, नंद कंवर जी के स्मारक आज भी जीवन्त हैं।) अग्नि-स्नान की तिथियां एवं संवत् पूर्व में वर्णित हैं।

अन्य मंदिर: शिव-मन्दिर, ठाकुरजी का मन्दिर, कांकड़ वाले हनुमानजी व बाबा रामदेवजी का मन्दिर, काले जी का मंदिर, तोलियासर भैरव जी का मंदिर, श्री राधाकृष्ण जी का मंदिर, गोगाजी का मंदिर, केसरियाजी का मंदिर, शीतलामाताजी का मंदिर, हरीरा-

ठाकुरजी का मंदिर

कांकड़ वाले हनुमानजी मंदिर

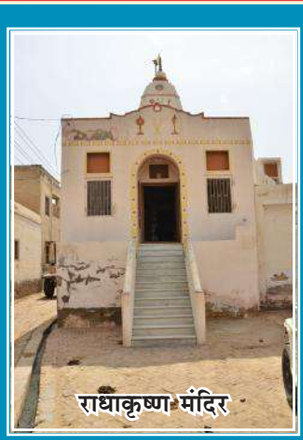
राधाकृष्ण मंदिर

करणी माता मंदिर (सफेद काबा)

शीतलामाताजी का मंदिर

बाबा रामदेवजी का मन्दिर

हरीरामजी का मन्दिर

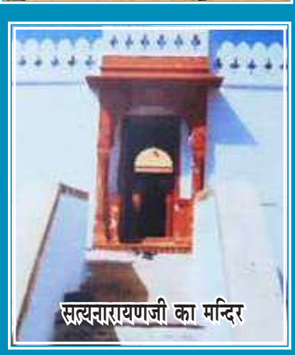
सत्यनारायणजी का मन्दिर

BIYANI
GROUP OF COLLEGES

BIYANI
Where you can trust

Follow us

Accredited 'A' Grade by NAAC

ADMISSION OPEN FOR SESSION 2020-21

On Campus Hostel Facility (For Girls)

VISION : YOUTH EMPOWERMENT | MISSION : PROFESSIONAL EDUCATION

- **Biyani Girls College**
  (NAAC Accredited) www.biyanicolleges.org
- **Biyani Inst. of Science & Mgmt. for Girls**
  (NAAC Accredited) www.bisma.in
- **Biyani Girls B.Ed. College**
  (NAAC Accredited) www.biyanigirlscollege.com
- **Biyani School of Nursing & Paramedical Science for Girls**
  www.biyaninursingcollege.com
- **Biyani Ayurvedic Medical College & Hospital for Girls**
  www.biyaniayurvediccollege.com
- **Biyani College of Science & Mgmt. (Co-Ed.)**
  www.bcsmjaipur.com
- **Biyani Law College (Co-Ed.)**
  www.biyanilawcollege.com
- **Biyani Inst. of Pharmaceutical Sciences (Co-Ed.)**
  www.biyanipharmacycollege.com
- **Biyani Private ITI (Co-Ed.)**
  www.biyaniiti.com
- **Biyani Inst. of Skill Development (Co-Ed.)**
  www.bisd.in
- **Biyani Inst. of Yoga & Naturopathy (Co-Ed.)**
  www.biyanicolleges.org

GURUKPO No.1 Educational Web Portal in India .COM — www.gurukpo.com

BIYANI TV बात में दम है... — www.youtube.com/BiyaniTv

बियानी टाइम्स BIYANI TIMES JAIPUR ...जो देता है पॉजिटीविटी, एनर्जी एंड अपडेट — www.biyanitimes.com

RADIO Selfie 90.8 FM — www.radioselfie.in

BioSeeds Chaos to Order, Random to Functional — www.bioseeds.jp

Campus 1 : Sector-3, Vidhyadhar Nagar, Jaipur, Rajasthan, India
Campus 2 : Kalwar-Jobner Road, Kalwar, Jaipur, Rajasthan, India
Campus 3 : Champapura, Kalwar Road, Jaipur, Rajasthan, India

Phone : 8890435298, 8290636942, 0141-2338591
E-mail : acad@biyanicolleges.org
Website : www.biyanicolleges.org

For more information visit our website : www.biyanicolleges.org & fill the enquiry/feedback form

राजस्थान में स्थित उदयरामसर की शोभा

गाँव के गवाड़ में स्थित जलदाय विभाग की टंकी

गवाड़ छतरी :- गाँव की गवाड़ की शोभा में चार चाँद लगाने वाली यह प्राचीन राजस्थानी कला का नमुना है। यह छतरियाँ कोई स्मृति चिन्ह है या नहीं वह तो शोध का विषय हो सकता है, मगर गाँव के सौंदर्य वर्द्धन में इनकी भूमिका निर्विवाद है।

पीपल गाछ :- एक ऐसा वृक्ष जिसकी गोद में बैठने एवं ठन्डा बायरा लेने की स्मृति प्राय: हर एक उदयरामसर वासी की है। गाँव के प्रत्येक उत्तार-चढ़ाव का साक्षी यह पीपल गाछ रहा है। अगर वृक्ष के पास भावाभिव्यक्ति का सामर्थ्य रहा होता तो यह वृक्ष गाँव के हर परिवार की गाथा कहने में समर्थ होता।

पीपल गाछ

बैंक :- गाँव में स्टेट बैंक आफ बीकानेर एन्ड जयपुर कार्यरत है। जो उदयरामसर के आर्थिक उत्थान में अपनी पूर्ण योगदान कर रहा है। इसमें २५०० के आसपास खाते हैं।

स्टेट बैंक

विद्युत विभाग :- गाँव की विद्युत सम्बन्धी सभी आवश्यकतायें तुरन्त निपटाने में सक्रिय विद्युत विभाग गाँव की शोभा है।

टेलीफोन एक्सचेंज:- एक हजार सामग्रिक क्षमता वाला यह टेलीफोन केन्द्र गाँव की सेवा में सक्रिय भुमिका निभा रहा है।

पोस्ट ऑफिस

डाक घर :- ग्राम वासियों का अर्थ सुरक्षित संचित करने में डाक घर एक सम्पूर्ण भरोसेमन्द जगह है।

ग्राम पंचायत भवन :- ग्राम की कार्य योजना को क्रियान्वित करने का केन्द्र ग्राम पंचायत है। इस भवन के अतिरिक्त एक गेस्ट हाउस भी है। जिसमें समय-समय पर आने वाले सरकारी अधिकारीयों के लिये ठहरने की समुचित व्यवस्था है। इसके अलावा एक ग्राम सेवक आवास भी पंचायत के अंतरगत है।

ग्राम पंचायत भवन

उदयरामसर में प्रमुख प्याऊ

लिछमा प्याऊ

गुन्दी हनुमान प्याऊ

बागड़ी प्याऊ

लिछमा प्याऊ - यह गाँव की सबसे पुरानी प्याऊ है। गाँव से लगभग १ किमी उत्तर दिशा में स्थित है। विगत २०० वर्षो से यह प्याऊ मल्ल परिवार द्वारा संचालित हो रही है।

गुन्दी हनुमान प्याऊ - गाँव की दक्षिण दिशा में स्थित यह प्याऊ भी बहुत पुरानी है। रमणीक स्थल में संचालित यह प्याऊ लम्बे अरसे से पथिकों को अमृत तुल्य जल उपलब्ध करवाती है।

बागड़ी प्याऊ - राष्ट्रीय राजमार्ग ८९ पर स्थित यह प्याऊ पलानाख देशनोक सुदूर गाँवों के लिए बड़ी उपयोगी है। बागड़ी परिवार द्वारा संचालित हो रही है।

बंशीलाल प्याऊ - गाँव से लगभग १ किमी. दूर ८९-राष्ट्रीय राजमार्ग पर यह प्याऊ सिपानी परिवार द्वारा संचालित है। वर्तमान में इस प्याऊ के पास हनुमान मन्दिर भी है।

सुजानसर दर्रे पर प्याऊ - लगभग ८०-९० वर्षो से यह प्याऊ संचालित है। मल्ल परिवार द्वारा इसका प्रबन्ध किया जा रहा है।

बंशीलाल प्याऊ

सुजानसर दर्रे पर प्याऊ

उदयरामसर के महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक संस्थान

सीनियर हायर सैकेण्डरी स्कूल
सन् १९४६ से प्राथमिक स्कूल से क्रमोन्नत होती हुई आज वर्तमान में हायर सैकेण्डरी स्कूल के रूप में प्रतिष्ठित है। शाला के प्रधानाचार्य के रूप में श्रद्धेय गोरधनसिंहजी ने अपनी पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य करते हुए गाँव का गौरव बढ़ाया है। वर्तमान में छात्रावास, पुस्तकालय की उत्तम व्यवस्था भी है।

श्री कृष्णा पब्लिक से स्कूल, उदयरामसर

चन्दादेवी मल्ल बालिका विद्यालय - महिला शिक्षा के लिए गाँव में चन्दा देवी बालिका विद्यालय का योगदान महत्त्वपूर्ण है।

शिव प्रताप प्राथमिक विद्यालय

शिव प्रताप प्राथमिक विद्यालय - शिव प्रताप प्राथमिक विद्यालय भी प्राथमिक स्तर की शिक्षा देने में प्राथमिक स्तर की अग्रणी संस्था है।

कृष्ण पब्लिक स्कूल - उच्च कोटि का शैक्षणिक संस्थान है। यहाँ माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा दी जाती है, इस संस्थान में भी दूरदराज के छात्र अध्ययन करने आते हैं।

आदर्श विद्या मन्दिर - यह संस्थान सन् १९९५ से प्रारम्भ है। यहां माध्यमिक तक की शिक्षा दी जाती है। मानव निर्माण वृत्ति एवं संस्कारों का विशेष ध्यान रखा जाता है।

आदर्श विद्यामंदिर

आर्यव्रत्त शिक्षा सदन माध्यमिक विद्यालय के रूप में यह शाला उच्च कोटि का संस्थान है। गाँव के ही नहीं, बल्कि दूर-दराज शहर से भी छात्र इस शाला में अध्ययन करने आते हैं।

आधार शीला पब्लीक स्कुल (अंग्रेजी माध्यम)

रॉयल एकेडमी - महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक संस्थान है। यहाँ माध्यमिक स्तर तक की अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा दी जाती है, इसके अलावा भारती विद्या निकेतन, वीरेन्द्र बाल मन्दिर, प्राथमिक बालिका पाठशाला इत्यादि भी उच्च कोटि के शिक्षण संस्थान हैं।

आधार शीला पब्लीक स्कुल (अंग्रेजी माध्यम): उच्च कोटि का महत्वपूर्ण शिक्षा संस्थान है, जिनके संस्थापक श्री दिपक यादव है, जहाँ सैंकड़ों विद्यार्थी शहरों से आकर शिक्षा ग्रहण कर लाभान्वित हो रहे है।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
मिलवर्तन का मिसाल जन-जन में है भाईचारा
राजस्थान की गोद में राजस्थान की शान 'उदयरामसर' के
ऐतिहासिक प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

दादाबाड़ी

Arun Kumar Sipani
Mob: 7002640134
9401674725
Sunil Rice Mill
Post Jagi Road,District Mori Gaon,
Assam, Bharat 782410
भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
मिलवर्तन का मिसाल जन-जन में है भाईचारा
राजस्थान की गोद में राजस्थान की
शान 'उदयरामसर' के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

सती दादी मंदिर

Ashok Kumar Sipani
Mob. : 9435070849
Sohanlal Sundarlal
Janiganj, Silchar, Cachar,
Assam,Bharat - 788001
भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

गाँव के भामाशाह

उदयरामसर गाँव के उत्थान में मल्ल परिवार का सहयोग

जय किसनदासजी

हरीकिसनजी मल्ल

भैरूदानजी मल्ल

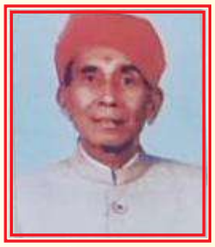
स्व. मोतीलालजी मल्ल

उदयरामजी की प्रति के स्थापन के अवसर पर मल्ल परिवार के
श्री बृजमोहनजी, श्री ओमप्रकाशजी,
श्री श्रीकिसनजी, श्री बसन्त कुमार जी व श्री सागरमलजी

राजस्थान मूल के व्यापारी वर्ग के साथ विडम्बना रही है कि उसे अपनी आजीविका के लिए अन्य प्रान्तों में जाकर उसे अपनी कर्मस्थली बनानी पड़ी, परन्तु अन्यत्र जाकर भी अपनी मातृभूमि को भूल नहीं सके तथा गाँव की जरूरतों तथा विकास के बारे में अनवरत सोचते रहे। उदयरामसर का मल्ल परिवार भी अपनी मातृभूमि के निरन्तर विकास में सक्रिय सहयोग देता रहा। उस परिवार द्वारा किए गये कार्य उल्लेखनीय हैं -

१. स्व. जयकिसनदासजी, हरिकिसनदासजी, भैरूदासजी ने गाँव में पानी की कमी देखकर तथा राहगीरों की तकलीफ देखकर सुचासर मार्ग तथा बरसिंगसर मार्ग पर प्याऊ तथा मन्दिर बनाए, जो आज भी चल रहे हैं तथा राह चलते हर पथिक अपनी प्यास बुझाते हैं।

विदित हो कि १९४०-५० के बीच राजस्थान में पानी की भयानक किल्लत थी, गाँव वालों को दूर-दूर से पानी लाना पड़ता था। आबादी बढ़ रही थी। तथा गाँव में सिर्फ एक ही कुंआ था। इस अवसर पर इस परिवार ने एक कुंआ बनाकर गाँव की सेवा की। वह कुंआ आज भी गाँव की पेयजल का उत्तम साधन है। वर्तमान पीढ़ी के श्री किसनजी, श्री बसन्त कुमार जी, श्री ब्रज मोहन जी ने सेवा के उद्देश्य से उसी कुंए के सामने शीतल पेय जल के लिए आधुनिक यंत्र लगाने का कार्य किया है।

सोहनलालजी मल्ल

रामकिसनजी मल्ल

जगमोहनजी मल्ल

२. गाँव में गायों की सेवा हेतु एक पिंजरापोल का भी निर्माण श्री लक्ष्मीनारायणजी मल्ल द्वारा किया गया। गौ धन वृद्धि के लिए अच्छी-अच्छी नस्लों के बाहर से सांड (गोधे) मंगवाकर उनकी नस्ल सुधार का कार्य भी हुआ है और बाद में उन गोधों की समुचित देखभाल की जाती रही। श्री शिवकिसनजी मल्ल इस कार्य की देख-रेख करते रहे है।

३. धार्मिक स्थलों में हनुमानजी का मन्दिर श्री हनुमानदास बद्री नारायण मल्ल द्वारा स्थापित किया गया।

४. मिडिल स्कूल के कमरे बनाने तथा समय-समय पर अन्य कार्यों में पूरा सहयोग इस परिवार का रहा।

५. (बालिकाओं) को शिक्षा देने हेतु चंदादेवी मल्ल कन्या पाठशाला का निर्माण भी जय किशनदास जी मल्ल द्वारा करवाया गया था।

६. चिकित्सा के क्षेत्र में उदयरामसर में जयकिसनदासजी मल्ल द्वारा ग्रामीण स्वास्थ्य चिकित्सा केन्द्र भी स्थापित करवाया गया।

७. महेश्वरी भवन बनाने का विचार स्व. भैरूदानजी मल्ल एवम् स्व. रामकिसनजी मल्ल के दिमाग में आया तथा गाँव में अन्य स्वजन बन्धुओं का सहयोग लेकर महेश्वरी भवन का निर्माण किया गया। इस भवन में मल्ल परिवार का बहुत बड़ा सहयोग रहा है।

शेष पृष्ठ २६ पर...

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

शहीदों की पावन भूमि 'उदयरामसर' के
इतिहास प्रकाशन पर 'मेरा राजस्थान'
परिवार को हार्दिक शुभकामनायें

मल्ल परिवार

उदयरामसर / कोलकत्ता

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान नीम लगायें पर्यावरण बचाये

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

शहीदों की पावन भूमि 'उदयरामसर' के इतिहास प्रकाशन पर
'मेरा राजस्थान' परिवार को धन्यवाद

Gokul Chand Sipani

Mob. : 9343173401

S/o Bhairu Chand Ji Sipani

Shri Sipani Shaw Mills & Woodworks

Mob. : 9845352325

Gavanahalli, Chikmagalur, Karnataka, Bharat - 577101
Phone : 0826 - 2224516

नीम लगायें पर्यावरण बचाये भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

पृष्ठ २४ से...८. राधा-कृष्ण मंदिर का निर्माण लक्ष्मीनारायण मल्लजी की धर्मपत्नी स्व. सरस्वती देवी मल्ल द्वारा करवाया गया था। मल्ल परिवार के आदि के सेवा कार्यों का भुलाया नहीं जा सकता, वर्तमान पीढ़ी में श्री किशन जी मल्ल, श्री सागरमल जी मल्ल तथा श्री बसंतकुमार जी मल्ल गाँव की गतिविधियों में पुरा सहयोग दे रहे है जबकि अन्य परिवार जैसे कि ओम प्रकाश जी मल्ल, बृजमोहनजी मल्ल एवं अन्य सभी का अप्रत्यक्ष रुप से सहयोग भी मिल रहा है।

माहेश्वरी भवन

राधा कृष्ण मंदिर

१. प्याऊ निर्माण एवं संचालन
२. कुआ का निर्माण एवं वाटर कूलर लगवाकर नि:शुल्क जल सेवा
३. बालिका विद्यालय का निर्माण
४. प्राथमिक उपचार हेतू अस्पताल का निर्माण
५. माहेश्वरी भवन एवं गेस्ट हाऊस का निर्माण
६. आदर्श विद्यामंदिर में समय-समय पर सहयोग
७. कई मंदिरों का निर्माण
८. विधवा एवं जरुरतमंदों की गुप्त रुप से सेवा
९. सत्संग एवं धार्मिक कथाओं का आयोजन
१०. समय-समय पर आई कैम्प एवं मेडीकल चेकअप कैप लगाना। आदि आदि कार्य मल्ल परिवार के द्वारा 'उदयरामसर' में नि:स्वार्थ भाव से किया जा रहा है। वैसे और भी कई परिचारों का उल्लेख किया जाना चाहिए पर अज्ञातवश यहां प्रस्तुत नहीं किया सका है।

सहकारी संस्थायें विकसित देशों के आर्थिक सशक्तिकरण का आदर्श साधन

-रमेशकुमार बंग, हैदराबाद प्रवासी

सहकारी संस्थायें विकसित और विकासशील देशों के आर्थिक सशक्तिकरण का एक आदर्श साधन है। सहकारी संस्थाओं के माध्यम से लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ 'एक सबके लिये और सब एक के लिये' जैसी महती भावना का पोषण होता है, व्यक्ति और देश को आत्म निर्भर बनाने के सामूहिक प्रयास से न केवल सामूहिक सहभागिता को बल मिलता है बल्कि सुरक्षित व सक्षम राष्ट्र का आधार सुदृढ होता है, उपरोक्त विचार महेश बैंक के चेयरमैन इमीरेट्स रमेशकुमार बंग ने राजेन्द्रनगर स्थित सहकारिता प्रशिक्षण संस्थान द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर आयोजित सहकारिता द्वारा क्लाइमेंट एक्शन विषय पर आयोजित वेबिनार कॉन्फ्रेन्स में भाग ले रहे प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुये व्यक्त किये। सहकारिता द्वारा क्लाइमेट एक्शन वेबिनार कॉन्फ्रेन्स का प्रारम्भ करने के पूर्व सहकारिता प्रशिक्षण संस्थान के प्रांगण में सहकारिता ध्वजारोहण महेश बैंक के चेयरमैन इमीरेट्स रमेशकुमार बंग द्वारा संस्थान के निदेशक एच. एस. के. तंगीराला के साथ किया। महेश बैंक के चेयरमैन इमीरेट्स रमेशकुमार बंग ने अपने सम्बोधन में कहा कि भारतीय सहकारिता ने वैश्विक सहकारिता समूह को मौसम परिवर्तन के साथ सहकारिता आन्दोलन को अपेक्षित सुधारोन्मुख रहने के लिये सदैव प्रेरणा दी है। मौसमीय परिवर्तन की अनदेखी न केवल जीवनशैली को प्रभावित करती है अपितु जन जीवन के साथ भूमण्डल के पर्यावरण शुद्धी पर भी अवरोधक का काम करती है। सहकारिता जगत के सक्षम नेतृत्व में ग्रामीण स्तर तक फैले सहकारिता आन्दोलन से जुड़े हर प्रबुद्ध सदस्य के लिये यह एक अवसर है, जन जागरुकता के लिये यह पहल कर एक बेहतर और प्रदुषण मुक्त विश्व की कल्पना को साकार करें।

राजेन्द्रनगर स्थित सहकारिता प्रशिक्षण संस्थान में अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर आयोजित सहकारिता द्वारा क्लाइमेट एक्शन विषय पर आयोजित वेबिनार कान्फ्रेन्स में महेश बैंक के चेयरमैन इमीरेट्स रमेशकुमार बंग के साथ भाग लेते हुये संस्थान के निर्देशक एच. एस. के. तंगीराला, सहकारी संस्थानों के प्रतिनिधि रविन्द्रकुमार भाटिया, पी. के पोरवाल, जुगलकिशोर सोनी, सुरेश गोयल, वेदप्रकाश, नन्दकुमार, गंगाधर, के एन सिंह आदि।

सहकारिता प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक एच. एस. के. तंगीराला ने कहा कि सहकारिता संस्थायें भारत के ग्रामीण अंचल में बसने वाले किसानों को आत्म निर्भर बनाने में सरकारी दिशा निर्देशों की अनुपालना करते हुये प्रभावी ढंग से अपनी भूमिका निभा रही है, न केवल कृषि, अपितु मत्स्य पालन, डेयरी, बागवानी, फूलवारी जैसे उद्यमों के द्वारा ग्रामीण सशक्तिकरण के लिये भी सहकारिता अपनी सार्थकता तो सिद्ध कर रही है और पर्यावरण सुरक्षा में योगदान दे रही है।

वेबिनार कॉन्फ्रेन्स में सहकारिता प्रशिक्षण संस्थान के प्रोफेसर डॉ. श्यामकुमार एवम अन्य प्रशिक्षकों के साथ विभिन्न सहकारी संस्थानों के प्रतिनिधि रविन्द्रकुमार भाटिया, पी. के पोरवाल, जुगलकिशोर सोनी, सुरेश गोयल, वेदप्रकाश, नन्दकुमार, गंगाधर, के एन सिंह आदि ने भी सक्रियता से भाग लेकर अपने विचार रखे।

सन्त हरीनाथजी

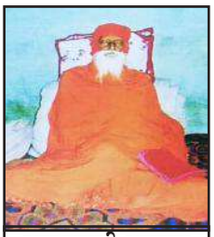
सूरजपुराजी महाराज

सन्त रामनाथजी महाराज

उदयरामसर के प्रसिद्ध सन्त

इनके अलावा सन्त नारायणदासजी स्वामी बाल ब्रह्मचारी और उच्च कोटि के कृष्ण भक्त रहे। आपका अधिकांश समय हरि भजन में गुजरता रहा गोरखपुर और वृंदावन में सन्तों के सान्निध्य में आपका समय का सदुपयोग होता रहा। आपकी अनन्य भक्ति से हजारों लोग लाभान्वित हुए हैं।

माहेश्वरी समाज द्वारा जन हितेषी कार्य

इनरव्हील क्लब ऑफ गुलबर्गा सनसिटी का ४ जुलाई २०२० को नए पदाधिकारी का चयन हुआ जिसमें सौ. सपना अमित लोया, अध्यक्षा एवं योगिता गिल्डा सचिव के पद पर २०२०-२१ के समय के लिए पदमार ग्रहण किया।

कोविड-१९ के जागरूकता हेतु इन्होंने ऑटो रिक्शा के पीछे सोशल डिस्टेंसिंग एवं वियर मास्क आदि के पोस्टर लगाए, साथ ही में इन्होंने सभी ऑटो ड्राइवर को मास्क और सैनिटाइजर बोतल दी। रोड साइड में बैठने वाले छोटे व्यापारियों को छाता एवं मास्क सेनीटाइजर बॉटल दिया।

-दीपक बाल्दवा
कलबुर्गी, कर्नाटक

कोरोना महामारी से प्रसिद्ध समाजसेवी सुरेश जी भराडिया का निधन

सुरेशचन्द्रजी भराडीया

कलबुर्गी (गुलबर्गा) में कोरोनावायरस (कोविड-१९) महामारी से श्री सुरेशचन्द्रजी भराडीया का निधन हो गया, उन्हें हैदराबाद के अस्पताल में दाखिल किया गया था, श्री सुरेशचन्द्रजी भराडया का अंतिम संस्कार हैदराबाद में ही किया गया। श्री सुरेशचन्द्र भराडियाजी के निधन का समाचार सुनकर गुलबर्गा, कलबुर्गी के शोक की लहर छा गई। विदित हो कि श्री सुरेशचन्द्र भराडीया का फरटीलाइजर का व्यापार था। श्री सुरेशचंद्र भराडीया ने अपनी सेवायें माहेश्वरी प्रगती मंडल कलबुर्गा के पूर्व अध्यक्ष के रूप में दी थी। पूर्व अध्यक्ष राजस्थानी सेवा संघ कलबुर्गा के भी रहे।

उदयरामसर के कर्मठ बजाज परिवार

उदयरामसर गाँव के लिए बजाज परिवार का योगदान

स्व. शिवप्रतापजी बजाज धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। अपने समय काल में व्यवसाय करते हुए भी धार्मिक कार्यों में समय एवं धन देते रहे। अपने पुत्रों को भी धार्मिक संस्कार दिए, इसी वजह से उनके पुत्रों हनुमानदास, जानकीलाल, बद्रीनारायण, कन्हैयालाल ने गायों के लिए गोचर भूमि खरीद कर माता गोमती देवी पत्नी स्व. शिवप्रतापजी के नाम से (खसरा नम्बर १०६ तादादी १६ बीघा ६ बिस्वा, खसरा नम्बर २५० तादादी ३१३ बीघा ९ बिस्वा) दान की, जो आज भी गायों के चारागाह के लिए उपयोग में आ रही है।

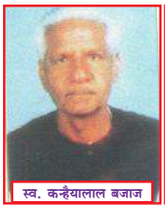
स्व. कन्हैयालाल बजाज

स्व. श्रीगोपाल बजाज

स्व. श्याम सुन्दर बजाज

स्व. राजेश कुमार बजाज

स्व. शिव प्रताप बजाज

स्व. जानकी लाल बजाज

स्व. बद्री नारायण बजाज

शिक्षा के क्षेत्र में शिवप्रताप बजाज प्राथमिक विद्यालय का निर्माण करवाया, जो उस समय बीकानेर जिले के प्राथमिक विद्यालयों में कमरों के हिसाब से श्रेष्ठ विद्यालय गिना जाता था।

गाँव में सर्वप्रथम डाकघर अपनी भूमि पर बनवाकर डाकघर शुरू करवाया। उसके बाद अनुदान देकर सरकारी डाकघर बनाने में भी योगदान दिया, जो व्यवस्था आज भी चल रही है। मुस्लिम समुदाय को शव दफनाने के लिए 'उदयरामसर' से बीकानेर जाना पड़ता था, उनकी इस व्यथा को समझ कर अपनी लगभग तीन बीघा जमीन कब्रिस्तान के लिए दान कर दी, जहाँ वर्तमान में कब्रिस्तान विद्यमान है।

उदयरामसर की क्रमवार सरपंचों की सूची

ग्राम उदयरामसर की आबादी का क्षेत्र फल - ११५.९२ हैक्टर में बसा हुआ है।
गोचर भूमि का क्षेत्रफल - ७४.५४ हैक्टर
श्मशान भूमि का क्षेत्रफल - २.८९ हैक्टर
रास्ता व सडक का क्षेत्रफल - ४९.५४ हैक्टर
वर्तमान में गाँव की अनुमानित आबादी - १०,००० से अधिक

सरपंच -
१- श्री घेवर चन्द सिपानी
२- श्री हरिकिसन दास मल्ल
३- श्री भँवरसिंह पुत्र श्री लक्ष्मीनारायण सिंह यादव
४- श्री मुकुन्द सिंह यादव - कार्यवाहक सरपंच
५- श्री जगमाल सिंह यादव
६- श्री भँवरसिंह पुत्र श्री राधाकिसन सिंह यादव - कार्यवाहक सरपंच
७- श्री सुखदेव शर्मा - कार्यवाहक सरपंच
८- श्री भँवरसिंह पुत्र श्री रामसिंह यादव

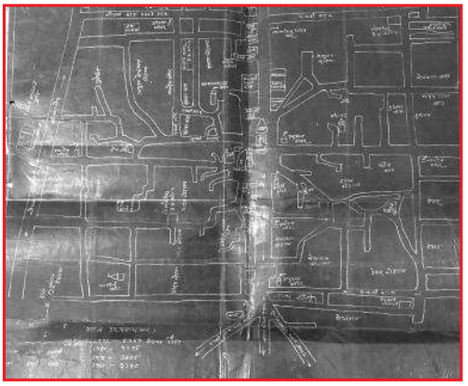

९- श्री भँवरसिंह पुत्र श्री हड़मानसिंह यादव- कार्यवाहक सरपंच
१०- श्री गोवर्धन सिंह यादव
११- श्री आनन्द शर्मा
१२- श्री शिवकरण दान - प्रशासक (ग्रामसेवक)
१३- श्रीमती सुमित्रा शर्मा - ३ फरवरी १९९५ से फरवरी २००० तक
१४- श्री जेठाराम मेघवाल- फरवरी २००० से २००५ तक
१५- हेमन्त सिंह यादव - २००५ से २०१० तक
१६- श्रीमती शारदा देवी - २०१० से २०१५ तक
१७- रामेश्वरलाल मेघवाल २०१५ से २०२० तक
१८- प्रशासक - ग्राम सेवक

संकलनः विमल सिपानी
कोलकात्ता

उदयरामसर के प्रेरक व्यक्तित्व

श्री दुर्गादतजी पुरोहित

लीलादेवी पुरोहित

उदयरामसर गाँव के निवासी श्री दुर्गादत्तजी शर्मा कोलकाता एवं सूरत शहर के व्यवसायी रहे हैं।
आप गौड़ ब्राह्मण परिषद् सूरत, गौड़ ब्राह्मण समाज, उदयरामसर के अध्यक्ष पद पर रहे हैं और सूरत में वरिष्ठ नागरिक परिषद् के अध्यक्ष भी। साथ ही साथ बीकानेर गौड़ ब्राह्मण समाज के सलाहकार रहे। आपने 'उदयरामसर' गाँव में शिव मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया एवं शिवलिंग की स्थापना भी करवाई। गाँव में गोगामेड़ी मन्दिर का निर्माण भी करवाया, साथ ही उदैरामजी की स्मृति में बनी मूर्ति स्थापना समिति को धन एवं मन से सहयोग भी दिया।

उदयरामसर के गौरव

उदयरामसर को प्रतिभा प्रसव भूमि अगर कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। इस भूमि पर लालित-पालित होकर कुछ इस तरह के व्यक्तित्व उभरे हैं
जिन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर बुलंदियो की ऊँचाइयाँ छुआ है।

श्री गोवर्धन सिंह जी यादव :- उदयरामसर ग्राम के गाँधी के रूप में विख्यात महानुभाव गोवर्धन जी के बारे में अगर कहा जावे कि ये उठते-बेठते, सोते-जागते सिर्फ गाँव के ही बारे में ही सोचते हैं। तो कुछ भी अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज गाँव की जितनी भी प्रतिभायें ऊँचाइयों को छू रही हैं, उनमें से ज्यादातर को संस्कार इन्हीं की देन हैं। गाँव के स्कूल के प्रधानाचार्य के रूप में जिस तरह के संस्कार आपने छात्रों में भरे वही संस्कार आगे चलकर उन्हें प्रतिभाशाली बनाने में सहयोगी साबित हुए। गाँव की स्कूल में बगीचा लगाना है, उसे किस तरह सजाना है, गाँव की सारण को भरवाना है, जल निकासी की समस्या का निदान करना है, हर एक क्षेत्र में सर्वप्रथम् स्वयं को श्रमदान के लिये प्रस्तुत कर अपने पीछे श्रमदान करने वालों की लाइन खड़ी कर ली। गाँव में पुस्तकालय भवन का निर्माण करवा कर श्री गोवर्धन सिंह जी ने गाँव की प्रतिभा करवा कर, गाँव की समस्या के समाधान हेतु एवं निर्माण कार्य के संचालन हेतु एक केन्द्र गाँव को समर्पित किया है। गाँव में पहुँचते ही मनोरम हरियाली से मुस्कान बिखेरता पार्क आपका स्वागत करता है। यह पार्क भी श्री गोवर्धन सिंह जी द्वारा गूंथी गई माला का एक बहुमुल्य मणिया है। सन १९१२ के गोवर्धन पूजन के दिन पैदा हुए गोवर्धन जी 'सैकण्डरी स्कूल के प्रधानाध्यापक पद से सेवानिवृत्त हुए और सरपंच के रूप में ग्राम एवं समीपवर्ती इलाके को लाभान्वित किया।

श्री अन्नाराम जी 'सुदामा' :- श्री अन्नाराम जी सुदामा, राजस्थानी भाषा के सबल साहित्यकार है। गद्य-पद्य में समान अधिकार रखने वाले अन्नाराम जी
'सुदामा' ने राजस्थानी भाषा को अनुठा साहित्य प्रदान किया है। हास्य पूर्ण भाषा में व्यंग्य के तीर चलाने में माहिर आपकी लेखनी गुदगुदाती है तो तिलमिलाहट भी पैदा करती है। आपकी के उपन्यास 'आँधे ने आँख्या' को राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला है, जो 'उदयरामसर' ग्राम के लिये गर्व का विषय है। वर्तमान् में गंगाशहर वासी इस सपूत के लिये 'उदयरामसर' की जन्म भुमि अपनी विरह-वेदना को चाह कर भी छुपा नहीं पाती। आपकी दो दर्जन के आसपास पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। आपकी दो पुस्तकें विभिन्न विद्यालयों द्वारा पाठ्यक्रम में स्वीकृत की गई है।

स्व.उदाराम शर्मा: समाजसेवी, वानप्रस्थ संस्कृति के पोषक पुरोधा उदाराम शर्मा, जिन्हें गणित का आर्यभट्ट कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी, गणित के अध्यापन में अहम स्थान रखने वाले उदाराम शर्मा मैट्रिक से एमएससी तक की गणित बेहतरीन तरीके से पढ़ाने में उन्हें महारथ हासिल थी। उदारामजी की विशेषता यह रही कि उन्हें सेवानिवृत्ति के बाद आर्थिक परिलाभ प्राप्त हुए वे सब गौशाला को समर्पित कर दिए और आज भी अपनी समूची पेंशन जीवन भर गौशालाओं में खर्च करते रहे। सादा जीवन उच्च विचार के प्रतीक उदाराम शर्मा उदयरामसर की अकूत धरोहर है।

स्व.लक्ष्मी नारायण सिंह जी यादव:- बीकानेर में डी. एस. पी. पद को गौरवान्वित करने वाले महानुभाव को राष्ट्रिय पदक प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है। राजस्थान पुलिस में डी. एस. पी. के पद पर आसीन होने वाले प्रथम् 'उदयरामसर' निवासी स्व. लक्ष्मी नारायण सिंह यादव पर गाँव को गर्व होना स्वाभाविक है।

श्री करण सिंह जी यादव :- उदयरामसर में जन्में! उदयरामसर स्कूल में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। उदयरामसर की हवा पानी में पले बड़े हुए करण सिंह जी यादव आज अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधत्व करते हैं। क्यों ना फुला समायेगा उदयरामसर? गीता ज्ञान 'कर्म करो फल की चिन्ता मत करो' पर पूर्ण आस्थावान श्री करण सिंह जी के कर्म वृतांत का सम्पूर्ण वर्णन लिखने के लिये एक ग्रन्थ भी छोटा पड़ेगा। कुछेक कार्यो की बानगी :-

- सन् १९७३ में जयपुर सवाई मानसिंह अस्पताल एवं मेडिकल कालेज में एक चिकित्सक के रूप में प्रवेश।
- सन् १९७६ से १९७८ बेल्लूर (तामिलनाडू) में हृदय रोग की शल्य चिकित्सा क्षेत्र में ए.सी.एच के लिये क्रिशचियन मेडीकल कालेज में अध्यापक।
- सन् १९८३ में ब्रिटिश काऊंसिल द्वारा कामन वेल्थ फैलोशिप प्रदान कर आपके विलक्षण योग्यता का सही मुल्याँकन।
- सन् १९८५ से १९८८ इग्लेंड में कौर्नरी बाइपास सर्जन का गहन अनुभव प्राप्त कर उसमें सिद्धहस्त हुए।
- सरकारी सेवा में रहते हुए रूस, ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, फ्रांस, इटली, हालैन्ड, स्विटजरलैंड की अस्पतालों तथा हृदय रोग के अन्य संस्थानों में कार्य प्रणाली का अध्ययन करने के लिये जाना और उसी अनुभव को बाद में सवाई मानसिंह चिकित्सालय में ओपन हार्ट बाई पास सर्जरी जैसे जटिल ओपरेशन सफलतापूर्वक करना।
- सन् १९९० में कार्डियो वेस्कूलर थोरेसिक विभाग के विभागाध्याक्ष।
- सन् १९९६ से अस्पताल अधिक्षक पद पर आसीन।

वर्तमान् में राष्ट्रकूल देशो में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिये राजस्थान संसदीय संघ द्वारा मनोनीत एवं राजस्थान विधान सभा में कांग्रेसी सदस्य। इतना करके भी ना ये 'उदयरामसर' को भूले और ना ही 'उदयरामसर' आपके भूल पाया।

श्री श्रीकिशन जी मल्ल :- उदयरामसर के प्रथम चार्टर्ड एकाउन्टेंट होने का गौरव हासिल किये हुए है। परम् श्रद्धेय गोवर्धन सिंह जी के सानिध्य में शिक्षा प्राप्त कर बुलंदियों को छूने वालों में श्री श्रीकीशन जी मल्ल भी एक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व हैं। पूर्ण व्यस्तता के बावजूद सामाजिक कार्य कलापों के हेतु सदैव तत्पर रहने वाले श्री श्रीकिशनजी मल्ल मुंबई एवं कोलकाता दोनों जगह में समान रूप से परिचित है।

श्री मनमोहन सिंह जी यादव :- दर्शन शास्त्र में पी.एच.डी. करने वाले मनमोहन सिंहजी को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव हासिल है। इन्होंने 'पाताल की घोषणा' तथा 'मदिरालय' नामक दो पुस्तकों सहित दर्जनों पुस्तकें लिखी है।

श्री गौरव बोथरा :- सुदूर आसाम नलवाड़ी में मजिस्ट्रेट के पद पर कार्यरत्त श्री गौरव बोथरा न सिर्फ गाँव के बोथरा समाज के लिये बल्कि पुरे गाँव के लिये गौरव का काम कर रहे हैं।

कर्नल स्व. कुलदीप सिंह यादव: भारतीय सेना में उच्च कर्नल पद पर आसीन थे और देश सेवा में सदैव अग्रणी रहे।

कर्नल सुरेन्द्र सिंह यादव: भारतीय सेना में अपनी वीरता के जौहर दिखा रहे हैं, इन्हें डॉ. कर्ण सिंह यादव का अनुज होने का गौरव हासिल है।

दयाशंकर यादव: मुख्य अभियंता इंदिरा गांधी नहर परियोजना के पद से दीर्घ सेवा के पश्चात सेवानिवृत्त होकर समाजसेवा में संलग्न रहे।

स्व. सुरजाराम छींपा: राज्य पुलिस में उप अधीक्षक पद पर रहे।

राजेन्द्र सिंह यादव: रेलवे पुलिस फोर्स में डिप्टी कमांडेंट पद से सेवानिवृत होकर गांव का गौरव बढ़ाया।

डॉ. रविशंकर यादव शिमला हिमाचल प्रदेश में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। जबकि डॉ. जगदीश सिंह यादव सेवानिवृत हो चुके हैं। डॉ. लक्ष्मीनारायण वर्मा बीकानेर में सेवारत हैं, जबकि डॉ. अरविंद शर्मा एसएमएस अस्पताल, जयपुर में कार्यरत हैं। डॉ. अंचला रामावत ऋषिकेश के एम्स हॉस्पिटल में पी. जी. कर रही है जबकि

पृष्ठ २९ से... डॉ. राजाबाबु रामावत दिल्ली के एम्स हॉस्पिटल में कार्यरत है। डॉ. मुकुल यादव, डॉ. मोनिका यादव, डॉ. कोमल यादव अपने अलग-अलग क्षेत्रों में कार्यरत रहते हुए गांव का गौरव बढ़ा रहे जबकि गायत्री खेरिवाल, कांता मेघवाल, दिनेश भार्गव आदि बीसों होनहार छात्र एमी.बी.बी.ए के फाइनल में प्रवेश ले चुके है। उदयरामसर के स्व. मनसुखदासजी स्वामी प्रचण्ड एवं प्रख्यात ज्योतिषी थे।

उदयरामसर के चार्टर्ड एकाउंटेंटों में अपनी प्रतिभा के जौहर देश-विदेश में दिखाकर मातृभूमि का नाम रोशन कर रहे हैं। शुभकरण सिपानी कलकत्ता में, विजय सिपानी दिल्ली में, श्याम सिपानी गुवाहाटी में, संजय सिपानी आसाम में, गोपीकिशन शर्मा मुम्बई में, प्रदीप सिपानी इण्डोनेशिया में तथा गांव के सर्वप्रथम सी.ए. किशनदास लखोटिया कलकत्ता में कार्यरत हैं। यहां के गौरव बोथरा नलबाड़ी आसाम में मजिस्ट्रेट के पद पर 'उदयरामसर' का गौरव बढ़ा रहे हैं। शेरसिंह यादव जेलर के सम्मानित पद से सेबानिवृत हुए हैं। उदयरामसर के पुरोधा व्यवसायी रिद्धकरण सिपानी जो अखिल भारतीय साधुमार्गी सभा के अध्यक्ष रहे हैं, ने कार निर्माण क्षेत्र तक पहुंचने की भी कोशिश की। शिक्षा क क्षेत्र में प्रभुदयाल शर्मा राज्यस्तरीय पुरस्कार से सम्मानित सेवानिवृत उपनिदेशक हैं, इसी प्रकार गौरीशंकर शर्मा टेक्निकल एजुकेशन, जोधपुर के निदेशक पद से सेवानिवृत हुए हैं।

'उदयरामसर' में पुलिस उपनिरीक्षकों की संख्या अधिक है। इसके अतिरिक्त अध्यापकों तथा अन्य सेवारत कर्मचारियों की अनगिनत संख्या है। 'उदयरामसर' की महिला प्रतिभाएं भी अपने क्षेत्र में प्रतिभा का परचम लहरा रही हैं। यहां की **श्रीमती शारदा** महात्मा ने 'उदयरामसर' में प्रथम औद्योगिक इकाई की स्थापना कर कूलर, टाटे, अलमारी एवं स्टील फर्नीचर बनाने का कारोबार विगत वर्ष प्रारम्भ किया है, शारदा जनरल इण्डस्ट्रीज 'उदयरामसर' की पहली औद्योगिक इकाई है। उदयरामसर के ही **भवानीशंकर बागड़ी** चित्रकला प्रतियोगिता में दुमका बिहार में जिला स्तरीय प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। 1999 में दसवीं की परीक्षा में गांव में प्रथम स्थान प्राप्त किया। **दुर्गादत्त पुरोहित** सूरत में केमिकल तथा एडवरटाइजिंग का उद्योग संचालित करते हैं। जिनका गांव के विकास कार्यों में योगदान है एवं गांव में मंदिरों का जिणोद्धार करवाकर धार्मिक भावना को जागृत किया है। उदयरामसर को सुशोभित करना वालों में **पप्पु सिंह यादव** जो एसबीआई में उपप्रबंधक पद पर स्थापित है जिन्हें वित्तीय प्रबंधन में एसबीआई की तरफ कई सम्मान प्राप्त हो चुके है।

श्री बृजलाल यादव ने सुभाषचंद्र बोस द्वारा गठित आजाद हिंद फौज में कार्य करते हुए देश सेवा का जज्बा दिखाया।

महेन्द्र सिंह यादव: पुत्र रामचन्द्र सिंह ने कारगिल युद्ध में सफलता पूर्वक मोर्चा संभाला और देश सेवा का जज्बा दिखाया।

श्री कृष्ण यादव: १९७१ के भारत - पाक युद्ध में अपनी वीरता के जौहर दिखाते हुए अपनी टाँग गँवा चुके हैं।

धार्मिक क्षेत्र की प्रतिभा

स्व. गोपा देवी मल्ल (धर्मपत्नी स्व. हरिकिसन दास जी मल्ल): ने अपना सम्पूर्ण जीवन गाँव के लोगों की नाड़ी देखकर तथा उन्हें औषधी देकर गाँव की सेवा में समर्पण किया। आपने जीवन काल में कई धार्मिक यज्ञ करवाये तथा चन्द्रायण जैसा कठोर तपस्या का व्रत भी किया।

श्री नारायण दास स्वामी (पुत्र स्व. लूण करण): साधू बन कर अपना सम्पूर्ण जीवन भगवत भजन में लगाया।

श्री संतोष सिपानी: वर्तमान में साध्वी भावना जी के नाम से जैन धर्म की ज्योत जगा रही है। साध्वीश्री जी पूर्व संसारिक जीवन में श्री कुन्दन मल जी सिपाना की पुत्री हैं। आज नानालाल जी के २२ संप्रदाय के तहत जन कल्याण हेतु समर्पित हैं।

स्व. सीता देवी सिपानी (श्रीमती स्व. दीपचन्द जी सिपानी): सम्पूर्ण कुटुम्ब के अनुरोध को नकारते हुए संथारे का पचकान किया एवं दीर्घ २५ दिन तक निभाते हुए मोक्ष को प्राप्त हुई जो जैन समाज का गौरव है। उनकी बैकुन्ठी इसी कोलकाता शहर में निकाली गई थी, जो एक नजीर बनी हुई है।

उदयरामसर के अमर शहीद

राष्ट्र की सेवा में यों तो पूरा राष्ट्र है, लेकिन राजस्थान के योगदान का भी देश सेवा में बड़ा गौरवशाली इतिहास रहा है। राजस्थान में बीकानेर नगर का 'उदयरामसर' भी इस योगदान में पीछे नहीं है। देश सेवा के हर क्षेत्र में उदयरामसर के सपूतों ने अपने गाँव का नाम रोशन किया। यहाँ के रणबाँकुरे बीकानेर रियासत काल से ही अपनी मातृभूमि के ऋण से उऋण होने के लिए शहादत में आगे रहे हैं। ये अमर शहीद हैं-

श्री निर्मल सिंह यादव: (उपनिरीक्षक) पद पर कार्य करते हुए शहीद हुए।

श्री पेमाराम कुम्हार: पुलिस सेवा में रहते हुए आतंकवादियों की मुठभेड़ में शहीद हुए।

श्री गजराज सिंह: पुत्र श्री गणेश सिंह ने कश्मीर में देश रक्षार्थ अपने प्राण न्यौछावर किए।

जगदीश सिंह यादव - राजस्थान पुलिस कांस्टेबल पद पर कार्य करते हुए अपराधियों की धरपकड़ के दौरान शहीद हुए।

राजनीतिक क्षमताओं से युक्त उदयरामसर

उदयरामसर भारत की राजनीतिक हस्तियों का गवाह रहा है, वहीं सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक दिग्दर्शन का प्रतीक भी है। यहां के डॉ. करणसिंह यादव कांग्रेस से अलवर से सांसद तथा राज्य विधानसभा के सदस्य रहे, जिन्हें मंत्री स्तर का दर्जा रहा है। यहां के स्व. श्री महावीर सिंह यादव, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विभाग कार्यवाह रहे, जबकि शिक्षा विभाग पद पर उप निर्देशक रहते हुए स्व. प्रभुदयाल शर्मा संघ के विभाग कार्यवाहक रहे और स्व. अगरसिंह यादव शिक्षा विभाग में प्रिंसिपल रहे और आर.एस.एस. के जिला कार्यवाहक रहे, जिन्होंने आदर्श विद्या मंदिर के लिए ५ बीघा जमीन दान की।

एडवोकेट श्री नरेन्द्रसिंह यादव जनता दल के प्रदेश पदाधिकारी रहे, जिन्होंने श्री माधोपुर से विधायक का चुनाव लड़ा था।

इसी माटी में जन्मे बनवारीलाल शर्मा कुशल संघटक की क्षमताओं के साथ भारतीय जनता पार्टी में तीन सत्र तक जिला महामंत्री तथा जिला उपाध्यक्ष को पद पर रहे, जिन्होंने भारत के प्रधानमंत्री रहे स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के १९८२ में 'उदयरामसर' की धरती पर लाकर जनसभा करवाई, जिन्होंने पार्टी के शीर्षस्थ नेताओं में मुख्यमंत्री व महामहिम उपराष्ट्रपति तक पहुंचे।

स्व. श्री भैरोंसिंह शेखावत उपमुख्यमंत्री रहे हरिशंकर भाभड़ा, भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष व मंत्री रहे स्व. ललित किशोर चतुर्वेदी, घनश्याम तिवाड़ी, रघुवीरसिंह कौशल, श्री माणिकचन्द सुराणा, सांसद स्व. महेन्द्रसिंह भाटी, देवीसिंह भाटी, सिने अभिनेता सांसद धर्मेन्द्र, सनी देओल की सभा इसी धरती पर लाकर करवाई और जनता से रूबरू करवाया और अपनी राजनीतिक क्षमताओं का प्रदर्शन कर अपना स्थान बनाया। मुख्यमंत्री रहे स्व. मोहनलाल सुखाड़िया, स्व. हरिदेव जोशी, वर्तमान मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, पूर्व सांसद श्री रामेश्वर डूडी, श्री बलराम जाखड़, पूर्व विधायक श्रीमती कान्तता खतूरिया, श्री बी.डी. कल्ला आदि अनेक नेता भी यहां की धरती पर आकर सभाएं कर चुके हैं।

'उदयरामसर' राजस्थान की राजनीति में एक अहमियत रखता है, यहां की विलक्षण व्यवस्थाएं राजनीतिक पृष्ठभूमि की उर्बरता की परिचायक है।

उदयरामसर के सामाजिक भवन

यादव भवन - शिव-मन्दिर के पास गाँव के मध्य में स्थित यादव समाज का यह भवन बहुत महत्त्वपूर्ण है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति के कृत संकल्प से निर्मित यह भवन बारात इत्यादि के लिये सुगम एवं आरामदायक है।

माहेश्वरी भवन - उदयरामसर गाँव में माहेश्वरी समाज के संगठित प्रयास से निर्मित माहेश्वरी भवन गाँव के सामाजिक कार्यों व अन्य आयोजनों को समायोजित करने में पूर्ण सक्षम है। इसका संचालन माहेश्वरी समाज के द्वारा होता है। भवन में सभी तरह की सुविधाएं उपलब्ध हैं। यह भवन गाँव के केन्द्र स्थल पर प्रतिष्ठित है, जो कि गाँव का आकर्षण केन्द्र भी है।

समता भवन - उदयरामसर की श्रीवृद्धि में सिपानी परिवारों का भी पूर्ण सहयोग रहा है। उसी प्रयास की कड़ी है- समता भवन। इस भवन में सब तरह की आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। यह भवन भी अपने आप में समाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों हेतु उपलब्ध है।

माहेश्वरी भवन

यादव भवन

समता भवन

उदयरामसर री काँकड़

उदयरामसर री काँकड़ ने,
लुल लुल धोक लगावाँ जी।
जल्म गौम री माटी सूं,
माथे पे तीलक लगावाँ जी।
काँकड़ उपर गणपत जी
रिद्ध सिद्ध रा दातारी जी।
नोखा रोड में करणी माता
सादा काबा वाली जी।।
मात गवरजा गर्व गाँव रा,
मेलो हर वर्ष भरावां जी।
जल्म भौम री माटी सूं.....
रण बाँकड़ा उदयसिंह जी
ध्वजा अठे फहराय गया।
समर्पित बीकाणा सिपाही
उदयरामसर गाँव बसाय गया।
वीर सपूत री यादाँ ने,
धरोहर म्हे बणांवा जी।
जल्म भौम री माटी सूं....
दादा गुरू री कर्म भुमीआ
जैन तीर्थ कहलावे जी।
डाँडी बाबे री तपोभुमीआ
पुण्य भुमी कहावे जी।।
चन्दन सी खुशबू माटी में,
माटी देह लीपटावां जी
जल्म भौम री माटी सूं.....
रामसुख दास जी रूक्या अठे
ई भूमि ने चमकाई जी।
नाना गुरूवर करयो चौमासो
आ तुभी धणी मन भाई जी।।
संत समागम इ माटी पे,
धर्म ध्वजा फहरावां जी
जल्म भौम री माटी सूं.....
झीणी मटकी उदयरामसर री
देशी फ्रीज कहावे जी।
अमृत जेड़ो पाणी अठेरो
आसोपा धोरो सुहावे जी।
दूर हजारों कोसाँ भी,
इ भुमी ने नहीं भुलावा जी
जल्म भौम री माटी सूं...
ग्वाड़ बी चाले हनुमन्त मन्दिर
गाँव रा रक्षा कारी जी।
राधेश्याम जी मधुरवाणी मूं
मायरे री कथा सुणाई जी।।
मातृभूमी री इ मीटी पर लीट,
लीट आणन्द पावांजी
जल्म भौम री माटी सूं.....
काका ताऊ रो सम्बोधन
सिपाणी हर मूढे मीलसी
मंदिर उपासरे आँगणिये में
भेदाभेद नहीं मिलसी।।
इक दूजे ने देख देख,
म्हे मनड़े हरख मनावांजी
जल्म भौम री माटी सूं.....
इ कांकड़ रा वीर सिपाही
सीमावां पर जूझ गया।
इन्जिनियर बिण देश सेवा
डाक्टर बिण इलाज किया
इ कांकड री उपस्थिति,
आखे भारत में पाबाजी
जल्म भौम री माटी सूं.....

-नेमीचन्द सिपानी
कोलकाता

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मिलवर्तन का मिसाल जन-जन में है भाईचारा राजस्थान की गोद में राजस्थान की शान 'उदयरामसर' के ऐतिहासिक प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

सती दादी मंदिर

Bimal Sipani
भ्रमणध्वनि : 7576873930
Bikaner Radio Centre
Deals in:- Electricals & Electronics
Janiganj Bazar,Silchar,
Cachar, Assam, Bharat 788001

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

हिंदी भाषा जहाँ है
हमारी स्वतंत्रता वहाँ है

बीकानेर सो शहर कठे

-नरेन्द्र सिपानी

क्यूँ परदेसा जावे भाई,
क्यूँ भटके है अठे-बठे।
सारी दुनिया घूम ले चाहे,
बीकानेर शहर सो शहर कठे।
इण माटी में जन्म लियो,
आ तकदीरां री बात है।
किस्मत सुं ही लोगां ने,
मिल पावे आ सौगात है।

सुख शांति रो ओ जीवन,
नहीं मिलेला और कठे।
सारी दुनिया घूम ले चाहे,
'बीकानेर' शहर सो शहर कठे।
घणो कमाणे रे चक्कर मे,
क्यूँ बावळो होवे है।
क्यूँ दौलत री भूख में,
थारे मन रो चैन खोवे है।
जो आनंद बीकानेर शहर में है,
नहीं मिलेला और कठे।
सारी दुनिया घूम ले चाहे,
बीकानेर शहर सो शहर कठे।
खेत हुवे तो खेती करजे,
या कर लीजे नौकरी।

चाहे तो व्यापार करीजे,
ध्यान राखसी थारी 'माँ' अठे
दुःख भी नेड़ो नही आवे,
मन में हो संतोष जठे।
सारी दुनिया घूम ले चाहे,
बीकानेर शहर सो शहर कठे।
बाळपणे रा साथीड़ा भी,
तने अठे ही मिल जासी।
हंसी मजाक, ज्ञान री बातां,
सारो स्वाद अठे आसी।
शहर सामी कर ले मुंडो,
मत ना फोड़ा पाय बठे।
सारी दुनिया घूम ले चाहे,
बीकानेर शहर सो शहर कठे।

रुखो सुखो खाकर भी तूँ,
अठे स्वस्थ रह पावेला।
बड़ा शहर है बिमारी रा घर,
रोज दवाई खावेला।
सुख सुं जीणो चावे तो,
पाछो आ अठे।
सारी दुनिया घूम ले चाहे,
बीकानेर शहर सो शहर कठे।

द प्रिंस हवेली बीकानेर

स्व. सेठ श्री प्रेमचन्द जी सिपाणी

स्व. सेठ श्री किसनलाल जी सिपाणी

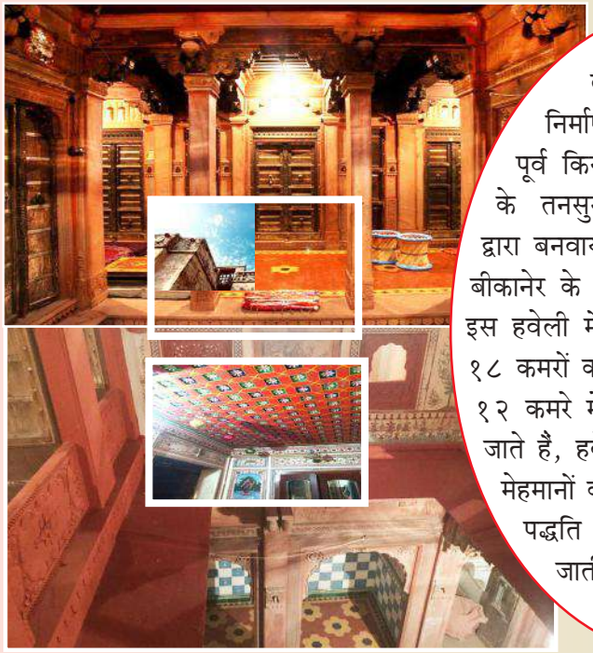

द प्रिंस हवेली का निर्माण लगभग १५० वर्ष पूर्व किया गया, यहाँ उदयरामसर के तनसुख दास सुगनचंद सिपानी द्वारा बनवायी गयी थी, आज यह हवेली बीकानेर के प्रमुख हवेलियों में से एक है, इस हवेली में कुल २२ कमरे हैं जिसमें से १८ कमरों का ही उपयोग होता है, इनमें से १२ कमरे मेहमानों को रहने के लिए दिए जाते हैं, हवेली पूरी तरह ऐतिहासिक है, मेहमानों को भी पूरी तरह से पारंपरिक पद्धति से ही सुविधाएं प्रदान की जाती है।

!! जय नाना गुरु !! पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा !! जय श्री राम !!

मिलवर्तन का मिसाल जन-जन में है भाईचारा राजस्थान की गोद में
राजस्थान की शान 'उदयरामसर' के ऐतिहासिक प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

स्व. अमर चन्द जी सिपानी

Vikas Sipani

Goutam Sipani

Vimal Sipani Mob. : 9674663799
Vikas Sipani Mob. : 8697905244
Goutam Sipani Mob. : 9748170236

RAJLAXMI & COMPANY
(Wholeseller of Dress Materials)

Hazi Market, 1st Floor, Shop No.C/139,
(Entrance From Gate No. 2)
Bankra, Howrah, West Bengal, Bharat - 711 413
e-mail : goutam97481@gmail.com

नीम लगायें पर्यावरण बचाये भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

देश सेवक, उद्योगपतियों की भूमि राजस्थान का
'उदयरामसर' इतिहास के प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Ashkaran Manoj Sipani

Sipani Impex

Mfg. Textruriser - Knitter - Garmenter

A-5, Pritish Complex, Dapoda Road,
Opp. Reliance Godown, Village Val,
Taluka- Bhiwandi, Thane, Maharashtra, Bharat - 421 302.

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

मिलवर्तन का मिसाल जन-जन में है
भाईचारा राजस्थान की गोद में
राजस्थान की शान 'उदयरामसर' के
ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Gauri Shankar Sharma
Mob.: 9826093335
Karan Sharma
Mob.: 9111118511 / 9993705666

PACKAGING SOLUTIONS

Manufacturing : Stretch film, PP Strap & HM/LD/LLDPE Bag, Sheet & Tube
Dealing in all Kind of Packaging Items, Machines, Spare Parts & Services

202, Gold Petals, 16/2, South Tukoganj, Nr. Sahaj Hospital,
Indore, Madhya Pradesh, Bharat - 452 001
e-mail : packsolutions1996@gmail.com

उदयरामसर प्रवासी संघ कोलकाता का संक्षिप्त परिचय

हनुमत कथा 'उदयरामसर' में उपर श्री किशन जी मल्ल, रिधकरन जी सिपानी नेमीचन्द सिपानी नीचे कथा श्रवण करते हूए नेमीचन्द सिपानी तथा अन्य

कोलकाता में 'उदयरामसर' प्रवासी भाइयों द्वारा उदयरामसर प्रवासी संघ के नाम से एक संस्था स्थापित की हुई है। इस संस्था के संस्थापक सदस्य स्व.रामकिशन जी मल्ल, स्व. रतनलाल जी लखोटिया रहे हैं। यह संस्था कोलकाता में तथा उदयरामसर में समय-समय पर मिलन महोत्सव आयोजन करती रही है। 'होली' के अवसर पर कोलकाता में प्रवासित सभी परिवार प्रीती सम्मेलन में भाग लेते हैं। रंगारंग कार्यक्रम में बच्चे युवक, बुढ़े सभी बढ़-चढ़ कर हिस्सेदारी निभाते हैं। हर वर्ष किसी एक विशिष्टजन का अभिनन्दन किया जाता है। इस कड़ी में स्व. श्री आत्माराम जी सुदामा का अभिनन्दन किया जा चुका है। श्री करणी सिंह जी यादव का तथा अभी पिछले दिनों श्री मनमोहन सिंहजी का अभिनन्दन भी किया जा चुका है। फिलहाल श्री किशन जी मल्ल तथा श्री किशनजी लखोटिया के मार्ग दर्शन में संस्था के कार्यक्रम संचालित होते रहते हैं। कार्यक्रमों का संयोजन नेमीचंद सिपानी तथा रमेश कुमार बागड़ी करते हैं। वर्तमान में संस्था के अध्यक्ष बसंत कुमार मल्ल हैं। संस्था के कार्यक्रमों में विशेष सहयोग श्री मनमोहन जी मल्ल का रहता है, जो कार्यक्रमों में विशेष रूची दिखाते हैं तथा हावड़ा जूट मील, क्लब हाऊस कार्यक्रम करने हेतु निशुल्क उपलब्ध करवाते है, साथ ही स्टेज आदि का खर्च़ भी स्वयं वहन करते हैं।

संस्था ने उदयरामसर में श्रद्धेय श्री राधाकिशन जी महाराज द्वारा 'नानीबाई रो मायरो' का तथा प्रदीप भैया जी द्वारा तीन दिवसीय हनुमन्त कथा का आयोजन किया है, जिसमें भारत वर्ष के सभी प्रवासी भाइयों ने भाग लिया था। सांसद अर्जुन राम जी मेघवाल कोलकाता पधारे थे तब इस संस्था की और से श्री किशनजी मल्ल, श्री किशन जी लाखोटिया, मनमोहन जी मल्ल, नेमीचंद सिपानी आदि ने मिलकर उनका अभिनन्दन किया था, रमेश बागड़ी भी साथ में थे।

उदयरामसर प्र संघ कलकता द्वारा आयोजित हीली प्रीती सम्मेलन में मनमोहन जी मलु नेमीचन्द सिपानी रमेश बागड़ी तथा अन्य

इस संस्था को श्री सागर मल्ल जी, श्री थानमल जी बोथरा, श्री हरीनारायण जी बजाज, विमलजी सिपानी, कमल बागड़ी आदि-आदि का सक्रिय सहयोग रहा है।

-नेमीचन्द सिपानी
कोलकाता

बटोहि

बटोहि थक मत जाईज्यो रे,
बटोहि थम मत जाईज्यो रे,
बटोहि चलतो ही जाईज्यो रे।
ॐमटवी आँधी आवेली, जेठॉ बलती झुलसावेली।
भतुलियो घेरे लो गेलो, बेकलू खीरा बरसावेली।
बादलिया उमड़-घुमड़ आसी, बीजूलियाँ चमक-दमक ज्यासी।
अमावस घटाटोंप गहरी, टोडियो, अटक-अटक ज्यासी।
बटोहि डर मत जाईज्यो रे।
चढ़ायाँ दोरी आवेला, बाँडया लीपट भी ज्यावेला।
नागड़ा काला विष भरिया, रास्तो रोक भी देवेला।
तीस्से रा हाल बुरा होसी, गलो सो सूख मी ज्यावेला।
पाणी रा दर्शन भी ओखा, आँखड़ल्या पथरा ज्यावेला।
हिम्मत ने छोड़ न दिज्ये रे,
बटोहि चलतों ही जाईज्ये रे।
यात्रा पूरी होवेला, मन्ज़िला जद तूँ पहूँचेला।
हरख रा बाजा बाजेला, कोड री बीरखा होवेला।
थारे सूं आश धणीभाया, नीराशा मत ना कर दिज्ये।
मंज्जिला पहूँच्या ही सरसी, उदाणे रो मान राख दिज्ये।
जीत रा बाजा से त्यारी
पहूँच कर ज़ोर बजाईज्ये रे
बटोहि थम मत जाईज्ये रे
बटोहि चलतो ही जाईज्ये रे

रचना-नेमीचन्द सिपानी
कोलकाता

उदयरामसर के 'गंगासिंहजी'
कुलश्रेष्ठ श्रावकरत्न -सेठ श्री घेवरचन्दजी सिपानी

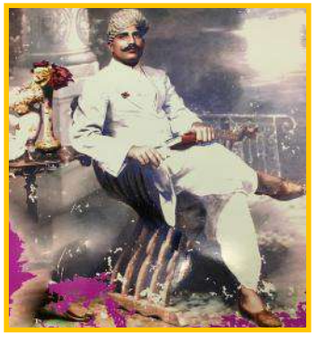

सिपानी कुल उदयरामसर के इतिहास का अभिन्न अंग है। इसी कुल के दीपक के रूप में सेठ श्री घेवरचन्दजी सिपानी को सदैव याद किया जाएगा।

आप सुश्रावक सत्यनिष्ठ, कठोर ब्रह्मचर्य के पालक सिद्धान्त पुरूष सेठ श्री माणकचन्दजी सिपानी एवं धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती रूपादेवी की संतान थे।

आपका जन्म संवत् १९६३ फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा को उदयरामसर (बीकानेर) गाँव में हुआ। आपका विवाह गंगाशहर निवासी श्री तनसुखदासजी बोथरा की सुपुत्री श्रीमती जिया देवी से हुआ। आप कम उम्र में ही व्यापार हेतु कलकत्ता शहर चले गए, वहाँ आपकी गिनती व्यापारकुशला के कारण प्रमुख व्यापारियों में होने लगी। आपकी हावड़ा में एक बड़ी स्लेट फैक्टरी थी। आपका आयात का काफी बड़ा व्यापार था। आपका व्यापार, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैण्ड, जापान आदि देशों से होता था। स्वतंत्र संग्राम के स्वदेशी आंदोलन से प्रेरित होकर लाखों का विदेशी माल छोड़कर आप वापस 'उदयरामसर' आकर बस गए। आपका सत्यनिष्ठ आचरण, निडर स्वभाव, रूबाबदार आचरण गाँव के हर व्यक्ति के लिए प्रेरणा का श्रोत था। आपकी इसी छवि के कारण आपको गाँव का निर्विरोध प्रथम सरपंच बनाया गया। आपने अपने कार्यकाल में प्रमुख रूप से पानी की कमी की समस्या को दूर करने के लिए गाँव में सार्वजनिक कुआँ प्रारंभ करवाया, जिसके कारण वहाँ के वासियों को पानी के लिए दूर-दूर नहीं जाना पड़ा। आपने अपने प्रगतिशील सोच एवं दूरदर्शिता का परिचय देते हुए करीब ७५ साल पहले गांव में बिजली लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आप गाँव में सर्वप्रथम कार लाए, जिसका उपयोग हर गांववासी जरूरत पड़ने पर शहर जाने के लिए बेझिझक कर सकते थे। आपके द्वारा किए गए प्रगतीशील कार्यों के कारण आपको गाँववासी 'उदयरामसर' के 'गंगासिंहजी' भी कहने लगे थे। आपने बाद में मद्रास शहर में व्यापार किया और नये आयाम बनाए। आज भी गाँव के बुजुर्ग आपको प्रेम और श्रद्धा से याद करते हैं। आपने अपने जीवनकाल में आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. आचार्य श्री गणेशीलालजी म. सा., आचार्य श्री नानालालजी म.सा., की सेवा का भरपूर लाभ लिया। आपको आचार्य श्रीमद सेठजी नाम से संबोधित करते थे। आपके घर में अपनी खुद का पुस्तकालय था, जिसमें दुर्लभ ग्रंथ थे, जिसका समय-समय पर अनेक गुरूजनों ने उपयोग किया। आपको धर्म का खूब ज्ञान था।

जब बीकानेर में टिड्डी का भयंकर आक्रमण हुआ और सरकार ने हर परिवार को इन्हें मारने में भागीदारी आवश्यक कर दी तब आपने न्यायालय से जैन समाज को अहिंसा की दुहाई देते हुए इससे छुट दिलवाई। आपने जवाहर विद्यापीठ में भी सहयोग दिया। आपने जवाहर किरणावली के एक अंक में आर्थिक मदद देकर छपवाया था। आपने अपने व्यक्तित्व से हमेशा 'उदयरामसर' गांव का नाम रोशन किया। आप अपने कार्यों से 'उदयरामसर' गांववासियों के दिल में हमेशा के लिए अमर रहेंगे।

उदयरामसर के भामाशाह, दानवीर व उत्कृष्ठ व्यक्तित्व के धनी श्री मंगलचन्दजी सिपानी

उदयरामसर/चैन्नईः सुश्रावक श्री मंगलचंदजी सिपानी का जन्म राजस्थान के बीकानेर जिले के दक्षिण में १० किमी दूर स्थित छोटे से गाँव 'उदयरामसर' में प्रतिष्ठित सुश्रावक श्री घेवरचन्दजी के घर-आँगन में मातुश्री जीयादेवी की रत्नकुक्षी से १२ दिसम्बर १९३७ को हुआ। माता-पिता से विरासत में प्राप्त संस्कारों के खजाने के कारण आप आगे चलकर ख्यातिलब्ध हुए। गाँव छोटा होने के कारण गाँव में प्रारम्भिक शिक्षा तक का ही विद्यालय था, इसलिए आपने उच्च शिक्षा बीकानेर व कोलकत्ता में प्राप्त की। आपका शुभविवाह बीकानेर के सुप्रसिद्ध सेठ श्री भैरुदानजी नाहटा की सुपुत्री व जैन विद्वान श्री भंवरलालजी, श्री हरकचन्दजी नाहटा की बहन श्रीमती पाँचादेवी के साथ सन् १९५३ में हुआ। श्रीमती पाँचादेवी ने धर्मपत्नी पद को सार्थक करते हुए समस्त परिवार को आदर्श सुसंस्कार प्रदान किये। आपके तीन सुपुत्र श्री प्रेमचन्दजी, विजयचन्दजी व अशोककुमार जी तथा चार सुपुत्रियाँ श्रीमती गुलाबदेवी गोलछा, श्रीमती सरला बैद, श्रीमती राजकुमारी बिनायक्या व श्रीमती कल्पना मेहता आपकी कुल परम्परा को गौरवान्वित कर रही हैं। आपके पूज्य पिताजी सेठ घेवरचन्दजी ने आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा., आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा., आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के दर्शन प्रवचन व सेवा का खूब लाभ लिया। आप संघ स्तम्भ, श्रद्धानिष्ठ अग्रगण्य सुश्रावक थे। कोलकाता में आपका स्लेट फैक्ट्री व आयात का बहुत बड़ा व्यापार था। बाद में आपने बीकानेर शहर में भी व्यवसाय को बढ़ाया।

स्वनामधन्य श्री मंगलचन्दजी ने २३ वर्ष की अल्पायु में चैन्नई जाकर व्यवसाय प्रारम्भ किया व अपनी प्रतिभा, नैतिकता के बल पर व्यापार को नया आयाम प्रदान किया। आपने अर्थ के प्रति सदैव उदार भाव रखा और हर शुभ कार्य के लिए मुक्तहस्त से दान दिया। आप आचार्य श्री नानेश व आचार्य श्री रामेश गुरूवर के परमभक्त व उपासक रहे। आपका परिवार व समाज में संस्कारों के प्रेरक स्रोत हैं। आपने आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. से भक्ति ग्रहण की तथा दर्शन-प्रवचन व सेवा का लाभ लिया। समताविभूति आचार्य श्री नानेश व तत्कालीन युवाचार्य श्री रामलालजी म.सा. के 'उदयरामसर' 'चातुर्मास में व उससे पूर्व भी आपने सेवा-दर्शन-प्रवचन का लाभ लिया। आपके 'उदयरामसर' निवास पर साहित्य व ग्रंथों को पुस्तकालय होने से आचार्य-प्रवर व युवाचार्य-प्रवर ने उपलब्ध ग्रन्थों का अवलोकन किया था।

चैन्नई में आपके अर्थ सहयोग से आँखों का कैम्प, धार्मिक शिक्षण शिबिर आदि अनेक सेवा प्रकल्प सम्पन्न हुए। आपने अनेक स्कूलों व छात्रावासों में प्रभूत सहयोग प्रदान किया, साथ ही आपने संघ के प्रमुख स्तम्भ होने का परिचय देते हुए संघ की प्रत्येक प्रवृत्ति में मुक्तहस्त से सहयोग दिया। स्थानिय चैन्नई श्रीसंघ को समय-समय पर आपका अर्थ सहयोग मिलता रहा। आपके तीनों पुत्र-पुत्रवधुएँ,६ पौत्र-१पौत्री, ३ पड़पौत्र-३ पड़पौत्री आपके पद्चिन्हों पर अग्रसर होकर जिनशासन का गौरव बढ़ा रहे हैं। वर्तमान में भी आपके परिवार में आपके ही दान, गुरू समर्पणा, आस्था एवं निष्ठा के गुण मौजद हैं। आप 'अतिथि देवो भवः' की संस्कृति में विश्वास रखने वाले सुश्रावक रहे। आपका परिवार इसी तरह संघ व समाज की सेवा करता रहे, यही शुभभावना 'मेरा राजस्थान' परिवार करता है।

उदयरामसर

धर्म के लिए समर्पित कर्मठ व्यक्तित्व

बैंगलुरू

शासननिष्ठ, जिन अनुरागी, अनोखे व्यक्तित्व के धनी सेवाभावी, तपस्वी, सुसंस्कारमय जीवन बिताने वाले, श्रीमान् भेरूदानजी सिपानी की भार्या सुश्राविका, श्रीमती धन्नीदेवी की कुक्षि से वि. सं. १९८५, मिगसर सुद १५, के शुभ दिन राजस्थान प्रांत के बीकानेर जिले के 'उदयरामसर' गाँव के पुण्य धरा पर श्री सोहनलालजी का जन्म हुआ। उन्नत ललाट, आँखों में अद्भूत उत्साह की चमक, हृदय में जीवों के प्रति करूणा की भावना, असाधारण व्यक्तित्व की निशानी है, जो श्री सोहनलालजी सिपानी की अमूल्य जीवन पूंजी रही।

सोहनलाल सिपानी

श्री सिपानीजी ऐसे भाग्यशाली व्यक्ति थे, जिनका बचपन मनमोहक रहा, यौवन धर्म-ध्यान में समर्पित और प्रौढ़ जीवन में भी नवयुवाओं जैसा मन में उत्साह, तन से प्रफुल्लित व्यवहार और धन से सेवा भाव

स्वागत हर्ष-हर्ष

का अनूठा सम्मिश्रण देख सकते हैं। युवा अवस्था में प्रवेश के साथ ही आपका मंगल परिणय गंगाशहर निवासी शासननिष्ठ, धर्म परायण सुश्रावक श्री चांदमलजी डागा की सुपुत्री अखण्ड सौभाग्यवती जेठीदेवी के साथ वि. सं. २००१ में सम्पन्न हुआ। श्रीमती जेठीदेवी धर्मपत्नी शब्द को सार्थक करते हुए जीवन के हर क्षण धर्मकार्य और सेवाकार्य में सहायक रही हैं।

अपने पिताजी के व्यवसाय को चरणबद्ध तरीके से न्याय और नीति से आगे बढ़ाते हुए आपने व्यापार में दिन-दूनी और रात चौगुनी प्रगति की। वर्तमान में आपका व्यवसाय 'सिपानी ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज' के नाम से एशिया में विख्यात है।

व्यापार के साथ आपने पारिवारिक कर्त्तव्य का पालन किया है। आपके अनुज श्री गोकुलचंदजी सिपानी व श्री रिधकरणजी सिपानी हैं। सुपुत्र सुंदरलालजी, राजकुमारजी, कमलजी, विमलजी हैं। बहन श्रीमती छगनीदेवी दस्साणी और मोहिनीदेवी लूणिया हैं। सुपुत्री श्रीमती सरलादेवी बेताला है। आपका परिवार पौत्र-पौत्रियों से भरा पूरा हैं।

आप अपने कर्त्तव्य के प्रति हमेशा सजग रहे। हुक्मगच्छ को जीवन में उतारते हुए आपने अपने जीवन के हर पल को जिनशासन एवं गुरूदेव श्री के चरणों में समर्पित किया। संघ और जिन शासन सेवा के लिए आप तत्पर रहे।

साधु संतों का विहार, उनकी सेवा सुश्रुषा में आप हमेशा आगे रहे। संत-मुनिराजों की सेवा कार्य में इतने रत हो जाते थे कि आप स्वयं भी ध्यान नहीं रखते थे।

आप हमेशा कहा करते थे कि जीवन तो सब जीते हैं पर जीवन का आनन्द त्याग में है, भोग में नहीं, किसी भी कार्य में सलाह देने की बजाय सहयोग देना श्रेयस्कर होता है।

दैनिक नियमों के प्रति आप सजग रहते। प्रतिदिन ५ सामायिक ५ बार खाने के लिए मुँह खोलना, ब्रह्मचर्य व्रत के सजोड़े प्रत्याख्यान, प्रतिक्रमण आदि आपके नियम रहे। आप प्रतिदिन सुबह ९.०० बजे तक मौन रखते थे। आपका जीवन तप-त्याग से परिपूर्ण रहा।

बैंगलोर के उपनगर कोरमंगला स्थित सिपानी भवन में विगत कई वर्षों से प्रति रविवार सुबह ८ बजे से ९ तक नवकार मंत्र के सामूहिक जाप, प्रार्थना का कार्यक्रम सामायिक आदि में श्रावक-श्राविकाएं सम्मिलित होते थे।

'दाता वही है जो दे खुशी से और ना कहे किसी से'

इसी उक्ति को आपने स्वयं के जीवन में चरितार्थ किया। आपके द्वार पर जो भी आता, उन्हें आप मुक्त हस्त से दान देते, आपके द्वार हमेशा दान के लिए खुले रहते, पुण्य की इस श्रृंखला में आपके दान की कीर्ति भारत के कोने-कोने तक फैली थी। दान-शील-तप-भाव से आप हमेशा भावित रहते हैं, आप कई संस्थाओं के महत्वपूर्ण पदों पर आसीन थे...

- श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर के ट्रस्टी
- श्री साधुमार्गी जैन संघ, बेंगलोर के अध्यक्ष
- श्री एस. एस. जैन संघ, विल्सन गार्डन के अध्यक्ष
- श्री सुरेन्द्रकुमार सांड शिक्षा सोसायटी, अध्यक्ष बीकानेर
- श्री बीकानेर जैन समुदाय, बेंगलोर के अध्यक्ष।

धर्म प्रवक्ता

- ऐसी और कई अन्य संघ संस्थाओं के पदों को आपने विभूषित किया। पद और नाम की आकांक्षा से रहित आप अपने कर्तव्य पालन में हमेशा अग्रणी रहे। आप हमेशा कहा करते थे कि जितना हम अधिकार के लिए हक जताते हैं यदि उतना ही हम कर्तव्य के प्रति समर्पित हो जावें तो हमारे समाज का उत्थान और चहुंमुखी विकास सम्भव हो सकता है, जैसे गीता में कहा गया है 'कर्म कर पर फल की इच्छा मत कर' कर्म करना ही आपका ध्येय रहा।

जीवन के प्रत्येक क्षण को आप पुरुषार्थ के माध्यम से सार्थक **शेष पृष्ठ ३७ पर...**

पृष्ठ ३६ से... करते हुए अपने जीवन को भावित करते रहे। आप हमेशा पुरुषार्थ में ही विश्वास रखते थे। पुरुषार्थ के बल पर ही आपके व्यक्तित्व का विकास किया। जीवन जीने की कला को आपने पुरुषार्थ के साथ जोड़ा। प्रत्येक क्षण को आपने सरलता से जीया। क्रोध के भाप में आप कभी नहीं बहे। आचार्य श्री रामेश की सेवा में आप हमेशा तत्पर रहे। आप कहा करते थे कि यदि गुरु के प्रति समर्पण व उनके सिद्धांतों को जीवन में अपनाना चाहिए ताकि उनका ज्यादा से ज्यादा प्रचार-प्रसार हो सके, ऐसा यदि करते हैं तो यही हमारे आराध्य गुरु के प्रति भक्ति, प्रभु महावीर और जिनशासन के प्रति समर्पण का भाव होगा।

सिपानी हवेली

आपकी साहित्य के प्रति भी गहरी रूचि रही। धार्मिक, सामाजिक एवम अनेक विषयों पर आपके यहाँ बहुत विशाल साहित्य का ग्रन्थालय है, जो 'सिपानी ग्रंथालय' के नाम से जाना जाता है। इस ग्रंथालय में हर धर्म, हर सम्प्रदाय, हर विषय की नई और पुरानी पुस्तकें यथासंभव उपलब्ध हैं।

साहित्य में आपकी गहरी रुचि रही। आपकी इसी रुचि के कारण आचार्य श्री नानेश द्वारा दिये गये प्रवचनों को क्रमबद्ध, नानेश वाणी नाम से ४१ पुस्तकों का एक सेट प्रकाशित हुआ, अब ये ४१ से बढ़कर ४८ पुस्तकों का सेट हो गया है। आपके मन में एक तमन्ना थी कि आचार्य भगवंत का साहित्य घर-घर में हो, जन साधारण सत्साहित्य का स्वाध्याय करें। अतः आपने पुस्तक प्रकाशन के कार्य का बीड़ा उठाया और साहित्य प्रकाशन के अर्थ सहयोगी की एक कतार खड़ी कर दी। जन-जन तक साहित्य आसानी से सुलभ हो इसके लिए भी दानदाता तैयार कर नानेश वाणी अर्द्ध मूल्य पर वितरण कराने की योजना बनाई। आप द्वारा सिपानी भवन में एक फ्री आयुर्वेदिक औषधालय कार्यरत रहा।

अनेक धार्मिक संस्थाओं, सामाजिक संगठनों, जैन और अन्य समाज ने समय-समय पर आपका आभार प्रकट करते हुए आपका सम्मान-अभिनन्दन कर नवाजा है।

विशेषत: बैंगलुरू आगमन और संघ में सक्रिय जुड़ने के बाद गत २० वर्षों से राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश आदि क्षेत्रों में जहाँ भी आचार्यश्री नानालालजी के चातुर्मास हुए, वहाँ गुरू दर्शन यात्रा कार्यक्रम की शुरुआत की, इससे बेंगलोर और आसपास के निवासियों को आचार्य श्रीजी एवम संत-सती वृंद के दर्शन का लाभ सहज में ही प्राप्त हुआ। श्रीमान सोहनलालजी सिपानी ने अपने गाँव 'उदयरामसर' में समता विभूति, आगम पुरुष आचार्य श्री नानालालजी म. सा. का वर्षावास भी कराया, इसी कोरमंगला के सिपानी भवन में आप द्वारा पूर्व में मरूघर सिंहनी, महाश्रमणीरत्ना श्री नानुकंवरजी म. सा. का चातुर्मास बड़े उत्साह पूर्वक तप, त्याग, ज्ञान-ध्यान, व्रत-प्रत्याख्यान के साथ सम्पन्न कराया।

साधारण व्यक्ति वातावरण से बनता है, जबकि असाधारण व्यक्ति वातावरण को बनाता है, इस उक्ति पर पुण्यशील, सुश्रावक, आदरणीय, श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी पूर्णत: खरे उतरते हैं।

उदयरामसर

सरलता, विनम्रता, सादगी की प्रतिमूर्ति

बीकानेर

महाभाग्यशाली:- आपको आचार्य श्री नानेश व युवाचार्य श्री रामेश की परंपरा के अन्य उपासक, धर्मप्रेमी, संघनिष्ठ सुश्रावक स्व. श्री चांदमल जी सा. डागा गंगाशहर (बीकानेर) की सुपुत्री तथा स्व. सेठ सा. श्री भेरुदान जी सिपानी, उदयरामसर (बीकानेर) की पुत्रवधु का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आप धर्मनिष्ठ, उदारमना, संघ प्रेमी, मुक्ति से ओत-प्रोत श्रीमान सोहनलालजी जी सा. सिपानी की सहधर्मिणी है।

-श्रीमती जेठी देवी सिपानी

दोनों ही परिवारों से आपको देव, गुरू, धर्म के प्रति अदृट श्रद्धा प्राप्त हुई धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्कारों से जुड़े चार पुत्रों व एक पुत्री सहित भरा पूरा परिवार पुण्यवानी से प्राप्त हुआ है। अतः आप महाभाग्यवान हैं।

स्वाध्याय साधना की प्रेरक :- एक कुशल गृहिणी का निर्वहन करने के साथ आप अपने कुटुम्ब, स्वधर्मी भाई बहिनों को धर्म-ध्यान, स्वाध्याय, प्रार्थना की प्रेरणा देकर उन्हें मार्ग पर अग्रसर करती रहती हैं।

बैंगलोर (कोरमंगला) में प्रत्येक रविवार को आपके परिवार द्वारा प्रात: प्रार्थना-सभा का आयोजन नियमित रूप से किया जाता रहा है जिसमें सभी स्वधर्मी भाई-बहिन उपस्थित होते हैं।

गुरूभक्त, उदारमना, समाज-देवभवी:-

आप व आपका परिवार गुरू भक्ति, श्रद्धा में पूर्ण समर्पित करते हुए, धार्मिक-सामाजिक उत्थान, संघ/समिति के सहयोग, साहित्य प्रकाशन व लोकोपकारी कार्यों में उदारतापूर्वक तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करते हैं।

आप सदैव संत-सतियांजी के दर्शनार्थ एवं सेवार्थ सदा सक्रिय रहती हैं। आपकी उदारता व सेवा-भावना अनुकरणीय और प्रशंसनीय है।

अतुल धन संपदा होने के बावजूद आप सरलता, विनम्रता और सौम्यता के प्रतिमूर्ति रही हैं। आपका आत्मीय व्यवहार तथा सम्मोहक व्यक्तित्व सभी को अपनी ओर सहज आकर्षित करता है। ऐसी आदर्श, सेवाभावी, उदारमना, श्रद्धेया, सुश्राविका जो अपने परिवार को धार्मिक, सामाजिक लोकोपकार सेवा कार्यों में सहयोगी बनने की प्रेरणा प्रदान करती हैं, का अभिनंदन करते हुए 'मेरा राजस्थान' अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी स्व. श्री सुखलालजी पुजारी

विद्वत च नृपत्व च नैव तुल्य कदाचन।
स्वदेश पुज्यते नृपः विद्वान सर्वत्रपुज्यते।।

स्व. सुखलालजी (पुजारी) धर्मपरायण उच्चकोटि के ज्योतिषाचार्य, षट्दर्शन के ज्ञाता, आजीवन ब्रम्हचर्य में विचरण करने वाले सामाजिक समरसता व संगठक स्व. आयमानुष आज इस दुनिया में नहीं हैं, अपितु इनके जीवन-जीवन व संस्कारों का लाभ समूचे गांव को मिला है और मिल रहा है। ज्ञातव्य है कि 'उदयरामसर' की स्थापना के बाद ब्राह्मणों के वास में श्री सत्यनारायण मन्दिर की स्थापना हुई। उसके बाद भगवान की पूजा अर्चना हेतु श्री गंगानगर के रतनपुरा गांव के श्री आशारामजी एवं धर्मपत्नी दाखां देवी को स्थापित किया गया, जिनके पुत्र श्री सुखलालजी अपने पिता की प्रेरणा से धार्मिक कर्मकाण्ड एवं ज्योतिष, यज्ञचार्य के रूप में पूर्ण विद्वान् पण्डित कहलाये।

आपने गांव में नहीं, अपितु आसपास के शहरों में भी अपनी विधा का डंका बजाया, इसके साथ आप गांव की सेवा हेतु अपने वार्ड से पंच चुने गए। आपका कार्याकाल १३ वर्ष तक रहा, जिसकी कार्यप्रणाली को देखते हुए आपको २ वर्ष के लिए कार्यवाहक सरपंच का पदभार संभालना पड़ा। सरपंच कार्यकाल के दौरान अनेकों विकास कार्य भी करवाए तथा आगे के विकास हेतु अच्छा कोष बनाकर पंचायत को सुपुर्द किया।

बहुआयामी व्यक्तित्व स्व. श्री सुखलालजी पुजारी की सेवाएं अनुकरणीय रही हैं, जिनको सदैव याद किया जाता रहेगा।

उदयरामसर की कायाकल्प की कल्पतरू

उदयरामसर

श्रीमती सुमित्रा शर्मा

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' की उक्ति को वास्तव में चरितार्थ होते देखना चाहें तो 'उदयरामसर' की पूर्व सरपंच, विदूषी महिला एवं कुशल गृहिणी श्रीमती सुमित्रा शर्मा से बेहतर इसका कोई उदाहरण अन्यत्र देखने को नहीं मिल सकता। 'उदयरामसर' ग्राम की बहू और सरदारशहर की बेटी सुमित्रा की पारिवारिक पृष्ठ भूमि इतनी समृद्ध है कि सुसंस्कारों का इनमें कभी कोई अभाव नहीं रहा। कॉलेज शिक्षा के कार्यालय अधीक्षक श्री भँवरलाल शर्मा की पुत्री एवं प्रतिष्ठित पूर्व विधायक एडवोकेट श्री मोहनलाल माटोलिया की भतीजी तथा पति बनवारीलाल शर्मा के राजनीतिक जीवन के साथ-साथ ताऊ श्वसुर प्रतिष्ठित पण्डित श्री सुखलाल जी पुजारी, जो कि 'उदयरामसर' गाँव के कार्यवाहक सरपंच रहे की पृष्ठभूमि में पली श्री सुमित्रा ने अपने कौशल युक्त बुद्धिमता के कारण व सरपंच पद पर रहकर गाँव की काया पलट करने में बेहद कामयाब रही। 'उदयरामसर' के इतिहास में गत ४० वर्ष में जितने विकास कार्य नहीं हुए उससे अधिक कार्य पांच वर्ष की अल्पावधि में कर सुमित्रा ने साबित कर दिया कि यकीनन नारी शक्ति में दृष्टिकोण प्रधानता है।

गाँव में वर्षो से आबाद भूमि में प्रतिक्षारत् लोगों को सैकड़ो पट्टे बनाकर कीर्तिमान स्थापित किया, जिससे लाभान्वित लोगों के जीवन में स्थायित्व के साथ-साथ स्वरोजगार एवं बेहतर जीवन का मार्ग प्रशस्त हुआ है। साथ ही साथ गाँव की प्रतिभाओं को समय-समय पर सम्मान समारोह के माध्यम से सम्मानित कर प्रतिभाओं को ओर आगे बढ़ने के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

'उदयरामसर' में दो ट्यूबवैल, सैकेण्डरी स्कूल में पुस्तकालय निर्माण, रंगमंच निर्माण, विद्युत शिकायत केन्द्र भवन निर्माण, पंचायत भवन हॉल निर्माण, ग्राम सेवक आवास, सैकेण्डरी स्कूल में चार कक्ष, छात्रा विद्यालय में शौचालय, अम्बेडकर भवन विस्तार निर्माण, डाकघर में भण्डार निर्माण, पक्का तालाब निर्माण, सैकेण्डरी स्कूल की मरम्मत, प्राथमिक विद्यालय की मरम्मत, जल निकासी के तहत हर मौहल्ले में नालियों व पुलियों का निर्माण तो ऐसी बानगियां है, जिन्हें सुमित्रा शर्मा ने चुटकियों में पूरा किया और जन साधारण को जो राहत दी वह सदैव अनुकरणीय रहेगी।

'उदयरामसर' ग्राम में गली-गली डामर सडकें, स्वरूपदेसर, सुजासर आदि ग्रामों तक ग्रेवल सड़कें, सार्वजनिक शिव मन्दिर एवं प्राथमिक पाठशाला के सामने ग्रेवल चौक 'उदयरामसर' की खुबसूरती को बढ़ाने वाले कारक तत्व हैं। गाँव में पानी के स्टैण्ड का निर्माण, गाँव की गलियों में पाईप लाईनें, हरीजन बस्ती में तीन कि.मी. तक विद्युत पोल, सौ किलोवाट का विद्युत ट्रांसफार्मर, सैकड़ो से अधिक लोगों को वृद्धावस्था पेन्शन, १०० से अधिक चयनित परिवारों को ऋण, ६५ लोगों की बुनकर शालाऐं, ४० लोगों को इन्दिरा आवास बनवाकर अपने सरपंच के कार्यकाल में सुमित्रा शर्मा ने कार्यातिरेक को बढ़ावा दिया। विधवा महिलाओं को पुत्रियों की शादी में मिलने वाली सरकारी सहायता दिलवाकर सुमित्रा ने सहारा दिया, वहीं कई विधवा महिलाओं को पारिवारिक सहायतार्थ १०-१० हजार रूपये की स्वीकृति दिलवा कर उनको सहारा दिया, इसके अतिरिक्त प्रसूति सहायता के तहत अनेक महिलाओं को माकूल सहायता दिलवाई। आंगनबाड़ी केन्द्र, सरस्वती योजना के तहत आठ केन्द्र, तीन अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र, नवीन राशन कार्ड निर्माण, भूखे परिवारों को पंचायत की तरफ से दो-दो बोरी गेहूँ, आयुर्वेदिक औषधालय एवं प्राथमिक कन्या विद्यालयों की स्वीकृति, साक्षरता, पल्स पोलियो, परिवार कल्याण, अल्पबचत, रोजगार मेले, स्वास्थ्य जांच, आई कैंप, महिला शिक्षा को बढ़ावा आदि कार्यों में अपना जीवन समर्पित कर सुमित्रा शर्मा ने यह साबित किया कि कोई भी महिला चाहे तो किसी भी कार्य को सुव्यवस्थित अंजाम दे सकती है।

'उदयरामसर' की प्रथम महिला सरपंच के रूप में फरवरी १९९५ से वर्ष २००० तक की अवधि में अपना ऐतिहासिक कार्यकाल पूरा करने वाली सुमित्रा शर्मा ने विकास कार्यो को नवीन आयाम देकर जन-जन के नजदीक पहुँचाया और सुविधाओं की झड़ी लगा दी। इस कार्य में उन्हें अपने पति बनवारीलाल शर्मा एवं व मित्रों व ग्रामवासियों का सक्रिय सहयोग प्राप्त होता रहा है। यकीनन सुमित्रा शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व ने उदयरामसर की कायाकल्प करने का भागीरथी कार्य को अंजाम दिया है।

सेवा समर्पित कर्मयोगी

जीवन का प्रत्येक पल विकास एवं जन साधारण की सेवार्थ अर्पित कर अपना सर्वस्व सामाजिक समरसता को सुपुर्द करने वाले विलक्षण पुरूष विरले ही होते हैं जिनके दिलो-दिमाग में सदैव निःस्वार्थ सेवा का भाव विद्यमान रहता है।

- बनवारीलाल शर्मा

'उदयरामसर' की माटी को अपने माथे से लगाकर सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं पारमार्थिक परिमार्जन के पर्याय बन चुके सेवा के प्रतिरूप श्री बनवारीलाल शर्मा उक्त परिभाषा को सर्वोच्च सार्थक करते हैं। भागीरथ प्रसाद जी शर्मा के प्रतिभाशाली पुत्र बनवारीलाल ने वाणिज्य स्नातक तक शिक्षा प्राप्त कर समाज सेवा के लिए अपने जीवन का एक तरह से समर्पित कर दिया और 'उदयरामसर' का जो वर्तमान विकसित स्वरूप देखने में आ रहा है उसके श्रेय लेने वाले लोगों की प्रथम पंक्ति में शामिल हो गये। बिना किसी लाग-लपेट एवं द्वेष भावना के सरल हृदय बनवारीलाल शर्मा ने अपने गाँव 'उदयरामसर' को ही नहीं बल्कि समूचे इलाके को विकसित करने वाले तथ्यों को ध्यान में रखा और हमेशा पीछा करने की विश्वसनीय प्रवृत्ति अपनाकर प्रत्येक काम को करवा कर ही छोड़।

अपने ग्राम में भारतीय जनता पार्टी संगठन के सचिव से प्रारम्भ किया गया राजनीतिक जीवन अनवरत विकास कार्यों का अलिखित श्रेय बनवारीलालजी को पारिभाषित करता है। भारतीय जनता युवा मोर्चा के जिला महामंत्री और उसके पश्चात् लगातार नौ वर्ष तक बीकानेर भा.ज.पा. के जिला महामंत्री पद पर रहकर बनवारीलाल ने न केवल अपनी गुणात्मक क्षमता प्रतिपादित की वरन् सवांगीण विकास के लिए अपने संकल्पों को भी स्थापित किया। भा.ज.पा. सहकारिता प्रकोष्ठ के बीकानेर संभाग संयोजक रहे शर्मा जी पंचायत प्रकोष्ठ भा.ज.पा. के जिला महामंत्री पद पर भी रहे। भा.ज.पा. के चुनाव विश्लेषण एवं सांख्यिकी प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष पद का गुरूत्तर दायित्व संभाल कर बनवारीलाल शर्मा अपने सांगठनिक अनुभव से भा.ज.पा. में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन भी कर चुके हैं। १९८२ में संसद में तत्कालीन विपक्ष के नेता एवं बाद में बने प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी की सभा आयोजित करवाने जैसा विलक्षण कार्य को अंजाम देना शर्मा के व्यक्तित्व का परिचायक है। श्री शर्मा राजस्थान प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र गंगाशहर में मंत्री की जिम्मेदारी संभालते हुए संस्था के विकास में अहम भुमिका निभा रहे हैं जो अपने आप में किर्तिमान है। चिकित्सा क्षेत्र में कार्य करने पर धुणीनाथ मंदिर के महामण्डलेश्वर स्वामी विशोकानंद जी महाराज ने तथा शिवबाड़ी के महन्त स्वामी सांवितसोमागिरीजी महाराज ने राजस्थान सेवा सम्मान तथा राजस्थान पत्रिका ने गोसखा सम्मान प्रदान किया है।

सामाजिक संरचना में प्रबल दायित्व का निर्वहन करने वाले बनवारीलाल जी शर्मा सामाजिक संस्था 'चेतना' के महामंत्री के रूप में अनेक सार्वजनिक कार्यक्रमों का सफल आयोजन करवा कर अपनी श्रेष्ठता साबित कर चुके हैं, जिनमें विशेष रूप से भयंकर अकाल के समय 'राजस्थान समग्र सेवा संघ' के माध्यम से बीकानेर तहसील के करीब ५० से अधिक गाँवों में भूख एवं प्यास से तड़फते परिवारों को 'श्री रामनारायण राठी चेरिटेबिल ट्रस्ट' के सहयोग से अन्न एवं अन्य सामग्री पहुँचा कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। खाण्डल विप्र महासभा उदयरामसर शाखा के सभाध्यक्ष का सामाजिक दायित्व भी इन्हीं के पास है। राम मन्दिर निर्माण के दौरान कार सेवा करने जाते समय उन्नाव (उ.प्र.) में उन्नीस दिन जेल की यात्रा कर चुके श्री शर्मा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मुख्य शिक्षक तथा मण्डल कार्यवाह के अनुशासित पदों को भी सुशोभित कर चुके हैं। राज्य विधान सभा में प्रतिपक्ष के नेता श्री गुलाबचन्द कटारिया के साथ कोलायत में हुई अभद्र घटना के दौरान श्री कटारिया को बचाने में भी श्री शर्मा की अहम भूमिका रही है।

'उदयरामसर' ग्राम में २५ दूरभाष कनेक्शन का स्वचालित एक्सचेंज, गाँव की अधिकांश गलियों में पक्की डामर की सड़कें, भीनासर से उदयरामसर तक डबल चौड़ाई की पेवर रोड, ओवर हैड पानी की टंकी का निर्माण, गोगा मन्दिर सी सी रोड, दो ट्यूबेल का गाँव में निर्माण, करीब सात कि.मी. लम्बी पाईप लाईन, बालिका मिडिल स्कूल का सैकेण्डरी तक क्रमोन्नत करवाना, हॉस्पिटल सी.सी.रोड का निर्माण आदि अनेक कुछ ऐसे महत्वपूर्ण कार्य हैं जो अकेले श्री शर्मा जी के बूते और लगातार परिश्रम के कारण ही संभव हुए हैं। अनेक शिविरों एवं आयोजनों में सदैव अग्रणी रहकर और बिना किसी का इन्तजार किये अकेले ही डगर पर निकल पड़ने वाले बनवारीलाल शर्मा की निःस्वार्थ एवं निश्छल सेवाओं को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

सांसद रहे सिने अभिनेता धर्मेन्द्र से लेकर देश के प्रधानमंत्री रहे श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं महामहिम उप राष्ट्रपति रहे स्व. भैरुसिंहजी शेखावत सहित भा.ज.पा. का ऐसा कोई बड़ा नेता नही हीं जिन्हें शर्मा ने उदयरामसर गाँव में न बुलवाया हो। शर्मा जी द्वारा किये एवं करवाये गये कार्यों की लम्बी फेहरिश्त का अंकन असम्भव है, लेकिन यह सभी जानते हैं कि किसी भी कार्य को व्यवस्थित अंदाज एवं लगन के साथ करने में बनवारीलाल शर्मा का कोई सानी नहीं है। अपनी विदूषी पत्नी श्रीमती सुमित्रा शर्मा को सरपंच बनाकर विकास कार्यों में द्रुतगति लाने वाले शर्मा जी का समूचा समाज एवं 'मेरा राजस्थान' परिवार तहेदिल से अभिनन्दन करता है साथ ही कर्मठता, निःस्वार्थ सेवा, संगठन कौशल आदि गुणों ने बनवारीलाल शर्मा को 'उदयरामसर' गाँव के उन सपूतों की पंक्ति में खड़ा कर दिया है जिन पर 'मेरा राजस्थान' परिवार गौरव करता है।

मुरलीसिंह यादव मेमोरियल प्रशिक्षण संस्थान

उदयरामसर: मुरलीसिंह यादव मेमोरियल प्रशिक्षण संस्थान का नाम स्व. श्री मुरलीसिंहजी यादव के नाम पर रखा गया, जिनका जन्म बीकानेर के 'उदयरामसर' ग्राम में सन् ५ दिसम्बर, १९३२ में हुआ, जो राजस्थान पुलिस के कार्मिक थे, हृदय के निश्चल निर्भीक और निष्पक्ष व्यक्ति थे। सेवा में रहते हुए गरीब और दरकिनार व्यक्तियों की सदैव मदद की और हमेशा दूसरों के हित के लिए कार्य करते रहे। इनकी याद में महिला शिक्षा के महत्व को देखते हुए समिति ने विशेषकर महिलाओं के लिए बीएड महाविद्यालय प्रारंभ किया, जिसमें एनसीटीई, नई दिल्ली द्वारा स्वीकृत १०० सीट है। महाविद्यालय महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय,

कुलदीप यादव
निदेशक

अखैराज पंवार
प्रशासक

प्रियंका यादव
समिति सदस्य

डॉ विक्रम कुमार शर्मा
प्राचार्य

बीकानेर से संबंद्ध है। महाविद्यालय में एनसीटीई, नई दिल्ली के मानदंड के अनुसार विशाल कक्ष उत्तम विज्ञान प्रयोगशालाएं, मनोविज्ञान प्रयोगशाला, दृश्य-श्रव्य कक्ष व शैक्षिक तकनीकी कक्ष, आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित है तथा इनमें एनसीटीई के मापदंडों के अनुसार भव्य पुस्तकालय बना हुआ है। इस महाविद्यालय में अनुभवी एवं योग्य प्राध्यापकों द्वारा अध्यापन कार्य किया जाता है ताकि यहां शिक्षार्थी शिक्षा के उच्च मूल्यों को स्थापित करके समाज में यथोचित स्थान प्राप्त कर सके। संस्थान द्वारा कौशल विकास एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण के उद्देश्य की पूर्ति हेतु सन् २०११ में मुरलीसिंह यादव मेमोरियल प्राइवेट आईटीआई में वायरमैन व इलेक्ट्रीशियन ट्रेड के अंतर्गत २१ यूनिट प्रति वर्ष प्रशिक्षणार्थियों को नियमित रूप से व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। संस्थान द्वारा शैक्षिक उन्नयन एवं आत्मनिर्भर भारत के स्वप्न को साकार रूप करने के निमित्त वर्ष २०१७ में भगवातीदेवी शिक्षण संस्थान सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, उदयरामसर (सम्बद्धता प्राप्त माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर द्वारा) की स्थापना कर नियमित रूप से शिक्षार्जन का दायित्व निर्वाह किया जा रहा है। इसी क्रम में महाविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में २०१८ में कला व विज्ञान संकाय में एनसीईटी दिल्ली एवं महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा मान्यता प्राप्त चार वर्षीय इंटीग्रेटेड कॉलेज आरंभ

मुरली सिंह यादव मेमोरियल प्रशिक्षण संस्थान

किया गया है, जिसमें प्रत्येक संकाय में प्रतिवर्ष क्रमशः ५०-५० शिक्षार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। संस्थान द्वारा सत्र २०१८-१९ में एमएसवाई बीएसटीसी नाम से एक शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय (एनसीईटी व प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय द्वारा मान्यता प्राप्त) शुरू किया गया है, जिसमें प्रतिवर्ष १०० प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने उज्जवल भविष्य के लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हैं। संस्थान द्वारा सत्र २०२० में मुरलीसिंह यादव मेमोरियल डी-फार्मेसी महाविद्यालय (फार्मेसी कॉउन्सिल ऑफ इंडिया से सम्बद्धता) की शुरूआत की गई है। जिसमें संस्थान द्वारा ६० शिक्षार्थियों को प्रतिवर्ष चिकित्सा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। संस्थान सामाजिक, शैक्षणिक व आर्थिक स्वावलंबन हेतु निरंतर कार्यरत है। सांस्कृतिक गतिविधियों का भी आयोजन किया जा रहा है। संस्थान शैक्षणिक उन्नयन हेतु बालिकाओं को छात्रवृति भी प्रदान करता है। संस्थान सामाजिक, शैक्षणिक व आर्थिक स्वावलंबन हेतु निरंतर कार्यरत है। सांस्कृतिक गतिविधियों का भी आयोजन किया जा रहा है। संस्थान शैक्षणिक उन्नयन हेतु बालिकाओं को छात्रवृति भी प्रदान करता है। इस संस्थान द्वारा समय-समय पर समाजोपयोगी कार्य जैसे - बच्चों को शिक्षा, वृक्षारोपण, स्वास्थ्य शिविर, साहित्यिक संगोष्ठी इत्यादि कार्यक्रम किए जाते हैं। इस संस्थान से 'उदयरामसर' की बालिकाओं को विशेष लाभ मिला है। गत वर्षों में संस्थान द्वारा १४१ प्रशिक्षणार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं से उतीर्ण होकर प्रथम, द्वितीय, तृतीय अध्यापक ग्रेड में कार्य कर रहे हैं। इसी क्रम में आईटीआई में वायरमैन व इलेक्ट्रिशियन व्यवसाय में शिक्षण प्राप्त कर सैंकड़ों प्रशिक्षणार्थी सरकारी व गैर सरकारी विभागों में नियुक्ति प्राप्त कर आत्मनिर्भर 'भारत' के निर्माण में अपना योगदान दे रहे हैं।

आधुनिक शिक्षा के महारथी-श्री दिपक यादव

आजाद हिन्द फौज (सुभाष चन्द्र बोस द्वारा) गठित टुकडी में कार्य कर देश सेवा का जज्बा दिखाने वाले गांव के स्व. श्री बृजलाल यादव के पुत्र श्री कृष्ण यादव जो १९७१ में भारत पाक युद्ध के दौरान वीरता का जौहर दिखाते हुए अपनी टांग गंवा चुके थे, जिनके पुत्र श्री दिपक यादव जो ध्वज नेता भी रहे, ने शिक्षा जगत में उत्थान हेतु आर्यव्रत स्कुल प्रारंभ की। सामान्यतया यह कहा जाता है कि विद्यार्थी गांवों की बजाय शहरों में अच्छी शिक्षा ग्रहण कर सकता हैं जबकि इस मिथ्या को तोड़कर उल्टी गंगा प्रवाहित करके दिखाया और शहरों से सैकड़ों विद्यार्थी उच्च व अच्छी शिक्षा लेने हेतु बसों द्वारा गांव में आकर शिक्षा ग्रहण करने लगे।

आर्यव्रत शिक्षा स्कुल वर्तमान में आधार शीला पब्लिक स्कुल के संस्थापक श्री दिपक यादव के अथक प्रयास व मेहनत से शिक्षा के क्षेत्र में अनुकरणीय कार्य कर बीकानेर जिले में उदयरामसर का नाम रोशन किया है। जिनकी स्कुल के ५० से अधिक विद्यार्थी डाक्टर, इन्जीनियर, साईनटिस्ट आदि होकर विभिन्न क्षेत्रों में सेवाएं दे रहें है, जैसे राजस्थान में मिडील बोर्ड में अंचला रामावत टॉपर रही, जो वर्तमान में डॉक्टर बनकर ऋषिकेश के एम्स में सेवाएं दे रही है।

जबकि डॉ. राजाबाबु रामावत दिल्ली के एम्स में तथा चोरूलाल मेघवाल आय.आय.टी गुहावटी से करके बेंगलोर में ५७ लाख के पैकेज पर कार्यरत है अभिषेक यादव पुत्र स्व. विमल यादव इन्कम टैक्स आफिसर चेन्नई, भुवनेश यादव बैक मैनेजर, अभिजित यादव आय.आय.टी करके जापान में कार्यरत है अभिषेक यादव पुत्र आकाश यादव आय.आय.टी रुड़की एवं नितिन यादव शिकागों में साईनटिस्ट, अनील यादव नासा में साईनटिस्ट, शितल सिपानी C.A दिल्ली में अपनी सेवाएं देकर ग्राम का परचम फहरा रहे हैं। संस्थापक श्री दिपक यादव को ''आधुनिक शिक्षा के महारथी'' कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मिलवर्तन का मिसाल जन-जन में है भाईचारा राजस्थान की गोद में राजस्थान की शान 'उदयरामसर' के ऐतिहासिक प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Mahesh Purohit
Mob. : 9974712333

MAHESH CHEMICALS SURAT

MAHESH
CHEMICALS

Dealers in : All Kinds of Packing Materials

2046, Fudinawadi, Sahara Darwaja, Ring Road,
Surat, Gujarat, Bharat - 395002
e-mail : sharmamahesh3107@gmail.com
Ph. : 0261-2321066, 4041066, 3210066

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मिलवर्तन का मिसाल जन-जन में है भाईचारा राजस्थान की गोद में राजस्थान की शान 'उदयरामसर' के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Sunder Lal Bothra
Mob. : 9339665824
Sandip Bothra
Mob. : 9831217077
Sourabh Bothra
Mob. : 9414415646

18, Mukhram Kanoria Road, "B" Block, Flat No. 403,
Howrah, West Bengal, Bharat - 711101

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

देश सेवक, उद्योगपतियों की भूमि राजस्थान का 'उदयरामसर' इतिहास के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

मुरलीसिंह यादव मेमोरियल प्रशिक्षण संस्थान
उदयरामसर, बीकानेर (राज.)

B.Ed., BSTC, D-Pharmacy
B.Sc.B.Ed./B.A. B.Ed., ITI,
Degree College (Arts & Science)

भगवानी देवी सीनियर सैकेण्डरी स्कूल
(Arts & Science for Hindi/English Medium)
निदेशक : कुलदीप यादव (9413211757)

!! जय गुरू नाना !! !! जय प्रभु महावीर !! !! जय गुरू राम !!

मिलवर्तन का मिसाल जन-जन में है
भाईचारा राजस्थान की गोद में
राजस्थान की शान 'उदयरामसर' के
ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Jitendra Sipani
Mob.: 9326669111

SD Textiles
S. D. TEXTILES
78, Noor House, Roshan Bagh,
Bhiwandi, Dist. -Thane, Maharashtra, Bharat - 421 302

Rakesh Sipani
Mob.: 9326021121

Manoj Sipani
Mob.: 8779989508

Sipani Impex
1503, Survey No. 68, Hissa 12, Pritish Complex, Dapoda Road,
Opp. Reliance Godown, Village Val, Taluka- Bhiwandi,
Dist-Thane, Maharashtra, Bharat - 421302

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
देश सेवक, उद्योगपतियों की भूमि राजस्थान का
'उदयरामसर' इतिहास के प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Ajay Kumar Sipani
Mob. : 9830023599

Sipani Consultants Pvt. Ltd.

Our Services -
- Mutual Funds
- Fixed Deposits
- Life Insurance
- General Insurance

BIA Merlin Chambers, 18 British India Street,
2nd Floor Unit-202 A, Kolkata, West Bengal-700069
Ph. : 033 - 22316599 / 22316600 Res. : 033-40033599
website : www.sipaniconsultants.in
e-mail : ajaysipani2003@yahoo.co.in

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये
भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

अष्टम महर्षि दधीचि जयंती महोत्सव मिश्रित नैमिषारण्य

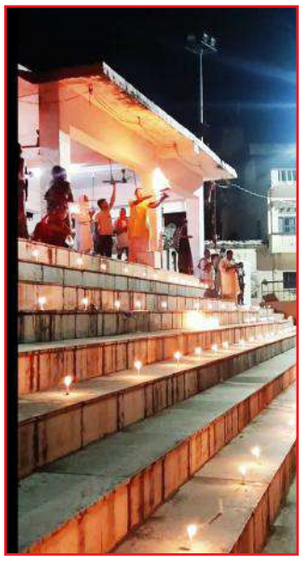

नैमिषारण्य महर्षि दधीचि तपस्थली दधीचि तीर्थ मिश्रित में अष्टम जयंती महोत्सव मनाया गया। महर्षि दधीचि आश्रम के महंत श्री देवानंद गिरि ने पूजन कार्य संपन्न करवाया। सायंकाल दधिचि कुंड पर आकर्षक दीपोत्सव मनाया गया। कोरोना संक्रमण के चलते प्रतिवर्ष होने वाले दो दिवसीय कार्यक्रम को स्थगित कर दिया गया था, किंतु महर्षि दधीचि सेवा ट्रस्ट के साथी सीतापुर के अमित दाधीच परिवार ने अपनी उपस्थिति दी।

वर्ष २०१३ में मिश्रित में पहली बार भगवान दधीचि जन्मोत्सव मनाया गया था। दाधीच सोशल ग्रुप इंदौर के नेतृत्व में एक यात्री दल जब यहां जयंती मनाने पहुंचा तब तत्कालीन महंत ब्रह्मलीन देवदत्त गिरी जी ने इसे अभूतपूर्व बताया। द्वितीय जयंती वर्ष २०१४ में परम पूज्य गोविंददेवगिरिजा का सानिध्य प्राप्त हुआ जिसकी परिणीति २०१८ में नैमिषारण्य में हनुमानगढ़ी में पहली बार दाधीच बंधुओं द्वारा १०८ श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन हुआ। इस आयोजन के कारण वर्षों से अज्ञात रहे दधीचि तीर्थ मिश्रित को आज देशभर के दाधीच बंधु जानने लगे हैं। महर्षि दधीचि सेवा ट्रस्ट (पंजी.) के अध्यक्ष शंकरलाल शर्मा ने बताया कि पिछले ७ वर्षों से यहां दधीचि जन्मोत्सव मनाया जा रहा है। प्रथम दिन मिश्रित नगर में शोभायात्रा निकाली जाती है, जिसमें नगर वासियों द्वारा दाधीच बंधुओं का भावपूर्वक स्वागत सत्कार किया जाता है। रात्रि में भजन संध्या का आयोजन रहता है तथा दूसरे दिन सुबह से भगवान दधीचि का षोडशोपचार पूजन होता है। मंदिर प्रांगण में महर्षि द्वारा पूजित स्फटिक शिवलिंग का पूजन किया जाता है। हर वर्ष देशभर के सैकड़ों बंधु यहां दधीचि जयंती पर्व मनाने आते हैं। ट्रस्ट द्वारा यात्रियों के ठहरने आदि की व्यवस्था की जाती है। इस बार उत्तर प्रदेश सरकार के निर्देशों के पालन में सूक्ष्म कार्यक्रम रहा। सचिव श्रीसांवरमल जोशी ने 'मेरा राजस्थान' को बताया कि इस बार महर्षि दधीचि सेवा ट्रस्ट के सीतापुर वासी सक्रिय सदस्य श्री अमित दाधीच ने ट्रस्ट का प्रतिनिधित्व करते हुए उत्सव मनाया। श्री दधिचेश्वर महादेव मंदिर के पंडित श्री राहुल शास्त्री ने बताया कि हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी दधीचि कुंड पर आकर्षक साज-सज्जा की गई तथा सायंकाल महाआरती का आयोजन रहा। पूरा कुंड दीपज्योति से सजाया गया। पूरे आयोजन में दाधीच बंधुओं की कमी खली, किंतु भगवान दधीचि से प्रार्थना है कि अगले वर्ष फिर से आप सभी दुगुने उत्साह के साथ पधारें, यही मिश्रित वासियों की आकांक्षा है।

दधीचि कुंड पर दीपोत्सव तथा
ट्रस्ट प्रतिनिधि द्वारा महर्षि वन्दन

नमस्कार! मेरा राजस्थान

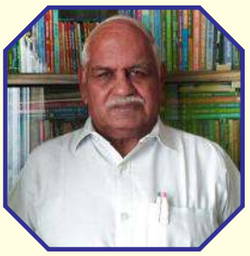

नेमीचंद सिपानी जैन
व्यवसायी व समाजसेवी
उदयरामसर निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३६९३९३०९

'उदयरामसर' के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं कि 'उदयरामसर' का नाम आते ही धोराँ वाली मरुधरा का चित्तराम स्मृति-पटल पर अनायास ही अंकित हो जाता है। ऊँचे-ऊँचे पहाड़नुमा बेकलू के सोनलिया धोरे और उन पर अंकित लहरिये सी धारियाँ, मानो किसी कुशल कलाकार की कलाकृति हो। एक जमाना था जब आसोपा धोरा अपने पूरे यौवन पर था। दूर दूर से यात्रीगण स्वास्थ्य लाभ के लिये यहाँ आते थे। यहाँ कई-कई दिन रुककर शुद्ध हवा पानी का सेवन करते और पुर्ण स्वास्थ्य का लाभ लेते थे। यहाँ का हवा-पानी श्रद्धेय संत श्री रामसुख दास जी म.सा. को इतना रास आया था कि वे अपनी कुटिया बना कर बहुत सा समय यहाँ बिताया था। साधूमार्गी आचार्य प्रवर पुज्य गणेशीलाल जी म.सा. भी कुछ दिन पधार कर पूरे सेखे (२९ दिन) काल तक यहाँ रुके थे। आचार्य भगवान नानालालजी म.सा. ने तो यहाँ चातुर्मास पर्व मनाया था (जिनकी अभी सौवीं जनम जयंति मनाई जा रही है) सुर्योदय से पहले भोर बेला में धोरे की ऊंची चोटी पर बैठने से जो मधुर-मधुर भीणी-भीणी मलियानल का आनंद उपलब्ध होता है, वह इन्द्रपूरी के सुख को भी मात देता है। उपभोक्ता ही उस आनंद को समझ सकता है, जान सकता है।

'उदयरामसर' की लाल मिट्टी से और मीठे पानी से बनाई गई झीणी मटकी जैसा शीतल और भीनी-भीनी खूशबू का पानी किसी अमृत से कम नहीं होता। कहते हैं 'उदयरामसर' की मटकी का पानी पीने वाले को पत्थर भी हजम हो जाता है। 'उदयरामसर' की बनी मटकी लोग यहॉ से दूर-दूर तक ले जाते हैं।

'उदयरामसर' ग्राम भाईचारे की एक मिशाल बना हुआ है। यहाँ का ओसवाल-माहेश्वरी भाईपा बुजूर्गों द्वारा स्थापित परम्परा सैकड़ों वर्षों से चली आ रही है। जिसका निर्वाह नई पीढ़ी भी कर रही है। आज भी हमारे गाँव में अपने से बड़ों को न सिर्फ भाईजी, काकाजी, बाबाजी के आदर युक्त सम्बोधन से बुलाते हैं बल्कि उन्हें योग्य सन्मान भी देते हैं। 'उदयरामसर' निवासी भारत वर्ष के सुदूर प्रान्तों में तो प्रवासित है हीं, विदेशों में भी अच्छे-अच्छे पदों पर आसीन है। हमारा उदयरामसर प्रवासी संघ का एक व्हाट्सअप ग्रुप बना हुआ है, जिसमें हम अपने विचार रोजाना आदान-प्रदान करते रहते हैं।

नेमीचंद जी का जन्म ३१ अक्टूबर १९४६ को उदयरामसर के दीपचंद जी के आंगन में माता सीतादेवी सिपानी की कुच्छी से हुआ। आपका सम्पूर्ण बचपन यहीं बीता व शिक्षा भी यहीं सम्पन्न हुई। श्रद्धेय गुरूजी अन्नाराम जी सुदामा का वरद हस्त हमेशा आपके सर पर रहा, उन्हीं की प्रेरणा से आपने लिखने का प्रयास किया व कुछ कविताएं व भजन लिखे। उदयरामसर के स्व. गोवर्धन सिंह जी यादव आपके आदर्श रहे। धार्मिक जगत में पुज्य श्रद्धेय श्री रामलाल जी म.सा. आपकी आस्था के केंद्र है। आचार्य श्री का सानिध्य आपके जीवन का स्वर्णकाल है। वर्तमान में आप बेलुड़ (हावड़ा) में निवास कर रहे है। प. बंगाल के प्रवासी भाइयों कि लिए उदयरामसर प्रवासियों की परिचय पुस्तक का संयोजन सम्पादन आपने २००४ में किया था।

नरेन्द्र सिपानी जैन
व्यवसायी व समाजसेवी
बीकानेर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९०७९०५०५४५

नरेन्द्र सिपानी जी का परिवार लगभग ७ पिढ़ीयों से बीकानेर का निवासी है, मूलत: आप 'उदयरामसर' के निवासी हैं, आपका जन्म व शिक्षा बीकानेर में ही सम्पन्न हुई, यहां आपका परिवार रियल स्टेट व अन्य व्यवसाय से जुड़े हैं, यहां स्थित कई सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं से जुड़े हैं।

बीकानेर में आपके परिवार की पैतृक हवेली है जिसे हेरिटेज होटल के रुप में परिवर्तित किया गया है, जिसका संचालन आपका परिवार कर रहा है।

अपने पैतृक निवास स्थान 'उदयरामसर' के संदर्भ में कहते हैं कि पहले उदयरामसर एक छोटा सा गांव था, पर आज एक कस्बे के रुप विस्तृत हुआ है, यहां सभी मूलभूत सुविधाएं आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं, यहां स्कुल, प्रशिक्षण संस्थान, चिकित्सा केंद्र, पशुचिकित्सा केंद्र भी है, यहां की आबादी व्यापारिक व आर्थिक दृष्टि से काफी समृद्ध है, यहां सभी का अपना व्यवसाय व कारोबार है, यहां के निवासी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवास कर रहे हैं, कुछ का अपना कारोबार व कम्पनीयां हैं, तो कुछ लोग भारतीय प्रशासन में विशेष पदों पर सेवारत हैं, यहां जैन, माहेश्वरी व अन्य समाज के लोग निवास करते हैं, सभी का आपसी सामंजस्य बहुत अच्छा है, यहां के निवासियों का 'उदयरामसर' के विकास में अपनी विशेष भूमिका रहती है, यहां कई भामाशाहा हुए हैं।

'उदयरामसर' प्राकृतिक दृष्टि से भी बहुत सुंदर है, यहां के रेतीले धोरों पर तो कई फिल्मों की सुटिंग हुई है, यहां का सबसे पावन स्थान 'दादाबाड़ी' है यह सैकड़ों वर्ष पुराना है, यहां वर्ष में एक बार बहुत बड़ा मेला लगता है, यहां समता नानेश भवन व अन्य कई हिंदु मंदिर है, जिसका विशेष महत्व व धार्मिक मान्यता है, यहा कई परिवारों की हवेलियां है जिनकी रचना व कलाकारी देखते ही बनती है, जिनमे सबसे प्रसिद्ध है, सागरमल मोतीलाल मल्ल, सम्पतलाल सिपानी, रामकृष्ण बागड़ी की हवेली, यहां की गौशाला भी यहां के प्रमुख आकर्षणों में से एक है, ऐसा है हमारा विशेषताओं से समृद्ध 'उदयरामसर'।

अपनी पैतृक भूमि 'उदयरामसर' के बारे में विमल जी सिपानी का कहना है कि 'उदयरामसर' राजस्थान का प्रमुख जिला बीकानेर से लगभग १० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। हमारा गांव उदयरामसर ३ समाज के लोगों में बंटा हुआ है- कृषि, नौकरी, व्यवसाय। बनिया समाज का व्यापार देश के हर राज्य में जैसे कोलकाता, मुंबई, आसाम, बैंगलोर, दिल्ली अन्य प्रदेश में भी है। नौकरी करने वाले लोग विदेश में, भारतीय सेना, कस्टम, बैंक, सरकारी एवं प्राइवेट कंपनी में कार्य करते हैं। कृषि का कार्य गांव में अधिकतर यादवों द्वारा किया जाता है क्योंकि, ज्यादातर जमीनें यादवों की है।

गांव के उद्योग चमड़ा, खादी, पापड़, भुजिया और कई तरह के उद्योग हैं। 'उदयरामसर' ५-६ किलोमीटर में फैला हुआ है। प्राथमिक सुविधा गांव में रेलवे स्टेशन, रोडवेज, बस स्टैंड, ऑटो स्टैंड है। गांव में फसल प्रकृति की वर्षा पर निर्भर है, कुछ के पास अपना ट्यूबवेल है। मुख्य फसल ग्वार, मोठ, बाजरी, तिल सेवन, घास बोर, मतीरा, काकड़िया इत्यादि है।

गांव में उच्च माध्यमिक विद्यालय लड़कों एवं लड़कियों के लिए, सरकारी व निजी दोनों स्कूल है। पास के गांव से भी विद्यार्थी पढ़ने आते हैं। बीएड ट्रेनिंग कॉलेज, आइटीआर कॉलेज भी है।

विमल सिपानी जैन
व्यवसाय व समाजसेवी
उदयरामसर निवासी-कोलकत्ता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९६७४६६३७९९

यहां के प्रमुख ऐतिहासिक धार्मिक स्थान दादाबाड़ी जैन जिनदत्त सूरी गुरुदेव है। यहां पर भादवा सुदी पूर्णिमा को बहुत बड़ा मेला होता है। रात को जागरण होता है। सुबह बीकानेर के आसपास के लोग आते हैं। लगभग १०,००० लोगों का भंडारा होता है। ऐसी मान्यता है कि आज तक कभी भंडारा का प्रसाद कम नहीं हुआ। कोई बिना प्रसाद खाये नहीं लौटा। मंदिर के अंदर कलाकारी देखने योग्य है। बालकिया धोरा, टी. बी सेंनेटोरियम है, गांव में मंदिर बहुत हैं, जैसे हनुमानजी का मंदिर, शिव मंदिर, सती मंदिर, गणेश जी का मंदिर, गोपाल जी का मंदिर, रामदेव जी का मंदिर, शनी मंदिर, हरीराम जी का मंदिर एवं जैनों के १७ वें तीर्थंकर कुंथुनाथ जी का मंदिर स्थापित है। गांव में बैंक, पोस्ट ऑफिस, अस्पताल एवं पशु चिकित्सालय की भी सुविधा है। गांव के बीचों-बीच गवाड़ हैं, पीपल का विशाल पेड़ गांव की शोभा बढ़ता हैं। गांव के बाजार में हर प्रकार की दुकानें है, जरूरत का सारा सामान मिल जाता है। गांव में प्राय: सभी के पक्के मकान व ऐतिहासिक हवेलियां, नए तरीके के आधुनिक मकान भी हैं, पूर्णतया सुविधाजनक है।

गांव में गणगौर का मेला चैत्र सुदी दूज तीज को लगता है। ऐतिहासिक गवरजा में पूरे सोने के गहने पहनकर लोग गांव के बीच गवाड़ में आते हैं, पूजा करते हैं ऊंट बैल गाड़ी की दौड़ प्रतियोगिता होती है। कुश्ती, वेटलिफ्टिंग, गांव के पहलवान अपना करतब दिखाते हैं जो कि देखने योग्य होता है।

गांव में हर धर्म जाति के लोग रहते है, आपस में भाईचारे से मिलकर रहते हैं। गांव की विशेषता यह है कि कोई बाहर का आदमी आता है तो घर का पता उसके साथ जाकर घर बताते है। उदयरामसर के टिलों पर कई फिल्मों की शूटिंग हुई है। फिल्म रेशमा और शेरा, यादगार, लैला मजनू अविका बॉलीवुड का आकर्षण का केंद्र है। विमल जी सिपानी १९७७ से कोलकाता के निवासी हैं। आपका जन्म प्रारंभिक शिक्षा उदयरामसर एवं मध्यप्रदेश में हुई, तत्पश्चात वाणिज्य विषय स्नातक की शिक्षा 'बीकानेर' से प्राप्त कर आपका कोलकाता आना हुआ। कुछ वर्षों तक नौकरी की। फैक्ट्री बंद होने से आपके सामने कई समस्या उत्पन्न हुई। धर्मपत्नी चंचल देवी एवं एस. के. लखोटिया ने आपको व्यापार करने के लिए हौसला बढ़ाया एवं आपकी पत्नी बचत के पैसे देकर व्यापार करने में सहायता की। कपड़ा व्यवसाय शुरू किया, अभी आपके पास दो दुकानें है। बड़ा पुत्र विकास राजलक्ष्मी एंड कंपनी का कार्य देखता है एवं छोटा पुत्र गौतम टेक्सटाइल का कार्यभार संभालता है, आपका माल मुंबई, अहमदाबाद, सूरत, जोधपुर, इरोड से आता है।

आप गौ सेवा का कार्य करते हैं, पानी के लिए आपने बांकुडा की प्याऊ के लिए धन देकर सहयोग किया, कोलकात्ता के श्री साधुमार्गी जैन संघ से आप जुड़े हुए हैं। हावड़ा के श्री साधुमार्गी जैन संघ के कार्यकारिणी के सदस्य हैं। 'उदयरामसर' गांव की माटी से आपको बहुत लगाव है। गांव में आपका आना जाना लगा रहता है। गांव के लोगों से बहुत प्यार है।

अरुण सिपानी जैन
व्यवसायी व समाजसेवी
जागीरोड-असम प्रवासी-उदयरामसर निवासी
भ्रमणध्वनि: ७००२६४०१३४

३ फरवरी १९६९ को राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'उदयरामसर' में हनुमानमल सिपानी जी के घर अरुण जी का जन्म हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा 'उदयरामसर' में तत्पश्चात आंध्रप्रदेश से बी.कॉम. की शिक्षा प्राप्त की, कई वर्षों से असम के प्रवासी हैं, यहां राईस मील का कारोबार है। आप कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं। असम स्थित मारवाड़ी समाज व जैन समाज के विभिन्न संस्थाओं में सदस्य के रुप में कार्यरत हैं, आपके दादाजी भगवानदासजी सिपानी व पिता हनुमानमल जी भी सामाजिक कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाते रहे है। 'उदयरामसर' स्थित कई सामाजिक भवनों व संस्थानों के निर्माण में अहम भूमिका निभायी हैं। आपकी सफलता के पीछे आपकी धर्मपत्नी अंजु जी व परिवार का विशेष सहयोग रहा है।

अपनी जन्मभूमि 'उदयरामसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'उदयरामसर' एक धार्मिक गांव है, यहां के निवासी सामाजिक व धार्मिक कार्यक्रमों में विशेष सक्रिय रहते हैं, यहां सबसे धार्मिक स्थल 'दादावाड़ी' है जहां वार्षिक मेले का आयोजन होता है, जिसमें समाज के सभी वर्ग उत्साह पूर्वक सहभागी होते हैं, इस मेले में हजारों की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित होते हैं उनके लिए प्रसाद व अन्य सुविधाओं की व्यवस्था पूरा गांव मिलकर करता है, यहां सभी जाती व धर्म के लोग सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाकर रहते हैं, परम तपस्वी रामसुखदासजी की कुटिया भी यहीं है, यहां के निवासी उद्योग-धंधों, व्यापार-व्यवसाय के साथ सरकारी व गैर सरकारी क्षेत्र में भी उच्च पदों पर कार्यरत हैं, प्रवासी होते हुए भी गांव के निवासी अपने गांव व समाज के विकास में अहम भूमि निभाते हैं। भाषा सभी महत्वपूर्ण होती है पर हमें अपनी मातृभाषा को प्रधानता देनी चाहिए।

उदयरामसर के गौरव डॉ. करण सिंह यादव

(हार्ट सर्जन)

पूर्व सांसद व विधायक
उदयरामसर निवासी-जयपुर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४१३३०४१३१

उदयरामसर की माटी में पले बढ़े डॉ. करण सिंह जी ने सिर्फ 'उदयरामसर' का मान नहीं बढ़ाया बल्कि पूरे राजस्थान के समक्ष अपने उत्कृष्ठ व्यक्तित्व का उदाहरण प्रस्तुत किया है। डॉ. करणसिंह जी का जन्म १ फरवरी १९४५ को 'उदयरामसर' के श्री गणपत सिंह जी व श्रीमती सरबती देवी के प्रांगण में हुआ। आप बाल्यकाल से ही कुशाग्र बुद्धि के थे, आपकी मिडिल तक की शिक्षा 'उदयरामसर' में ही सम्पन्न हुयी है। तत्पश्चात मैट्रिक की शिक्षा गंगाशहर से, स्नातक डूँगर कॉलेज बीकानेर से व एमबीबीएस, एमएस की शिक्षा १९७० में सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज से प्राप्त की। शिक्षा के पश्चात सरकारी विभाग में कार्यरत रहे। तत्पश्चात जयपुर मेडिकल कॉलेज में शिक्षक के पद पर सेवारत रहे। हार्ट सर्जरी एमसीएच की उपाधि बेल्लूर (तमिनलाडू) के क्रिश्चियन मिशन हॉस्पीटल से १९७८ में प्राप्त करने के पश्चात पुन: जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल एवं मेडिकल कॉलेज में चिकित्सक के रूप में कार्यरत हुए। १९८३ में ब्रिटिश काउंसिल द्वारा कामन वेल्थ फैलोशिप के अंतर्गत ब्रिटेन के साउथ हैमटन युनिवर्सिटी में कॉरोनरी बाईपास सर्जरी में प्रशिक्षित हुए। ओपन हार्ट सर्जन के रूप में जयपुर कॉलेज में कार्य प्रारंभ किया। कुछ समय में ही अस्पताल व मेडिकल कॉलेज के विभिन्न पदों पर कार्यरत हुए, हेड ऑफ डिपार्टमेन्ट के पद पर रहे, तत्पश्चात १९९६ में सवाई मानसिंह अस्पताल में मेडिकल सुपरिटेंडेट के रूप में नियुक्त हुए, इस दौरान कई राजनीतिज्ञों से संपर्क बढता रहा।

सन् १९९८ में ५४ वर्ष की आयु में काँग्रेस में प्रवेश किया। १९९८ व २००३ में अलवर जिले के बेहरोड विधानसभा क्षेत्र से दो बार विधायक के रूप में चुने गए तथा २००४-२००९ में अलवर जिले के सांसद चुने गए। २०१७ के उपचुनाव में पुन: अलवर के सांसद बने। राजस्थान प्रदेश काँग्रेस कमिटी के उपाध्यक्ष हैं। राजस्थान के २० सूत्री कार्यक्रम के २ बार डिप्टी चेयरमेन रहे, संसद की विभिन्न कमिटियों के सदस्य रहे।

आप कई सामाजिक संगठनों से भी जुड़े हैं, राजस्थान यादव महासभा के २५-३० वर्षों से अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं, जयपुर जिले में स्थित श्री कृष्ण छात्रावास का निर्माण करवाया, इसके अतिरिक्त अन्य कई सामाजिक कार्यों को भी अंजाम दिया है।

जन्मभूमि 'उदयरामसर' के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए 'मेरा राजस्थान' को कहते हैं कि 'उदयरामसर' की गलियों में मेरा बचपन बिता, मेरे भीतर संस्कारों की नींव यहां की माटी से ही मिली, जो संस्कार मुझे प्राप्त हुए हैं उनमें मेरे माता-पिता के साथ श्री गोवर्धन सिंह गुरूजी का विशेष प्रभाव रहा, वे एक स्वतंत्रता सेनानी व अध्यापक भी थे। मुझे ही नहीं पुरे गांव के बच्चों को अच्छे संस्कार देकर स्वर्ग सिधारे उनके सम्मान में गांव के विद्यालय को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत जी ने भी सम्मान किया। गांव के खेतों पर काम करना, होली-दिवाली पर विशेष कार्यक्रम करना, उंट पर चलना आज भी बराबर याद आ जाते हैं। गांव का पूर्ण वातावरण खुशनुमा सा लगता है। बचपन में हम लेम्प जलाकर उसके चारों तरफ बैठकर पढ़ते थे।

धीरे-धीरे गांव ने कस्बे का रूप ले लिया है, आज भी 'उदयरामसर' विशेषताओं से परिपूर्ण है, यहां से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी देश के विभिन्न क्षेत्रों में उंचे पद पर कार्यरत हैं, सभी प्रवासियों द्वारा मिलकर 'उदयरामसर प्रवासी संघ' का निर्माण किया गया है, जिसमें देश भर में फैले 'उदयरामसर' वासी संगठित हैं, इसके माध्यम से विभिन्न सामाजिक व धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिसमें सभी सम्मिलित होते हैं। गांव में कई सामाजिक भवनों का निर्माण निवासियों व प्रवासियों ने मिलकर किया है। हम ५ भाई व ३ बहनें है। सभी भाई सरकारी सेवाओं में कार्यरत हैं। पिताजी द्वारा गांव में स्थित यादव भवन के निर्माण में विशेष योगदान रहा है। भाषा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि मातृभाषा व राष्ट्रभाषा सर्वोपरि होती है। अत: सभी को राष्ट्रभाषा व मातृभाषा का सम्मान अवश्य करना चाहिए। अपने सांसद काल में अनेक बार लोकसभा में राजस्थानी भाषा को मान्यता दिलाने के लिए प्रयासरत रहा हूँ।

डॉ. मनमोहन सिंह यादव
लेखक, शायर और प्रखर विचारक
उदयरामसर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९४६००२१८५१

डॉ. मनमोहन सिंह जी का जन्म जनवरी १९५९ को राजस्थान के बीकानेर जिले स्थित 'उदयरामसर' में हुआ, आपकी प्रारंभिक शिक्षा उदयरामसर में तत्पश्चात बीकानेर व जोधपुर से उच्च शिक्षा प्राप्त की। १९८२ में राजस्थान विश्वविद्यालय के टॉपर रहे (एथिक्स में)। आपने स्थातकोत्तर की शिक्षा मनोविज्ञान में प्राप्त की, तत्पश्चात पी. एचडी. की उपाधी प्राप्त की, शिक्षा प्राप्त करने के बाद राजस्थान प्रशासनिक सेवा में विकास अधिकारी के रुप में कार्यरत रहे, सेवानिवृत्त आपने डिप्टी रजिस्ट्रार के पद पर २०१९ में सेवा दी, 'उदयरामसर' स्थित कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं। वर्तमान में मुरली मनोहर प्रशिक्षण संस्थान के कर्ताधर्ता के रुप में कार्यरत हैं। इसकी स्थापना २००८ में हुयी थी। आपको बाल्यकाल से लेखन का शौक रहा है, अभी तक आपने १५-२० पुस्तकें लिखी हैं, ये पुस्तकें राजस्थानी, हिंदी व उर्दु भाषा में लिखी गयी हैं। नाम ख्यात पत्र-पत्रिकाओं में आपके आलेख छपते रहते है।

अपनी जन्मभूमि 'उदयरामसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'उदयरामसर' एक विकासशील कस्बा है। इसकी बसावट लगभग ३४१ वर्षों पूर्व की गई थी, यहां कई मंदिर हैं व जिसका अपना महत्व है, यहां प्राचीन व प्रमुख स्थान दादावाड़ी, जो जैन समाज के लिए तीर्थ रुप माना जाता है, कहा जाता है कि इसकी स्थापना गांव की बसावट के पूर्व की गई थी। यहां एक पुराना तालाब है जो पुराने समय से जल संग्रह का प्रमुख स्त्रोत था, आज भी इसमें परंपरागत जल स्त्रोत होता है। परम तपस्वी रामसुखदास जी की तपोभुमी रही है। यहां का मुरली मनोहर धोरा, जो भीनासर व उदयरामसर के बीच स्थित है। रामसुख दास जी के प्रवचन सुनने दूर-दराज से लोग आते थे। वे बहुत बड़े संत के रुप में जाने जाते थे। यहां के मिट्टी के धड़े आस-पास के दूर-दराज इलाकों में प्रसिद्ध है क्योंकि इन घड़ों का पानी अत्यंत ठंडा होता है।

'उदयरामशहर! तुझे प्रणाम'

-डॉ.किरण सिपानी
भ्रमणध्वनि:
९८३००७६६२३

बचपन में पढ़ी कविवर मैथिलीशरण गुप्त की कविता कि पंक्तियाँ...'अहा ग्राम्य जीवन भी क्या है'... मेरे मन-मानस में बस गई थी। कलकत्ता में जन्मी-पली मैं। यहीं शिक्षित हुई और वर्षों बाद यही नगर मेरी कर्मस्थली बन गयी। गाँवों को देखने-जानने की प्यास निरन्तर बनी रही। जब मेरा रिश्ता सिलचर प्रवासी 'उदयरामसर' के सिपानियों के यहाँ तय हो गया तो मैंने स्वयं को सौभाग्यशालिनी समझा कि चलो गाँव में घर है तो कभी न कभी तो गाँव में रहने का सुअवसर मिलेगा। एक ज़माने में गाँव के कर्मठ, उदार, प्रतिष्ठित व्यक्ति सेठ घमेचंद सिपानी के ज्येष्ठ पौत्र की पत्नी बनना-मेरे सुकृतों का फल है।

इस गाँव की मिट्टी की सबसे बड़ी विशेषता है-लोगों का अपनापन और व्यक्ति को पहचानने का अद्भुत गुण। यहाँ के लोगों में जो सादगी और सच्चापन है, वह बरबस हर किसी का दिल जीत लेता है। उदयरामसर के सिपानियों ने मुझ शहरी बहू को आगे बढ़कर गले लगाया, अपार स्नेह-सम्मान दिया, आगे बढ़ने के लिए मेरी पीठ थपथपायी, हमेशा सहयोग दिया, मेरे आत्मनिर्भर बनने में, अध्यापन के क्षेत्र में जीवन समर्पित करने की राह में वे फूल बिछाते रहे, ऐसे भी अनेक अवसर आये जब घर-समाज के महत्त्वपूर्ण निर्णयों में मेरी राय को पुरुषों की राय से ज्यादा तवज्जो दी गई। 'देश और समाज का सर्वांगीण विकास तभी हो सकता है जब स्त्रियों की आधी आबादी विकास के पथ पर अग्रसर हो, देश-दुनिया के प्रति जागरूक हो इस तथ्य को 'उदयरामसर' के लोगों ने समझा और आगे आनेवाली पीढ़ियों की बेटियों और बहुओं को अपने चुनिंदा क्षेत्रों में कीर्तिमान बनाने के अवसर दिया।

रोजगार-व्यवसाय-शिक्षा के बेहतर-अनुकूल अवसरों की तलाश में 'उदयरामसर' निवासी देश-विदेश के अनेक स्थानों के प्रवासी तो जरूर बन गये, पर अपनी जड़ों से जुड़े रहे। समय-समय पर भागवत कथा, रामकथा एवं चातुर्मास जैसे आयोजनों से जन्मभूमि की यशोवृद्धि करते रहे। ऐसा ही एक आयोजन १९९२ में जैनाचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहब का चातुर्मास था। जन्मभूमि की पुकार पर बैंगलोर-चेन्नई-मुंबई-कलकत्ता-असम और कई प्रांतों के महानुभावों ने अपने व्यवसाय-प्रोफेशन को दरकिनार कर इस मंगलमय आध्यात्मिक कार्य को सम्पन्न करने में दिन-रात एक कर दिये। तन-मन-धन से जन्मभूमि के गौरव को द्विगुणित करने में उन्होंने कोई कोर-कसर न छोड़ी। यह चातुर्मास उदयरामशहर के इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। आचार्य श्री नानालाल जी की दिव्य शक्ति ने पूरे गाँव को स्फूर्तिमान बना दिया था। ग्रामवासियों और श्री सोहनलाल जी सिपानी. रिद्धकरण जी सिपानी जैसे आयोजकों की सुव्यवस्था ने पूरे गाँव को नंदन कानन-सा बना दिया था, जिनके आवास गाँव में थे वे भी और जिनके नहीं थे वे भी, सभी चातुर्मास के सुखद अनुभव लेकर लौटे।

नियमित रखरखाव के अभाव में हमारा घर रिहाइश के अनुकूल नहीं था। आयोजकों के सार्थक श्रम ने हमारे घर की काया पलट दी थी। हमें अपने ही घर में रहकर गुरुदेव की सेवा का सौभाग्य मिला। मैंने अपने पति प्रकाशचंद सिपानी और बड़ी माँ-सा धन्नी देवी के साथ नौ दिन गाँव के घर में गुजारे। घर का आँगन-कमरे-दीवारें अपने भव्य अतीत की कहानी कह रहे थे। विवाह के उन्नीस वर्ष बाद गाँव में रहने का मेरा सपना पूरा हुआ।

यहाँ एक व्यक्तिगत प्रसंग उद्धृत करना चाहूँगी। मैंने आचार्य श्री से अनुरोध किया था कि आपके पगलिये हमारे घर में एक बार पड़ जायें तो हमारा परिवार प्रतिकूल समय से उबर जायेगा। १९८९ से तीन वर्षों से लगातार घर का एक न एक सदस्य काल-कवलित हो रहा था। आचार्य श्री ने फरमाया था-'जो होता है। अच्छे के लिए होता है।' फिर वे मेरे पति से मुख़ातिब हुए-'कुछ नशा-पत्तर करते हो?' इनकी जेब में महंगी सिगरेट का पैकेट और सुबह ही खरीदा हुआ लाइटर था। इन्होंने दोनों को बाहर फेंका और गुरुदेव के चरणों में लेट गये-'मैंने आज आपको गुरुदक्षिणा में सिगरेट दे दी। अब कभी छुऊँगा तक नहीं।' वह दिन है और आज का दिन इन्होंने सिगरेट को हाथ नहीं लगाया। गुरुदेव के मुखमंडल पर जो दिव्य तेज था, उसी के कारण यह चमत्कार हुआ। आचार्य श्री ने एक शब्द भी नहीं कहा था कि इस व्यसन को छोड़ दो। मैं उपकृत हूँ 'उदयरामसर' की भूमि की, जिसने मेरे पति को इस दीर्घ व्यसन से एक ही झटके में मुक्ति दिला दी और भविष्य में आनेवाली अनेक स्वास्थ्यगत आशंकायें निर्मूल हो गयीं। हमारे युवा जो समाज के निर्माता हैं, जाने-अनजाने में दुर्व्यसनों के जाल में फँसकर अपनी शक्ति का अपव्यय करने लगते हैं। आचार्य श्री जैसी पवित्र आत्माएँ युवाओं को सहज ही कल्याणकारी दिशाओं की ओर मोड़ देती हैं। ये चातुर्मास और धर्माचार्यों की परोपकारिणी उपस्थिति समाज के नैतिक पर्यावरण का अकल्पनीय परिष्करण करते हैं।

हम जितने दिन 'उदयरामसर' रहे, सुबह के व्याख्यानों से अपनी आध्यात्मिक क्षुधा मिटाते रहे, संध्या-समय सत्संग का लाभ लेते रहे, इन सबके बीच ही गाँव के विभिन्न स्थलों आसोपा धोरा, रामसुखदास जी की कुटिया, दादाबाड़ी और अनेक मंदिरों के दर्शन करते रहे, ताकि गाँव की छवि को अपने मन में हमेशा के लिए सुरक्षित रख सकें, वो खुले आकाश के नीचे तारों भरी रात में डागले पर रखे माचों पर सोना, वो धोरों की सुगंध में नहाते, प्रदूषण मुक्त हवा के थपेड़ों की तर्ज पर सोना, वो भोर में पक्षियों के मधुर कलरव से आँखों का खुल जाना, वो आते-जाते ग्रामवासियों के मीठे बोलों का कानों में पड़ना, आज भी २८ वर्ष बाद मेरे जेहन में ताज़ा है, ७१वर्षीय जीवन में ऐसी अनुभूति फिर कभी नहीं हुई। हम शहरवासियों के लिए ये वस्तुएँ दुर्लभ हैं।

पृथ्वीराज जी सिपानी की छह पीढ़ियों ने अपने सिलचर (असम) प्रवास में घनिष्ठ सम्बंधों की अद्भुत मिसाल पेश की है। **शेष पृष्ठ ६४ पर...**

पृष्ठ ४६ से... हमारा घमेचंद-चम्पालाल-बंशीलाल सिपानी परिवार इस वृहद परिवार की एक अटूट कड़ी है। वर्षों के अन्तराल पर हम कुछ घंटों के लिए अपना घर संभालने आते रहते हैं। ऐसे अवसरों पर पड़ोसी बिमल जी सिपानी का परिवार मन से हमारी आवभगत करता है। मल्लों के परिवारों ने हमें अपने स्नेह-आतिथ्य से हमेशा सींचा है। मेरे पीहर के कोचर परिवार से मल्लों का व्यावसायिक सम्बंध था। मैं उनके लिए बेटी भी हूँ, बहू भी। स्व. भैरूँदान जी मल्ल का आशीर्वाद मुझे हमेशा मिलता रहा। १९९८ में उदयरामसर की एकदिनी यात्रा के दौरान उनके सान्निध्य में हमारे बच्चों को धोरों में बालू-स्नान का अवसर सुलभ हुआ। बच्चों ने समुद्र-स्नान तो बहुत बार किया था, पर इस स्नान का सुख उन्हें पहली बार मिल रहा था। बड़ी मुश्किल से हाथ पकड़कर उन्हें धोरों से निकालना पड़ा। मेरी तीसरी पीढ़ी जब मुझसे उदयरामशहर की कहानियाँ सुनती है तो एक ही प्रश्न करती है-'हमें कब लेकर चलेंगी?'

श्री किशन जी मल्ल के अपनेपन को कैसे भूल सकती हूँ जब १९९१ में असाध्य रोग की चिकित्सा के दौरान उनका मुंबई-निवास स्थान हमारी शरणस्थली बना। पुनः मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियाँ स्मृति में कौंध रही है 'अतिथि कहीं जब आ जाता है, वह आतिथ्य यहाँ पाता है। ठहराया जाता है ऐसे, कोई सम्बंधी हो जैसे।'

ऐसे परोपकारी-दूरदर्शी व्यक्ति ही कलकत्ता में 'उदयरामशहर प्रवासी संघ' की स्थापना कर रजत जयंती समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन कर पाते हैं। इनके अतिरिक्त बसंत कुमार जी मल्ल, रतनलाल जी लाखोटिया, सुन्दरलाल जी लाखोटिया, रमेश कुमार जी बागड़ी, बिमल जी सिपानी आदि हम प्रवासियों को अपनी जन्मभूमि से जोड़े रखने के स्तुत्य कार्य में पूर्ण मनोयोग से लगे हुए हैं, इस रजत जयंती वर्ष के मंच पर संघ ने मुझे सम्मानित किया। अपने घर-आँगन में सम्मानित होना किसी स्त्री के लिए बड़े पख्र की फख्र है। कामना करती हूँ कि आज के संवेदनहीन युग में उदयरामसर के लोगों का यह अपनापन-भाईचारा यूँ ही बरकरार रहे। मानवता के विकास में भाईचारे ने उन्नत ध्वज फहराये हैं और बड़े-बड़े संकटों को झेलने की हिम्मत दी है। कामना है कि यहाँ के शौर्य-पराक्रम की यशोगाथाएँ राजस्थान का सिर गर्वोन्नत करती रहें, अपने गाँव उदयरामसर के विकास के लिए करबद्ध मंगलकामना! 'मेरा राजस्थान' जैसी पत्रिका को 'उदयरामसर विशेषांक' के प्रकाशन के लिए अशेष धन्यवाद।

गौरी शंकर शर्मा
व्यवसाय व समाजसेवी,
इंदौर निवासी-उदयरामसर निवासी
भ्रमणध्वनिः ९८२६०९३३३५

५५ वर्षीय गौरीशंकर जी मूलतः राजस्थान के बीकानेर जिले स्थित 'उदयरामसर' के निवासी है, आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा 'उदयरामसर' में ही सम्पन्न हुई व उच्च शिक्षा बीकानेर से व एम.बी.ए. इंदौर से प्राप्त की। १९९० से इंदौर के प्रवासी हैं, इंदौर के एल.एन.जे. ग्रुप भिलवाडा में १८ वर्ष तक कार्यरत रहे। २०११ से सेवानिवृत्ति ली। तत्पश्चात स्वयं का पैकेजिंग आइटम, कोल टेड्रिंग का व्यवसाय प्रारंभ किया। आपकी पत्नी अलका जी भी उच्च शिक्षित हैं वे भी २-३ कम्पनियों में डायरेक्टरशीप पर कार्यरत हैं। आपको १ पुत्री व १ पुत्र करण ने एम.बी.ए. किया है व आपके साथ व्यवसाय में कार्यरत है। आप कई सामाजिक संस्थाओ से जुड़े हैं ऑल इंडिया विप्र फांउडेशन में मध्यप्रदेश क्षेत्र के जनरल सचिव के रूप में कार्यरत हैं। व्यक्तिगत रुप में भी सामाजिक कार्य करते रहते हैं अपनी जन्मभूमि 'उदयरामसर' के बारे में कहते हैं कि शिक्षा के क्षेत्र में हमारा गांव राजस्थान के विशेष गावों में से एक है, यहां के विद्यार्थी देश के विभिन्न भागों में बसे हैं, विशेष पदों पर कार्यरत हैं। कई सरकारी अधिकारी, भारतीय सेना में आय.ए.एस. भी है, यहां बी.इड. कॉलेज व आय.टी. प्रशिक्षण संस्थान है। पंचायत सरकारी व निजी स्कुल व अन्य कई मौलिक सुविधाएं व्याप्त हैं। यहां कई विवाह हॉल भी हैं, ब्राम्हणों व जैनों की कुछ धर्मशालाएं भी हैं। यहां के रेतीले धोरों पर कई फिल्मों की सुटिंग हुई है, यहां का सबसे प्रसिध्द जैन तीर्थ दादाबाड़ी है जो एक बड़े भू-भाग में फैला है। यहां वर्ष में १ बार बहुत बड़ा मेला लगता है। इसके साथ ही यहां कई मंदिर व ऐतिहासिक स्थान है, यहां की हवेलियां की नक्काशी बहुत ही सुंदर है। यहां सड़क व यातायात की सुविधा बहुत बढ़िया है। यहां सभी वस्तुओं की दुकाने हैं। यहां के गृह उदयोग में पापड़ व भुजिया का कारोबार अधिक होता है। यहां गौशाला भी है जिसकी देखरेख गांव वालों द्वारा ही की जा रही है, हमारा 'उदयरामसर' सुंदर व सम्पन्न है।

श्री श्रीकिशन मल्ल

व्यवसायी व समाजसेवी

उदयरामसर निवासी-कोलकाता प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९८३११५१०२१

८० वर्षीय श्री कृष्ण मल्ल जी का जन्म राजस्थान के बीकानेर जिले स्थित 'उदयरामसर' के प्रसिद्ध मल्ल परिवार में हुआ, आपकी मैट्रिक तक की शिक्षा यहीं सम्पन्न हुई, तत्पश्चात बी.कॉम. व सीए की शिक्षा कोलकाता से ग्रहण की, शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात व्यवसाय हेतु मुंबई आना हुआ। मुंबई में स्वयं की मेहनत व लगन से व्यापार प्रारंभ किया व ३० वर्षों तक मुंबई प्रवास करने के पश्चात यहाँ का कारोबार समेट कर पिछले ५-६ वर्षों से कोलकाता प्रवास कर रहे हैं, यहाँ पारिवारिक व्यवसाय जुट मील से जुड़े हैं। आप सामाजिक कार्यों में विशेष रूप से सक्रिय रहते हैं। माहेश्वरी प्रगति मंडल मुंबई-गिरगाँव में कई पदों पर कार्यरत रहे व कई वर्षों से अध्यक्ष पद पर भी सेवारत रहे। वर्तमान में भी इस संस्था के सक्रिय सदस्य हैं। महाराष्ट्र के स्टिल रिरोलर असोसिएशन के संस्थापक सदस्य रहे व ८ वर्षों तक अध्यक्ष पद पर कार्यरत रहे। कोलकाता स्थित माहेश्वरी विकास परिषद में अध्यक्ष, श्री गोरखनाथ ट्रस्ट में मंत्री व माँ संतोषी जन कल्याण फाउंडेशन में व्यवस्थापक ट्रस्टी के रूप में कार्यरत हैं। आपके व्यवसाय में आपके पुत्र व पौत्र सहयोग करते हैं।

अपनी जन्मभूमि 'उदयरामसर' के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'उदयरामसर' एक बहुत सुंदर कस्बा है, यहाँ के लोग बहुत मिलनसार हैं, यहाँ सभी समाज के लोग मेल-मिलाप के साथ रहते हैं। पूर्व की तुलना में मौलिक सुविधा व्यवस्था बढ़िया है। यहाँ प्राथमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालय निजी व सरकारी दोनों है। निजी प्रशिक्षण संस्थान हैं जहाँ आईआईटी व बी.एड. तक प्रशिक्षण दिया जाता है, 'उदयरामसर' पंचायत भी है। यहाँ कई धार्मिक स्थान हैं, जिसमें सबसे प्राचीन व महत्त्वपूर्ण स्थल है 'दादाबाड़ी' जो पूरे गाँव के लिए पुजनीय है। यहाँ एक बड़ी गौशाला है, साथ ही कई सामाजिक संस्थाए भी हैं जो गाँव व समाज विकास में अग्रणीय भूमिका निभाते है। यहाँ माहेश्वरी भवन का निर्माण भी करवाया गया है, यह गाँव शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणीय है, यहाँ के निवासी देश के विभिन्न भागों में बसे हैं, यहाँ हमारे परिवार द्वारा कुंआ व चंदादेवी मल्ल बालिका विद्यालय का निर्माण करवाया गया है, विद्यालय की स्थापना पिताजी हरिकिशन मल्ल जी (स्व.) ने किया था। ताऊ जयकिशन जी स्व. समाजसेवा में विशेष सक्रिय थे, पूरे गाँव में उनका नाम था। हमारा वर्ष में २-३ बार अवश्य 'उदयरामसर' जाना होता है, हमारे परिवार द्वारा समय-समय पर धार्मिक अनुष्ठान व कार्यक्रम होते रहते हैं। 'उदयरामसर' के निवासियों ने कई क्षेत्रों में महारत हासिल की है अपना व गाँव का नाम उदयरामसर वासियों ने रोशन किया है, कई विशेषताओं से पूर्ण है 'उदयरामसर'।

अशोक सिपानी जैन

व्यवसायी-समाजसेवी

उदयरामसर निवासी-सिलचर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४३५०७०८४९

अशोक जी (पुत्र स्व. गुलाबचंद सिपानी) मूलत: बीकानेर जिले में स्थित 'उदयरामसर' के निवासी हैं, आपका परिवार कई वर्षों से असम का प्रवासी है, आपका जन्म व शिक्षा भी असम में ही सम्पन्न हुई है। पूर्व में आपके परिवार का कपड़ों का कारोबार था, वर्तमान में आप चाय बगान के व्यवसाय से जुड़े हैं। सामाजिक कार्यों में भी विशेष सहभागिता निभाते रहते हैं। अपने पैतृक निवास 'उदयरामसर' में भी सामाजिक कार्यों में सहयोग करते रहते हैं।

अपनी पैतृक भूमि 'उदयरामसर' के बारे में कहते हैं कि 'उदयरामसर' बहुत ही सुंदर व प्यारा गांव है, यहां के निवासी मिलनसार हैं। यहां सभी समाज के लोग आपसी प्रेमभाव व मिल-जुलकर रहते हैं। पहले के मुकाबले इस गांव में बहुत विकास हुआ है। प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, कन्या विद्यालय, शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र व अस्पताल, डाकघर, बैंक, पशु चिकित्सालय की सुविधा उत्तम है। आज यहां हर चीज आसानी से मिल जाती है। यहां शिक्षा का स्तर भी उत्तम है, यहां के निवासी उच्च शिक्षा प्राप्त कर देश के विभिन्न भागों में बड़ी-बड़ी निजी व स्वयं की संस्थान में उच्च पदों पर कार्यरत हैं, कुछ तो भारतीय सेना व सरकारी विभाग में उच्च पदों पर सेवारत हैं।

'उदयरामसर' के रेतीले टीले लोगों के आकर्षण का मुख्य केंद्र है, इन धोरों की सैर करने सैलानी भी आते हैं। गांव में कई मंदिर हैं, ग्राम वासियों का श्रद्धा का प्रमुख केंद्र 'दादाबाड़ी' है, यहां परम तपस्वी रामसुखदास जी की कुटिया भी है। यह गांव दानदाता व भामाशाहों के रूप में भी जाना जाता है। जिन्होंने गांव के विकास व सामाजिक कार्यों में अपनी अहम भूमिका निभायी है, आज भी यहां के निवासी समाजसेवा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कई विशेषताओं से परिपूर्ण है हमारा 'उदयरामसर'।

समस्त राजस्थानी समाज की एकमात्र पत्रिका 'मेरा राजस्थान' के सभी पाठकों को 'स्वतंत्रता दिवस' पर विश्वनाथ भरतिया परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

कमल सिपानी जैन
समाजसेवी-बीकानेर प्रवासी
उदयरामसर निवासी (पूर्व सिलचर निवासी)
भ्रमणध्वनि: ७००२२९०६७९

'उदयरामसर' मेरी पैतृक भूमि है वहां का खुशनुमा वातावरण शुद्ध हवा-मीठा पानी आज भी मुझे अच्छा लगता है। गांव के रेतीले धोरों पर सुबह-सुबह घुमने जाना, शांत वातावरण बहुत अच्छा लगता है। यहां न शहर जैसी भागादौड़ी है, ना ही किसी तरह का तनाव। गांव के वातावरण से मन और तन पुर्णत: स्वस्थ हो जाता है। यहां का खान-पान भी बहुत अच्छा है, यहां पहले 'खेती' बारिश पर निर्भर होती थी, पर अब ट्यूबल लगने से १२ महिने खेती होती है, इसमें सब्जीयों के साथ अन्य फसलें भी उगाई जाती हैं।

यहां के लोगों में आपसी भाईचारा बहुत बढ़िया है सभी समाज के लोग मेल-मिलाप के साथ रहते हैं व सामाजिक व धार्मिक कार्यों में उत्साह पूर्वक सहयोग करते है। यहां के निवासी देश के विभिन्न भागों में बसे हैं। व्यवसाय, निजी संस्थाओं व सरकारी विभागों में उंचे पदों पर कार्यरत हैं। पहले के मुकाबले अब 'उदयरामसर' की आबादी कम हो गयी है क्योंकि अधिकतर लोग रोजगार व व्यवसाय हेतू परदेश जाकर बस गए हैं। इसके बावजूद सभी अपने समाज व गांव के विकास में यथा संभव सहयोग करते हैं।

'उदयरामसर' में कई मंदिर है इसमें प्रमुख है 'दादाबाड़ी' है जो गांव की श्रद्धा का मुख्य केंद्र है, इसके अतिरिक्त गौशाला, धर्मशालाएं भी है और स्कूल, अस्पताल की सुविधा भी पहले के मुकाबले काफी अच्छी हो गयी है। ये कहना कमल सिपानी जी का...

कमल सिपानी का मूल निवास स्थान 'उदयरामसर' है, आपके दादाजी के समय से आपका परिवार असम का प्रवासी है। आपका जन्म असम में ही हुआ, तत्पश्चात आपकी सम्पूर्ण शिक्षा उदयरामसर व बीकानेर में हुई। आप पिछले ६०-६५ वर्षों तक असम के सिल्चर के प्रवासी हैं, यहां कारोबार से जुड़े थे। पारिवारिक व स्वास्थ समस्याओं के चलते कुछ महिनों से बीकानेर में बसे हैं आप सामाजिक कार्यों में धर्म-ध्यान के कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक सहभागी होते हैं। आपको अपने मूल निवास स्थान से बहुत लगाव है।

हेमंत सिंह यादव
पूर्व सरपंच
उदयरामसर
भ्रमणध्वनि: ९८२९००५७६६

हेमंत जी का जन्म १ जुलाई १९६७ को बीकानेर के श्रेष्ठ गांव 'उदयरामसर' में हुआ। अध्यापक रामकिशन यादव के पुत्र व पूर्व सरपंच जगमाल सिंह यादव के पौत्र के रूप में हुआ, आपके बड़े दादा गोवर्धन सिंह यादव जी पूर्व सरपंच व स्वतंत्रता सेनानी रहे है। आपकी प्रारंभिक शिक्षा 'उदयरामसर' में हुई। तत्पश्चात बी.ए. बी.एड. व बी.एस.सी. एग्रीकल्चर की शिक्षा बीकानेर से ग्रहण की, राजनीति आपको विरासत में मिली, आपका परिवार कांग्रेस पार्टी का परम समर्थक रहा है। आपने २००५ में सरपंच का चुनाव लड़ा व ११७७ वोटों से विजयी हुए। २०१० में महिला सीट होने से इस बार चुनाव में आपकी धर्मपत्नी शारदा देवी लाडी रही व १०६५ मतों से विजयी हुई। २००९ में राष्ट्रपति प्रतिभा देवी पाटील के कार्यकाल में आपको राज्य अतिथि के रूप में २६ जनवरी को सम्मानित किया गया। पंचायती राज लागू होने पर पहले जन प्रतिनिधि आप बनें, जिन्हें राज्य अतिथि का दर्जा भी प्राप्त हुआ। १० अप्रैल २०१८ को बीकानेर जिले में राज्य पुलिस दिवस के उपलक्ष में एस.पी. और आई. जी. द्वारा भी आपको सम्मान प्राप्त हुआ है। आपके सरपंच कार्यकाल में 'उदयरामसर' को 'निर्मलग्राम' योजना के तहत आदर्श ग्राम का सम्मान प्राप्त हुआ।

आप व आपका परिवार गांव व ग्रामवासियों की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहता है। आप स्वयं अपनी गाड़ियों से दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को पुलिस की सहायता से अस्पताल पहुंचाते हैं। अपने कार्यों से आप ग्रामवासियों के प्रिय सरपंच के रूप में जाने जाते हैं।

अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'उदयरामसर' के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'उदयरामसर' गांव की स्थापना लगभग ४०० वर्ष पूर्व राजा उदय जी ने की थी। हम सभी यादव उन्हीं के वंशज हैं, उन्हीं के नाम से इस गांव का नाम 'उदयरामसर' रखा गया। उदयरामसर में लगभग १७ समाज के लोग निवास करते हैं। सभी का जन-जीवन उच्च है। सभी आपसी मेल-मिलाप व समन्वय के साथ रहते हैं। कभी किसी में कोई मतभेद नहीं होता, सभी सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर सहयोग करते हैं, यहां के लोगों की आय का मुख्य साधन ५० प्रतिशत नौकरी में १० प्रतिशत लोग व्यापारी व अन्य लोग खेती मजदूरी आदि कार्य करते हैं, खेती में मुख्य फसल ग्वार, मोठ, बाजरा, तील, मुंगफली होती है, यहां के मंदिर में करणी माता का मंदिर, रामसुख दास जी की कुटिया (आश्रम), रामदेवजी का मंदिर आदि है। सबसे प्रमुख 'दादाबाड़ी' है, जहां भादवा पूर्णिमा को विशाल मेला लगता है, हजारों की संख्या में लोग आते हैं, यहां धोरों की संख्या सन् १९८० के आसपास अधिक थी पर अब कम हो गई है।

यहां विद्यालय, ट्रेनिंग सेंटर, कन्या विद्यालय, अस्पताल, बैंक आदि की सुविधा भी उत्तम है। मुख्य बाजार के भीतर सार्वजनिक पुस्तकालय है जिसका निर्माण गोवर्धन सिंह यादव जी ने करवाया था। वर्तमान में यहां लगभग ११ हजार की जनसंख्या है, 'उदयरामसर' पूर्ण रूप से स्वच्छ व सुंदर गांव है।

कमलचंद सिपानी जैन

व्यवसायी व समासेवी

उदयरामसर निवासी-बैंगलोर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९८८०००४४४९

कमलचंद जी का जन्म १९५२ में राजस्थान के बीकानेर जिले स्थित 'उदयरामसर' के प्रसिद्ध सिपानी परिवार में हुआ, आपकी प्रारंभिक शिक्षा यहीं सम्पन्न हुई, तत्पश्चात उच्च शिक्षा आंध्रप्रदेश के मारखापुर में हुई, जहां आपके पिताजी कई वर्षों पूर्व से बसे थे। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात पैतृक कारोबार से जुड़े। १९८० में आपका परिवार कर्नाटक के बैंगलोर आकर बस गया और यहां प्लास्टिक के व्यवसाय से जुड़ गया। आप कई सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय रूप में कार्यरत हैं, मारखापुर में लायन्स क्लब के अध्यक्ष रहे। बैंगलोर स्थित विभिन्न संस्थाओं में अध्यक्ष, सचिव, कार्यकारिणी सदस्य जैसे महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत रहे व कुछ संस्थाओं में आज भी सेवारत हैं। साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष भी रहे हैं। आपके परिवार में पत्नी विमला व ४ बेटियां व एक पुत्र है।

सबसे बड़ी पुत्री कविता यशवंत बोथरा व पुत्र आपके साथ कारोबार में साथ निभा रहे है व अन्य तीन पुत्रियां काजल संजय जैन, पुजा चंदन बोरा व एकता संकेत देवड़ा सभी अपने-अपने कार्यक्षेत्र से संलग्न हैं। आप चार भाई हैं, सबसे बड़े सुंदरलाल सिपानी, द्वितीय राजकुमार सिपानी व सबसे छोटे विमल सिपानी सभी बैंगलोर के ही प्रवासी हैं सभी का अपना-अपना कारोबार स्थापित है।

अपनी जन्मभूमि 'उदयरामसर' के संदर्भ में कहते हैं कि हमारा वर्ष में २-३ बार 'उदयरामसर' जाना होता है। पहले व आज के गांव में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया है। स्कूल व सड़कें पक्की बन गई है। गांव में सभी समाज के लोग निवास करते हैं। जिनमें जैन, माहेश्वरी, ब्राम्हण, जाट, हरिजन, मुसलमान है, सभी में आपसी भाईचारा व प्रेमभाव बना हुआ है, गांव में होने वाले सामाजिक व धार्मिक कार्यों में सभी की सहभागीता रहती है। साधुमार्गी जैन संघ के प्रमुख आचार्य नानेश जी का चातुर्मास जब 'उदयरामसर' में हुआ था, तो सभी ने तन-मन-धन से अपना योगदान दिया था। आपके पिताजी सोहनलाल सिपानी का विशेष योगदान रहा था। आज भी यहाँ के बड़े-बुढ़े गांव के चौपाल पर बैठ कर बात-चीत करते हैं। यहां का सबसे पवित्र स्थल 'दादाबाड़ी' है, जहां प्रतिवर्ष बहुत बड़ा मेला लगता है, जिसमें हजारों की संख्या में दर्शनार्थी आते हैं। गांव में हमारे दादाजी भैरूदान जी द्वारा १९६०-७० के आसपास एक चिकित्सालय का निर्माण करवाया गया था। क्योंकि लोगों को इलाज के लिए 'बीकानेर' जाना पड़ता था। जब यहां सरकारी अस्तताल बना तो यह चिकित्सालय बंद कर दिया गया। 'उदयरामसर' ने शिक्षा के क्षेत्र में उच्च मुकाम हासिल किया है, यहां के निवासी रोजगार व व्यवसाय हेतु देश के विभिन्न भागों में बसे होने के बावजुद अपने गांव से आज भी जुड़े है। हमारा 'उदयरामसर' एक समृद्ध कस्बा है।

भाषा पर अपने विचार करते हुए कहते है कि सभी को मातृभाषा व राष्ट्रभाषा को विशेष महत्व देना चाहिए, ये हमें अपने मौलिक तत्वों व संस्कृति से जोड़े रखते हैं, इसलिए इनको उचित सम्मान अवश्य मिलना चाहिए।

दिनेश सिपानी

व्यवसायी व समाजसेवी

उदयरामसर निवासी-दिल्ली प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९९६८२९८३७२

दिनेश जी अपनी जन्मभूमि 'उदयरामसर' के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि हमारा 'उदयरामसर' सुंदर व शांत गांव है, यहां कई समाज के लोग निवास करते हैं, सभी में आपसी प्रेम भाव है, सभी एक दूसरे के साथ मिलजुल कर रहते हैं, यहां के निवासी मिलनसार व परस्पर सहयोगी हैं, सामाजिक कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाते हैं।

'उदयरामसर' बीकानेर जिले का प्रमुख कस्बा है, यहां पूर्व में कई टीले होते थे, जो अब नहीं के बराबर है, यहां का वातावरण भी बहुत बढिया है, यहां ठंड में अधिक ठंडी व गर्मी में अधिक गर्मी पड़ती है। यहां कई हवेलीयां हैं जिनमें सोहनलाल सिपानी जी की हवेली प्रमुख है। यहां कई धार्मिक स्थल हैं जिनमें 'दादावाड़ी' प्रमुख स्थल है, जहां वार्षिक मेला लगता है, जहां हजारों की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहते हैं, 'उदयरामसर' की शैक्षिक व आर्थिक स्थित बहुत उत्तम है, यहां के निवासी डॉक्टर, इंजिनियर, सी.ए., प्राध्यापक,
सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं में उच्च पदों पर कार्यरत हैं।

दिनेश जी का जन्म व प्रारंभिक शिक्षा 'उदयरामसर' में ही सम्पन्न हुई है, बीकानेर से आपने बी. कॉम. सम्पन्न की। १९८७ से दिल्ली के प्रवासी हैं और यहां स्पेयर पार्टस् ऑटो मोबाईल के व्यवसाय से जुड़े हैं। आप सामाजिक कार्यों में भी अग्रणी रहते हैं। दिल्ली स्थित साधुमार्गी जैन संघ से जुड़े हुए हैं। जैनियों की कुल देवी 'ओसिया माता समिती' से भी जुड़े हैं, मारवाड़ी व्यापार संघ के अध्यक्ष रहे हैं।

आपके पिताजी संतोषजी सिपानी (स्व.) भी एक सामाजिक व धार्मिक प्रवृत्ती वाले व्यक्ति थे। अपने नाम के अनुरुप ही वे एक संतोषी व्यक्ति भी थे। गांव व समाज के किसी भी कार्यक्रम में अग्रसर रहते थे, आपके परिवार में धर्मपत्नी व पुत्र-पुत्रवधु है व एक बेटी है।

बड़ों को सम्मान देना सिखाया
हिंदी भाषा ने मानवीय ज्ञान बढ़ाया

मेरा अभिमान, देश की शान
गर्व से कहो हिंदी ही स्वाभिमान

दाहिमा (दायमा) शब्द की उत्पत्ति ऐसे हुयी

गोठ मांगलोद मन्दिर स्थित उक्त शिलालेख में भगवती दधिमती के उपासक दधिमती क्षेत्र के निवासी ब्राह्मणों के लिए 'दक्ष्य:' यह शब्द लिखा गया है, जो दधिमती के शब्द में एकांश दधि शब्द से बना है। एकांश ग्रहण के विषय में प्रथम दध्यड् शब्द की व्याख्या में स्फुट रीति से लिख आए है। दध्य यह शब्द, दधि शब्द से यत प्रत्यय होकर बना है, दध्य शब्द की व्युत्पत्ति यह है 'दधिमथ्या इसे दध्य:', अर्थात् दधिमती के उपासक अथवा 'दधिमती क्षेत्रे भवा दध्या:' जो दधिमती को प्राप्त होने के योग्य हैं वे दध्य और दाहिमा शब्द भी उसी दधिमती (थी) शब्द से संबंध रखता है, उक्त शिलालेख में भगवती का नाम ''दधिमती और दाधीच संहिता में 'दधिमथी' लिखा है'' और वहाँ दधिम: नाम का होने का हेतु भी लिखा है कि दधिसमुद्र में अंतर्हित विकाटास्य दैत्य का वध किया था, उस समय दधिसमुद्र का मंथन किया जिससे भगवती का नाम 'दधिमथी' हुआ।

दाहिमा शब्द दधिमथ शब्द का अपभ्रंश है और दधिमथ शब्द दधिमथी शब्द से अंश प्रत्यय होकर बना है। दांधिमथ शब्द की व्युत्पत्ति यह है - 'दधिमथ्या हमें दधिमथ:' दधिमथी के ये अर्थात दधिमथी के उपासक अथवा दधिमथी क्षेत्र के निवासी अथवा 'दधिमथी मर्हने ते दधि मथा' जो दधिमथी को प्राप्त होने के योग्य है, वे दधिमथ। दधिमथ शब्द उपभ्रंश दाहिमा इस रीति से हुआ है: प्राकृत भाषा में 'घ' को 'ह' हो जाता है जैसे दधि के स्थान में दहि, इस रीति से दधिमथ शब्द का रुप बदलकर 'दाहिमह' हो गया, तदनंतर अंतिम हकार का उच्चारण शिथिल होकर दाहिमा ऐसा उपभ्रश का भी उपभ्रंश 'दायमा' ऐसा कहते है और लिखते है, दाहिमा ब्राह्मण दधीचि ऋषि के वंशज है, जिससे इन की जाति 'दाधीच' इस नाम से प्रसिद्ध होनी चाहिये थी, परन्तु कुलदेवी दधिमथी दधीची और उनके पुत्र पौत्रदी और वशंजो पर पूरा अनुग्रह करके इस वंश की सदा पालन करती रही और अब अपनी दयालुता से द्रवीभूत होकर माता की भांति असीम स्नेह से इस वंश की रक्षा कर रही है, इस हेतु से यह ज्ञाति कुलदेवी के नाम से प्रसिद्ध हुई।

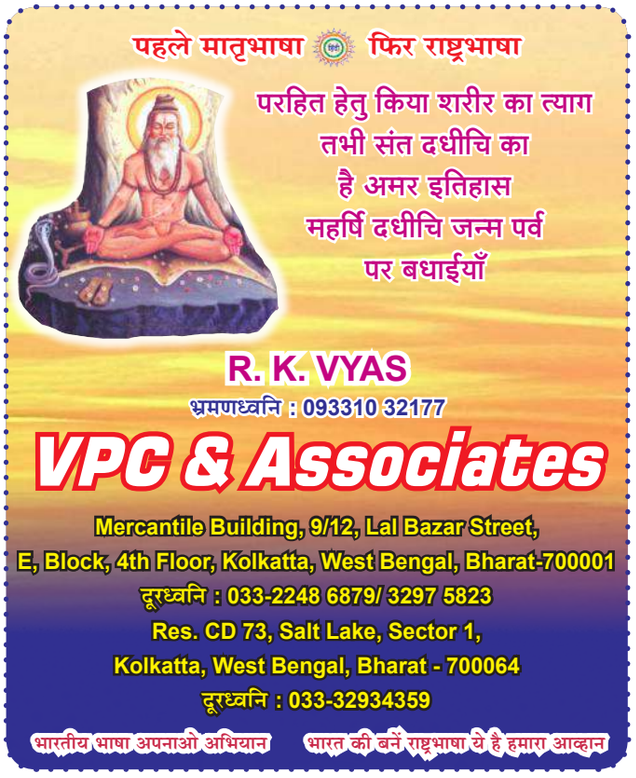

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्ठमी को रात्री १२ बजे, महात्यागी, महाज्ञानी, परोपकारी, धर्मनिष्ठ, अर्थवा पुत्र महर्षि दधीचि का प्रागट्य हुआ। महर्षि अर्थवा और उनकी पत्नी शान्ता ने महामाया आदिशक्ति दधिमथी का नवरात्री व्रत विधी-विधान से कर वरदान में महर्षि दधीचि को पाया, इस पावन अवसर पर देवताओं ने पुष्पवृष्टी करके जय-जयकार किया। ब्रम्हाजी प्रसन्न होकर अर्थवा से बोले, ''यह तेरा बालक, ईश्वर का अंश, देवी का कृपापात्र, दयालु दानी है, यह दधि की पुजा करने वाला होने से उस का नाम 'दधीचि' होगा, यह सम्पूर्ण दैत्यों और राक्षसों को मारने वाला होगा''।

इसके बाद ब्रम्हादिक देवताओं ने दधीचि को एक दिव्य यज्ञोपवीत धारण कर कहा, ''आप इसी समय तरुण हो जाओ और महान बुद्धिमान होकर वेद-वेदांग और ब्रम्हज्ञान में पारंगत हो जाओ'' यह कर ब्रम्हाजी ने ऋग्वेद, यर्जुवेद, साम वेद की शिक्षा दधीचि को देकर, देवताओं के साथ अपने धाम को लौट गये।

महर्षि दधीचि ने भगवान शिवजी की कठिन तपस्या की, भगवान आशुतोष ने प्रसन्न होकर उन्हें वर दिया और कहा, ''मैं तुम्हारा रक्षक बनकर रहुँगा, संसार की कोई शक्ति तुझे दबा नहीं सकती। मेरी आज्ञा से तृण बिन्दू राजा की कन्या वेदवती से विवाह करो, ऐसी आज्ञा देकर भगवान अर्न्तध्यान हो गये। भगवान शंकर की आज्ञा अनुसार महर्षि दधीचि ने राजा तृणबिन्दू की छोटी पुत्री वेदवती के साथ वेदोक्त रितीपूर्वक विवाह किया, वेदवती तपस्या की मुर्ती थी, अपनी तपस्या से उन्होंने माता दधिमथी को प्रसन्न किया।

देवी देववती सुर्वचा 'गर्भिस्थिनी प्राती येई नामों' से जानी जाती थी। पति-पत्नी सदा गौ, ब्राह्मण और अतिथियों की खुब सेवा करते थे, दधीचि ऋषि को पृथ्वी का साक्षात कल्पवृक्ष मानते थे।

भारत खंड के उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के पास सितापूर जिले में नैमिष्यारण्य शरश्वेत तट पर है, इसी जगह महर्षि दधीचि ने हजारों वर्षों तक तप किया तथा यहीं पर ही अस्थिदान किया था। त्रिपुरासुर नामक एक महाबली दैत्य ने इन्द्र को हराकर इन्द्रासन पर विजय पा ली थी। भगवान शंकर ने त्रिपुरासुर से युद्ध किया, यह युद्ध दस सहस्त्र वर्षों तक चला, एक बार युद्ध में भगवान शंकरजी के वाहन श्रीनन्देश्वरजी तृष्णा से व्याकुल हो गये, तब भगवान शंकर ने धनुष लेकर पृथ्वी का भेदन कर, उससे जल का उदय किया और नन्देश्वर को तृप्त किया। भगवान शंकर द्वारा पृथ्वी से निकाली जलधारा का नाम ''शरश्वेत'' पड़ा, यह सभी पापों से मोक्ष दिलाने वाला तीर्थ है। अस्थिदान करने की विनन्ती देवताओं ने जब महर्षि दधीचि से की तब उन्होंने त्रैय लोक के समस्थ तीर्थों का स्नान एवम् समरुल देवदर्शन का संकल्प लिया हुआ था, देवताओं के पास इतना वक्त न था, इसलिये उन्होंने साढ़े तीन कोटि तीर्थ, ३३ कोटी देवत, ८८ सहस्त्र ऋषि, नैमिष्यारण्य में प्रगट हुए और भुमि पवित्र और धन्य हो गयी।

नैमिष्यारण्य में महर्षि दधीचि आश्रम के मुख्य मन्दिर में भगवान का दधीचि मन्दिर है, यहाँ पर महर्षि दधीचि कपिला गाय एवम् **शेष पृष्ठ ५३ पर...**

पृष्ठ ५२ से... देवराज इन्द्र की याचनात्मक रुप में मुर्तियाँ स्थापित की गई हैं। आज भी फाल्गुन शुक्ल दशमी में पुर्णिमा तक नित्य पंचकोसी परिक्रमा एवम् विशाल सत्संग मेला होता है।

एक समय राजा क्षुव और महर्षि दधीचि के बीच ये विवाद छिड़ गया कि ब्राह्मण श्रेष्ठ या क्षत्रिय श्रेष्ठ। शिवभक्त दधीचि का मत ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ और पुज्यनीय है, राजा क्षुव ने नामंजुर किया और युद्ध छिड़ गया, इसमें महर्षि मुर्छित हो कर गिर पड़े। श्री शुक्राचार्यजी ने श्रुति प्रतिपादित महा मृत्युंजय मंत्र से महर्षि के कटे हुए शरीर को जोड़कर जीवित कर दिया, तत्पश्चात महर्षि ने शिवजी की तपस्या कर आशुतोष भगवान से अवध्यता, वज्रमय अस्थि और आदिनाथ का वर पाया, तब महर्षि ने राजा क्षुव को हराया। राजा ने भगवान विष्णू से प्रार्थना की कि वे महर्षि से अपनी बात मनवायें, भगवान विष्णू और महर्षि में युद्ध छिड़ गया, ब्रम्हाजी ने श्रीविष्णुजी को शांत किया और राजा ने महर्षि से क्षमायाचना की।

एक बार देवताओं ने असुरों पर विजय प्राप्त की तब उन्हें दिव्यास्त्रों की चिन्ता हुई कि वे उसे कहा रखें, तब सभी ने महर्षि दधीचि का नाम लिया। महर्षि दधीचि के पास दिव्यास्त्र रखने की सभी देवताओं ने विनन्ती की तो महर्षि मान गये। एक हजार वर्ष बीत जाने पर देवता अपने दिव्यास्त्रों को लेने नहीं आये। महर्षि को चिन्ता भी थी कि दानव दिव्यास्त्रों को चुरा न ले। देवों की दिव्यास्त्र सम्पदा को सुरक्षित रखने के लिये, यंत्र-मंत्र-तंत्र के ज्ञाता महर्षि दधीचि ने रसायन मंत्र-तन्त्र के माध्यम से शस्त्र को तेज गंगाजल में परिवर्तन कर अपने आराध्य देव भगवान शिव का स्मरण कर उसे अपने मेरूदंड की अस्थियों में धारण कर लिया। अर्थवानन्दन दधीचि अथर्ववेदी तो थे ही, ब्रह्मविद्या का ज्ञान भी उन्हें अपने पिता से विरासत में मिला। महर्षि ने अश्विनी कुमारों का अश्वमुख धारण कर उनकी मातृभाषा में मधुविद्या की शिक्षा दी।

असुरराज वृत्तासुर से पिड़ित देवता, महर्षि के पास उनके अस्थियों की भिक्षा माँगने आये क्योंकि दिव्यास्त्रों का महर्षि ने पान किया था उस कारण उनकी अस्थियाँ वज्र समान बन गई थी और उन अस्थियों के अस्त्रों से ही वृतासुर का वध हो सकता था। संसार के कल्याण एवम् देवताओं के हित के लिये महादानी, महर्षि दधीचि तुरन्त हँसते हुए मान गये। त्रिलोक की तीर्थयात्रा का संकल्प पुर्ण कर महर्षि ने अपने क्षुसत्यज्य प्राणों का परित्याग किया। सारे देवताओं ने जय-जयकार कर पुष्पवृष्ठि की और उन अस्थियों से अस्त्र बनाकर देवता वृत्तासुर का वध करने चले गये।

देवी वेदवती को समाचार मालुम पड़ने पर उन्होंने सती होने का निर्णय लिया। अपने गर्भ में पल रहे शिशु को पेट चीर कर निकाला और पीपल वृक्ष को सौंपकर देवी-वेदवती ने चिता में प्रवेश कर लिया।

महासती के प्रस्थान के समय देवताओं ने पुष्प वर्षा की और जय-जयकार किया। ब्रह्माजी ने प्रसन्नतापुर्वक बालक को गोद में लेकर उसका नाम पिप्लाद रखा। रूद्रावतार पिप्लाद उसी पीपल वृक्ष के नीचे लोगों की हित कामना से चिरकाल तक शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा के समान बढ़ते रहे। पिप्लाद बड़े होकर तपस्या की, तत्पश्चात गृहस्थ धर्म में प्रवेश किया उसके बाद उन्हें सुर्य समान तपस्वी पुत्र हुये, इनके विवाह पश्चात इन बारह पुत्रों के एक-एक पत्नी से बारह पुत्र हुए जो कुल १४४ हो गए, इन्हीं १४४ ऋषिकुमारों से दाधिच वंश की स्थापना हुई।

महान तपस्वी-महात्यागी-महादानी महर्षि दधीचि को एवम् महासती शिरोमणी वेदवती को शत् -शत् प्रणाम.... करते हुए 'मेरा राजस्थान' के प्रबुद्ध पाठकों से निवेदन करते हैं कि हम-सभी आज के युग में महादानी महर्षि के चरित्र को समझें और समझायें व अपने जीवन में अपनायें।

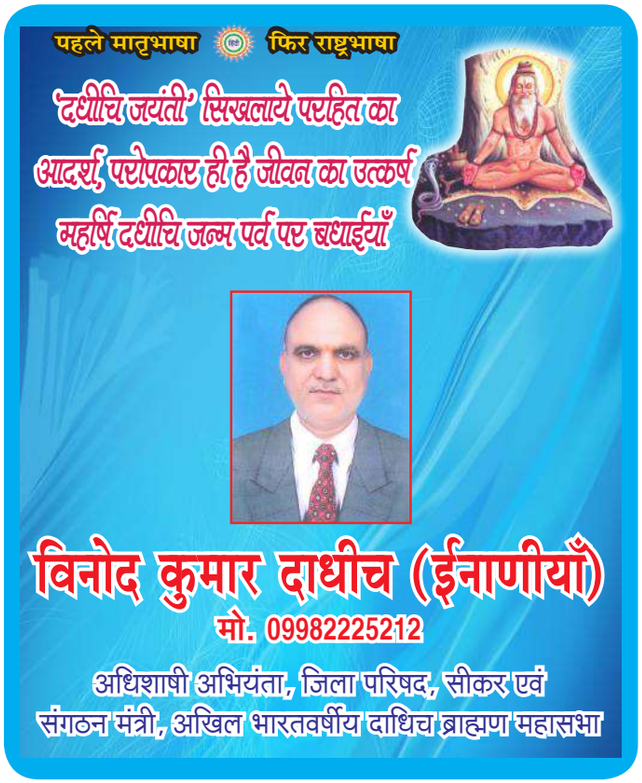

त्याग एवं बलिदानों की मणिमाला
महर्षि दधीचि

रतनगर्भा भारतभूमि अवतारों की भी भूमि है, यहां भगवान स्वयं अवतार लेते हैं एवं भक्तों के प्रेरक बनते हैं यहां पर जन्म लेने वाले ऋषि-महर्षि संसार के प्राणियों के बारे में ही नहीं अपितु स्वर्ग के देवताओं के हितों का संरक्षण और उनकी रक्षा के लिए तप्तर रहते हैं।

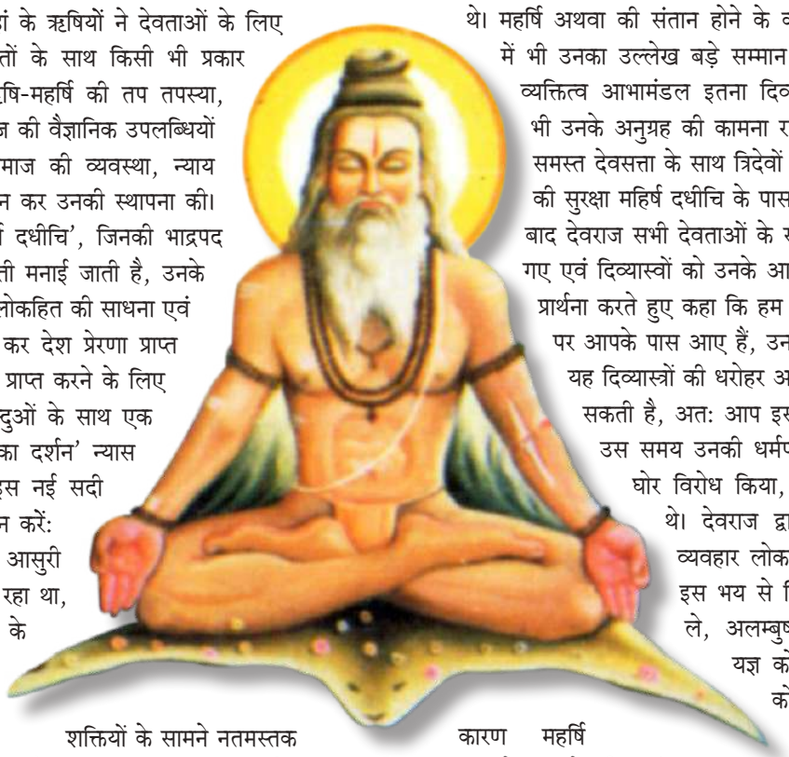

भारतभूमि ही एक ऐसी भूमि है जहां के ऋषियों ने देवताओं के लिए अपना बलिदान दिया, वहीं सिद्धांतों के साथ किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया, हमारे ऋषि-महर्षि की तप तपस्या, अनुसंधान, प्रयोग, अन्वेषण ही आज की वैज्ञानिक उपलब्धियों का मूल आधार है, उन्होंने ही समाज की व्यवस्था, न्याय दर्शन एवं मीमांसा आदि पर विवेचन कर उनकी स्थापना की। उन्हीं ऋषियों में से एक हैं 'महर्षि दधीचि', जिनकी भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को सारे देश में जयंती मनाई जाती है, उनके त्याग, तपस्या, बलिदान, विश्वास लोकहित की साधना एवं कर्तव्य पूर्ति के संस्मरणों को याद कर देश प्रेरणा प्राप्त करता है। महर्षि के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करने के लिए त्याग, तपस्या, बलिदान आदि बिन्दुओं के साथ एक महत्वपूर्ण बिन्दु है 'न्यास (ट्रस्ट) का दर्शन' न्यास का दर्शन क्या था, आइये, हम इस नई सदी में इस पर वैज्ञानिक दृष्टि द्वारा चिंतन करें: सर्वविदित है कि संसार में दैव और आसुरी वृत्तियों का संघर्ष युगों से चला आ रहा था, आज भी हमारे देश में भिन्न प्रकार के सतोगुणी, रजोगुणी एवं तामोगुणी स्वभावों का टकराव देखने में आता है। सर्वसत्ताधीश आसुरी शक्तियों के सामने नतमस्तक हो जाने की घटनाएं आज भी व्याप्त हैं, पर हजारों साल पूर्व हमारे ऋर्षि-महर्षियों में बड़े आत्मविश्वास के साथ इनका सामना किया, दक्ष प्रजापति के हठाग्रह के विरोध एवं दक्ष-यज्ञ विध्वंस की घटना के बाद महर्षि दधीचि अपने आश्रम में ब्राह्मणोचित कर्तव्यों के साथ बड़े-बड़े यज्ञों में भाग लेते थे, स्वाध्याय एवं योग साधना के साथ योग एवं योग्य छात्रों को विद्यादान के साथ नित नए शोध किया करते थे, दैत्य गुरू शुक्राचार्य की प्रेरणा से उन्होंने भगवान विष्णु की आराधना करके ब्रह्म कवच एवं नारायण कवच धारण किया, जिससे उनका शरीर अवध्यत्व (इच्छामरण), अदीनस्व (अभावमुक्ति) तथा वज्रास्थित हो गया। महर्षि दधीचि के शरीर में वह ब्रह्मतेज विद्यमान था, जिसके कारण राक्षसी एवं आसुरी प्रवृत्तियों के लोग उनके आश्रम की एक योजना परिधि में नहीं आ पाते थे, वे इतने तेजस्वी थे कि जहां वे रहते थे या जहां-जहां वे जाते थे, उनके प्रभा मंडल से एक योजना की परिधि में कुचेष्टा या दुष्प्रवृत्ति वाले व्यक्ति स्वयं भस्म हो जाते थे, उनके आश्रम में सदैव शांति रहती थी एवं सभी प्रकार से निरापद माना जाता था। देव और असुरों के संघर्ष के समय भगवान ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश की कृपा से प्राप्त दिव्यात्रों के द्वारा देवों ने दानवों को परास्त तो कर दिया परन्तु उसके बाद इन दिव्यास्वों को सुरक्षित रखने का एक विकट प्रश्न उत्पन्न हो गया, क्योंकि तपस्या के बल पर असुर पुन: शक्तिशाली हो गए एवं यह दिव्यास्त्र उनके हाथ लग गए तो सम्पूर्ण संसार के लिए संकट पैदा हो सकता था। देवताओं के आग्रह पर त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं देव गुरू बृहस्पति के सहचिंतन पर विश्वभर में एक ही नाम उभर कर आया वह था 'महर्षि-दधीचि' आस्तिक एवं निर्भय ऋषि थे। महर्षि अथवा की संतान होने के कारण वे अथर्व वेदी थे। ऋग्वेद में भी उनका उल्लेख बड़े सम्मान के साथ किया गया है, उनका व्यक्तित्व आभामंडल इतना दिव्य था कि पारलौकिक सत्ता को भी उनके अनुग्रह की कामना रहती थी, इसलिए महर्षि के प्रति समस्त देवसत्ता के साथ त्रिदेवों का यह विश्वास था कि दिव्यास्त्रों की सुरक्षा महिर्ष दधीचि के पास ही हो सकती है, इस निर्णय के बाद देवराज सभी देवताओं के साथ महर्षि दधीचि के आश्रम पर गए एवं दिव्यास्वों को उनके आश्रम में रखकर रक्षा की।

प्रार्थना करते हुए कहा कि हम देवगण भगवान त्रिदेव के निर्देश पर आपके पास आए हैं, उनका आप पर अटल विश्वास है, यह दिव्यास्त्रों की धरोहर आपकी अभिरक्षा में ही सुरक्षित रह सकती है, अत: आप इसके न्यासी बनने की कृपा करें। उस समय उनकी धर्मपत्नी वेदवती (सुवर्चा) ने इसका घोर विरोध किया, उनकी दृष्टि में देवसत्ता स्वार्थी थे। देवराज द्वारा महर्षि के साथ किया गया व्यवहार लोकहित में किए जाने वाले यज्ञ को इस भय से कि दधीचि मेरा इन्द्रासन न छीन ले, अलम्बुषा नामक अप्सरा को भेज कर यज्ञ को भ्रष्ट करवाना, अश्विनी कुमारों को ब्रह्म विद्या से दीक्षित करने के कारण महर्षि का शिरच्छेदन करना, आदि घटना उनके सामने थी, परंतु महर्षि दधीचि विरोधी विचार रखने वालों की चिंता नहीं करते हुए उन्होंने इस महान विश्वास के अमृत को स्वीकार किया, आगत अतिथियों को सम्मान देने की भावना और सर्वाधारण की भलाई को ध्यान में रखकर उनके दिव्यास्त्रों को अपने आश्रम में रखवा लिया। महर्षि दधीचि अपने आश्रम में यज्ञ उपाकर्म कार्यों में सदा व्यस्त रहते थे शस्त्रों का अम्बार सदैव उन्हें दिखाई देता था, सच कहा जाए तो महर्षि दधीचि इन शस्त्रों के 'न्यासधारी' थे, उनका मन सदैव इस दैवी सम्पदा की धरोहर के रक्षण के लिए चिन्तित रहता, दिव्यास्त्रों को महर्षि को सौंपने के बाद देवराज इन्द्र सत्तामद के साथ भोग विलास में तल्लीन हो गए। सत्ता-सुरा-सुंदरी में सारा सुराज मस्त हो गया, तब देव गुरू बृहस्पति के समझाने पर भी देवराज इन्द्र ने अपने गुरू का अपमान कर दिया, इस कारण वाचस्पति विश्वरूप को सुर गुरू का स्थान देकर वहां से अज्ञात स्थान पर चले गए। कालांतर में आसुरी शक्तियों का प्रभाव बढ़ने लगा। आश्रम की शांति में खलल पड़ने लगा, इस पर महर्षि ने अनेक बार देवराज से कहा कि मुझे न्यासी के दायित्व से मुक्त करें, किन्तु वर्षों तक उस महान अनासक्त ऋषि की बात नहीं सुनी गई, इस बीच महर्षि के आश्रम की सीमा से बाहर आसुरी प्रवृत्ति के दुराचारियों **शेष पृष्ठ ५६ पर...**

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

जगदीश चंद्र जोशी
प्रदेश अध्यक्ष (राजस्थान)
अखिल भारतवर्षीय दाहिमा (दाधीच)
ब्राह्मण महासभा
भ्रमणध्वनि: ९४१४१५६८९२

कार्यालय एवम् निवास
R1/11 जयश्री कॉलोनी बोहरा गणेश जी,
उदयपुर, राजस्थान, भारत- ३१३००१
दूरध्वनि: ९४१४१५६८९२

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

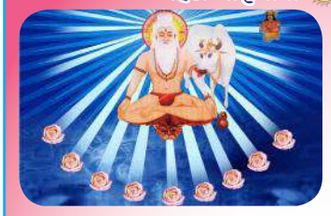

परहित हेतु किया शरीर का त्याग
तभी संत दधीचि का है
अमर इतिहास महर्षि दधीचि
जन्म पर्व पर बधाईयाँ

Satyanarayan Mukund Doba
भ्रमणध्वनि : 9392664743

Gopal Doba
भ्रमणध्वनि : 9440218197

Radheshyam Doba
भ्रमणध्वनि : 9849073374

Mukund Trading Company
Sugar Merchant

Gyan Bagh Colony 15-7-646/A 16, Begum Bazar,
Hyderabad, Telangana, Bharat-500 012
दूरध्वनि: 040- 24604743, 24604744 (R) 040-24734197, 24734198
अणुडाक : paldoba@yahoo.co.in

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान
भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

'दधीचि जयंती' सिखलाये परहित का आदर्श, परोपकार ही है जीवन का उत्कर्ष महर्षि दधीचि जन्म पर्व पर बधाईयाँ

Avinash Dahima
भ्रमणध्वनि : 09821455090

Ashok Agarwal
भ्रमणध्वनि : 09821231190

AAKRUTI

AAKRUTI CREATIVE SOLUTIONS PVT. LTD.
For All Your Advertising Needs

206, Kilfire House, C-17, Dalia Indl. Area, Near Fun Republic,
Off New Link Road, Andheri West, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400053
अणुडाक : amazingaakruti@gmail.com अंतरताना : www.aakruticreative.com

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

ने एक अबला का अपहरण कर लिया एवं उनका सतीत्व भंग करने का प्रयास करने लगे। अबला के रूदन से सारा वानांचल गूंज उठा, कुछ आश्रम वासी उसे बचाने गए, किंतु दानवों की शक्ति के आगे वे नाकाम रहे, महर्षि ने उसे बचाने का निर्णय लिया, किंतु शस्त्रागार की रक्षा का अहम सवाल था। ऋषि के आश्रम छोड़ने पर दानव आश्रम में शस्त्रागार को लूट सकते थे, इस पर अपने न्यासी दायित्व को ध्यान में रखकर देवों की शस्त्र-सम्पदा को सुरक्षित रखने के लिए यंत्र-मंत्र-तंत्र विज्ञान के ज्ञाता महर्षि ने रसायन मंत्र जाप से उनके तेज को अणु में परिवर्तित कर लिया, अणु शक्ति के प्रथम आविष्कार महर्षि दधीचि ने अपने आराध्यदेव भगवान आशुतोष शिव के समष्टि की रक्षा के लिए समुद्र मंथन से निकले हलाहल को कंठ में धारण करने वाले स्वरूप का स्मरण किया और उसी

का अनुसरण करते हुए उसे अपनी मेरूदण्ड की अस्थियों में धारण कर लिया, इससे यह स्पष्ट होता है कि न्यासधारी का न्यास के प्रति क्या दृष्टिकोण होना चाहिए? निर्मल पावन गंगा की तरह अपने पवित्र जीवन को श्रेष्ठ न्यासी की तरह ऋषि ने स्थापित कर न्यास का सिद्धांत सर्वप्रथम प्रतिपादित किया, न्यासी सिद्धांत के आविष्कार के रूप में जब तक मानव जीवन है तब तक महर्षि दधीचि स्मरण किए जाते रहेंगे।

पश्चिमी जगत में १६ वीं शताब्दी में प्रसिद्ध दार्शनिक 'लॉक' के सिद्धांतों में राजगुरू की उत्पत्ति कैसे और किसके लिए हुई, इसकी चर्चा करते हुए कहा कि राज्य अपने नागरिकों की सुरक्षा का ट्रस्टी है। पूज्य बापू भी धनपतियों व गरीब मजदूरों के ट्रस्टी हैं। पूज्य बापू ने भी धनपतियों को गरीब मजदूरों का ट्रस्टी बताकर महर्षि के सिद्धान्त का ही प्रतिपादन किया था, अत: आधुनिक युग के पब्लिक ट्रस्ट के सिद्धांत के महर्षि दधीचि यह जानते हुए कि मुझ यह देव धरोहर वापस लौटानी है क्योंकि इसी धरोहर से देव संस्कृति की रक्षा हो सकेगी, इस क्रम में मेरी मृत्यु निश्चित है, इसका ज्ञान रखते हुए भी वे अणुघोल को केशवाय नम:! माघवाय नम:! नारायणाय नम:! का उच्चारण कर पी गए।

देवताओं की भोगवादी प्रवृत्ति के कारण देवासुर संग्राम में असुरों ने पुन: देवताओं को परास्त कर स्वर्ग से निष्कासित कर दिया। असुरराज वृत्रासुर के आतंक से देवगण त्रस्त हो गए। संसार भर में त्राहि-त्राहि मच गई। शोषण और असुरत्व का चारों और बोलबाला हो गया। देवगण तेजविहीन अपने दिव्यात्रों को देखकर निराश हो गए। देवताओं ने सत्ता साम्राज्य एवं सम्पत्ति की रक्षा के लिए भगवान विष्णु से इस संकट से त्राण पाने का उपाय पूछा। भगवान विष्णु ने देवराज से कहा कि आप महर्षि दधीचि की शरण में जाइये एवं उनसे अस्थियों के दान की याचना कीजिए। वृत्रासुर का नाश तो केवल दधीचि की अस्थियों से ही होगा। वृत्रासुर को भगवान शंकर ने वरदान देते हुए कहा कि तुमने मुझे पूजा के समय अपनी जीवित् अस्थियां अर्पण की है, अत: तुम्हारी मृत्यु तो सिर्फ जीवित अस्थियों से बने वज्र से ही होगी, इस पर सुर गुरू बृहस्पति सहित सभी देवताओं के साथ देवराज इन्द्र ने वाचक की तरह महर्षि के आश्रम पर जाकर प्रार्थना की।

युग दृष्टा महर्षि समझ गए कि देवगण किस कार्य से यहां आए है, उन्होंने कहा देवगणों, मैं तुम्हारे दिव्यास्त्रों का न्यासी हूँ, आपके सारे शस्त्रों का तेज मेरी अस्थियों एवं मेरूदण्ड में स्थित है। पूर्व में कई बार अनुरोध करने पर भी आप पधारे नहीं, यह मानव देह क्षण भंगुर है, इस शरीर में आसुरी वृत्ति का विनाश एवं लोक कल्याण के लिए देवताओं की रक्षा होगी, यह मेरा सौभाग्य है, मेरे न्यासी दर्शन की भी इससे पूर्ति होती है, विश्वास करके रखी हुई धरोहर की न्यासी को चाहे अपने प्राण भी देना पड़े, उसकी रक्षा करना तथा नियोजकों को लौटाना, यही न्यासी धर्म है। मैं धन्य हूँ कि स्वर्ग वालों ने भी मृत्युलोक के एक ऋषि को अपना विश्वस्त माना और सम्मान दिया।

महर्षि दधीचि योगनिद्रा से समाधि में प्रवेश कर ब्रह्मलीन हो गए। अश्विनी कुमारों द्वारा 'गौ' (सूर्य किरण) के माध्यम से पवित्र शरीर से चमड़ी-मांस-भेद आदि को दूर किया। शास्त्रों में वह भी उल्लेख प्राप्त होता है कि कामधेनू गौ (सुरभि) ने स्वर्ग से आकर महर्षि के मस्तक को स्नेहमयी माँ की तरह चाट कर उन्हें आशीर्वाद दिया, इसके बाद देव शिल्पी विश्वकर्मा ने मेरूदण्ड की अस्थियों से वज्र का निर्माण किया एवं महापराक्रमी वृत्रासुर का देवराज इन्द्र ने वध किया, देवताओं में पुन: शक्ति का संचार हुआ तथा धर्मराज्य की फिर से स्थापना हुई।

आज हमारे देश और समाज के सूत्रधारों को भी त्याग एवं बलिदानों की मणिमाला में विश्वास के सुमेरू महर्षि दधीचि के चरित्र से प्रेरणा लेनी चाहिये। शरीर तो एक न एक दिन जाने वाला है, पर उसमें निहित कर्तव्यबोध अमरता प्रदान करता है, इसलिए राष्ट्र और समाज का विश्वास (ट्रस्ट) कभी टूटने न पाए, इसी विश्वास की शक्ति हड्डियों ने वज्र का तेज भर देती है। महर्षि दधीचि ने विश्वास की रक्षा के संकल्प से जो तेज अर्पित किया, वहीं शक्ति अणु परमाणुओं में परिवर्तित होकर अप्रतिमन और अप्रतिहत तेज में बदल जाती है, जिसके कारण आसुरी शक्तियां नष्ट हो जाती हैं तथा देश और समाज सुरक्षित रहकर निरन्तर प्रगति करता है।

यह आलेख आज के न्यासधारियों का एक उच्च आदर्श की तरह मार्ग दर्शक हो सकता है, यदि भगवान की कृपा से उन्हें महर्षि के जीवन से प्रेरणा प्राप्त हो।

दाधिची ब्राह्मण महासभा द्वारा दाधीच जयंती का आयोजन कार्यक्रम

रतलाम: महर्षि दाधिची को हम वेदिक, उपनिशेद व पौराणीक इन तीन अलग-अलग परंपराओं में पहचानते हैं। दाधिची ने देवताओं के आव्हान पर अपनी अस्थियों को दान किया था। मानवता के कल्याण के लिए किए इस दानयज्ञ से हमें यह उपदेश दिया कि किसी भी प्राणी के दुख में दुखी होना और किसी प्राणी के सुख में सुखी होना ही धर्म है। धरती पर अग्नि के अविष्कार कर्ता दाधिची ही थे।

यह बात डा. मुरधीधर चांदनीवाला ने कही। वे महर्षि दधिची के कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। महर्षि दधिची के जन्मोत्सव की बधाई देते हुए उन्होंने कहा ज्ञान कर्मकाण्ड की खोज, ओम का प्रथम उल्लेख करने वाले एवं यज्ञ के संस्थापक दाधिची ऋर्षि ही थे। उन्होंने बताया कि ओम का उच्चारण आकाश के समान व्यापक है। नारायण कवच, ब्राह्मीविद्या के ज्ञानी दाधिची ने परंपराओं को जन्म दिया है। उनके बताए मार्ग दर्शन पर चलना हम सबका कर्तव्य है।

श्री अखिल भारतीय दाधिची ब्राह्मण महासभा के आव्हान पर देश में दानवीर त्याग की मूर्ती महर्षि दाधिची का जन्मोत्सव कोरोना प्रोटाकोल का पालन करते समाजजनों ने अपने-अपने घरों में सादगी से मनाया। दाधिची परिवार द्वारा कस्तुरबा नगर में महर्षि दाधिची जी के चित्र पर माल्यापण व पूजा-अर्चना महाआरती व दीपमाला सजा कर सादगी से जन्मोत्सव मनाया गया। साथ ही दस दिवसीय श्रीगणेशोत्सव में श्री गणेश जी की प्रतिमा का पूजन कर महाआरती की गई। महाआरती में राष्ट्रीय प. नरेन्द्र जोशी, अजय जोशी, सीमा जोशी, विरेन्द्र व्यास, कलावती व्यास, अनिता जोशी, विरेन्द्र जोशी, मंजु जोशी, रजनी जोशी, सुनीता मिश्रा आदि उपस्थित थे।

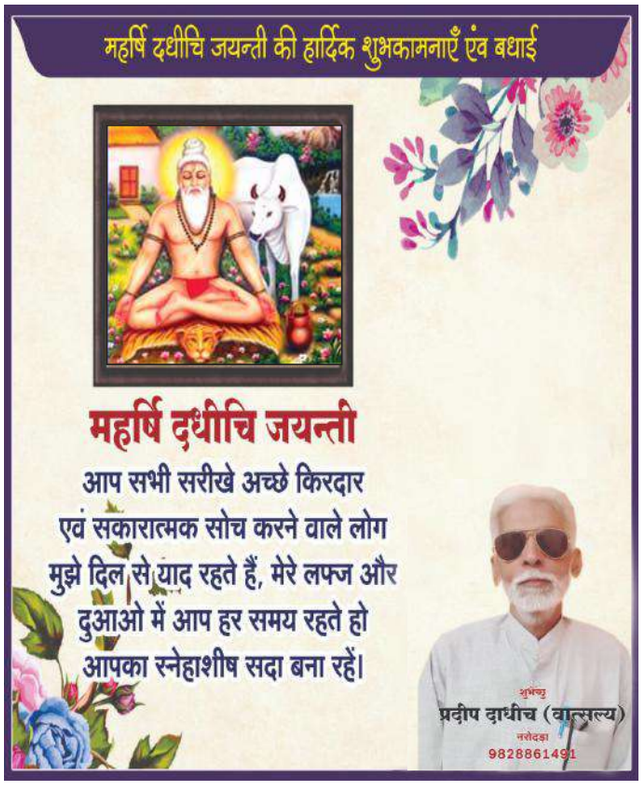

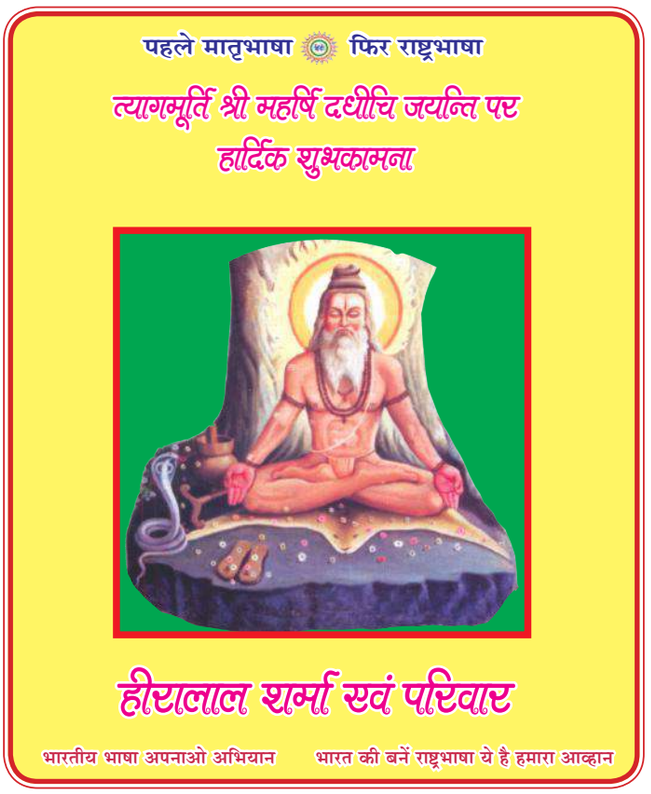

स्वार्थ में अंधे ना होकर राष्ट्र कल्याण के बारे में भी सोचना चाहिए

भारत में बड़े-बड़े दानी हो कर गये हैं। परन्तु सम्पूर्ण विश्व में सर्वप्रथम महादान किया था 'महार्षि दधीचि' ने। महर्षि दधीचि अर्थवापुत्र थे। महादानी महर्षि दधीचि ने अपनी अस्थियाँ देवताओं को समाज कल्याण के लिए दान कर दी थी। अस्थिदान के लिए उन्होंने हँसते-हँसते प्राण त्यागे थे।

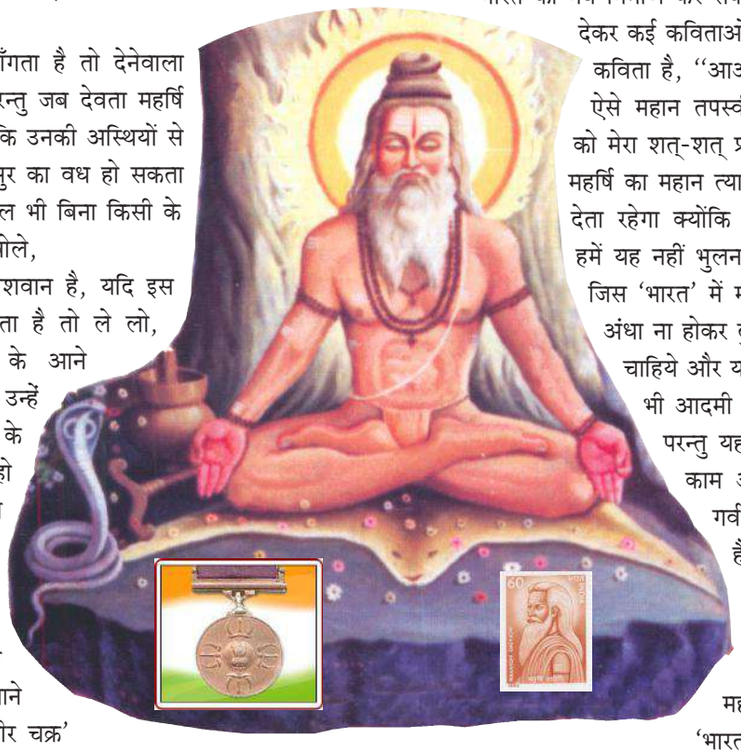

आज कोई किसी से दान माँगता है तो देनेवाला एक बार जरुर सोचता है, परन्तु जब देवता महर्षि दधीचि से प्रार्थना करने लगे कि उनकी अस्थियों से जो अस्त्र बनेंगे उसी से वृत्तासुर का वध हो सकता है, उस वक्त महर्षि ने एक पल भी बिना किसी के बारे में सोच, तुरन्त हँसकर बोले, ''देवताओं! यह शरीर तो नाशवान है, यदि इस शरीर से संसार का हित होता है तो ले लो, शीघ्रता करो, गृहस्वामिनी के आने से पहले यह दान ले लो'' उन्हें यह पता था के गृहस्वामिनी के आने पर दान में विलम्ब हो सकता है, उन्होंने महादान 'अस्थिदान' किया जिस अस्थियों द्वारा ८२० राक्षसों का संहार हुआ।

श्री सावित्री खानोलकर ने वीरता के लिये पहचाने जाने वाला सर्वोच्च सम्मान 'परमवीर चक्र' का प्रारुप बनाते वक्त महर्षि दधीचि से प्रेरणा ली गयी थी। परमवीर चक्र के एक और उन्होंने वज्र बनाया (वज्र बनाने के लिये महर्षि ने अस्थिदान किया था) और दूसरी और शिवाजी की तलवार बनाई गई। यह परमवीर चक्र १६ अगस्त १९९९ को अस्तित्व में आया। महात्मा गाँधी जी ने विश्वंदन, विश्व उद्धारक, त्यागमुर्ति महर्षि दधीचि का मन्दिर जहाँ पर था, वहीं पर १७ जुन १९१७ को साबरमती आश्रम की स्थापना की थी। २७ जुन १९२४ को इसी स्थान पर राष्ट्रीय काँग्रेस महासमिति का अधिवेशन हुआ था, इस अधिवेशन के सिंहद्वार पर गाँधीजी ने उन नेताओं, सत्याग्रहीयों और राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के शिक्षणार्थ अपनी देह पर दु:ख हरण महर्षि दधीचि का चित्र विराजमान कर, महर्षि के प्रति भक्ति और सम्मान उपस्थित किया था। महात्मा गाँधी ने कहा, ''महर्षि दधीचि के त्याग का सच्चा अनुकरण यदि हम कर सकें तो हिन्दु धर्म और भारत वर्ष की रक्षा करने की योग्यता हम सब में आ सकती है।

अर्थवापुत्र महर्षि दधिचि ने सर्वप्रथम मनुष्यों को अग्नि प्रज्वलित करने के विधी सिखाई थी। भारत सरकार के एक विभाग द्वारा महर्षि दधीचि के सन्मान में एक टिकट प्रकाशित किया गया था।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व: अटलबिहारी वाजपेयी, महर्षि दधीचि के बारे में अपार आदर रखते हैं। उनका यह विश्वास है कि दधीचि के भाँती त्याग ही भारत का नव निर्माण कर सकता है, उन्होंने महर्षि दधीचि का संदर्भ देकर कई कविताओं की रचना भी की है उसमें एक मशहूर कविता है, ''आओ फिर से दिया जलायें''

ऐसे महान तपस्वी, महादानी, महात्यागी महर्षि दधीचि को मेरा शत्-शत् प्रणाम।

महर्षि का महान त्याग और दान हमें शताब्दियों तक प्रेरणा देता रहेगा क्योंकि हम कितने भी आगे बढ़ जायें परन्तु हमें यह नहीं भुलना चाहिये कि हम भी उसी भारत के हैं जिस 'भारत' में महर्षि दधीचि हुए, हमें केवल स्वार्थ में अंधा ना होकर दुसरों के कल्याण के बारे में भी सोचना चाहिये और यथा शक्ति दान-पुण्य करना चाहिये, वैसे भी आदमी अकेला आया है और अकेला जायेगा, परन्तु यह दान की पोटली परलोक यात्रा में भी काम आयेगी। धन्य है महर्षि दधीचि... मुझे गर्व है कि, हमारे वंशज महर्षि दधीचि है। राजस्थान एक धर्मनिष्ठ, कलावंत प्रांत है, जहां युग-युग से मानवता के उन्नायक जन्म लेते रहे हैं। आज हमारी भारतमाता को धर्मवीर दधीचिस्वरूप महापुत्रों की आवश्यकता है तभी हमारा 'भारत' फिर स्वर्णपंछी, विश्वगुरू के रूप में प्रतिष्ठापित हो सकता है। ऐसे महाभाव के साथ विश्व में फैले दाधीच वंशज को मेरा प्रणाम, साथ निवेदन भी है कि हम दाधीच वंश त्याग की परम्परा को निभाने वाले अपने दिल से अहम की भावना निकालकर परम पूज्यनीय, प्रात: स्मरणीय विश्वमानव दधीचि के प्रेरणा से हम-सभी भाई-बहन मिलकर अपने समाज में एकता लायें और दायमा समाज को विश्व में पहचान दिलायें, ऐसी मनोकामना के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत एक अंतर्मन का उद्गार कि महर्षि दधीचि का 'भारत' अब केवल 'भारत' के नाम से ही पहचाना जाए।

महादानी, उपकारसूर्य, त्यागअवतार
तेरी महिमा अपार हे दधीचि ऋषिराज
लेकर आपके प्रेरणाप्रसाद
हमारा 'भारत' बन सकता है
सम्पूर्ण विश्व का सरताज!

- अनुपमा शर्मा (दाधीच)
कार्यकारी सम्पादक
मेरा राजस्थान

गौचर भुमी -गायों के लिए आरक्षित भुमी आखिर कहाँ गई

पूर्वकाल मे हर गाँवो में गायों के चरने विचरन करने के लिऐ जमीन छोड़ी जाती थी, उसे गौचर भुमी कहते थे। गौ याने गौमाता और चर याने गायों के चरने विचरने का स्थान। पूर्वकाल में गाँव के आसपास काफी मात्रा में गायों के लिए जमीन छोड़ी जाती थी, सदीयों से गौचर ओरण, गौराण, सरेडा, की जमीन ग्रामीण संस्कृती का अभिन्न हिस्सा रहा है! पर्यावरण संरक्षण व पुण्य भावना से प्रेरित होकर हर गाँव में ओरण व गौचर के लिए भुमी सुरक्षित रखी जाती थी, जिस पर घर तो क्या मंदिर मठ भी नहीं बनाये जाते थे। गौचर भुमी जहाँ गौ माता, हरी हरी घास वनस्पत्तीयां खाकर कर, सरोवरों का पानी पीकर आराम से बैठती थी। गौचर भुमी पर गौ माता के अलावा किसी का अधिकार नहीं होता था, उस समय राजा और प्रजा दोनों मिल कर गौचर भुमी छोड़ते थे। कुछ लोग संतान प्राप्ती, शुभ आयोजनों पर व स्वेच्छा से भी गौचर भुमी दान करते थे, उस गौचर भुमी पर किसी भी प्रकार का राज्य कर भी नहीं होता था। पूरे गाँव की गायें वहां चरती और विचरण करती थी। लोग इस बात से डरते थे कि गौचर भुमी का एक तिजका ,एक लकड़ी या एक दाणा भी घर पर न आए, इसलिए वो लोग गौचर भुमी का सम्मान करते थे। गौचर भुमी से उत्पन धान्य और घास एक अग्नी के अंगारे के समान होता है जिसे गायों के अलावा कोई मनुष्य पचा नहीं सकता। संतों महापुरूषों ने गौ ग्रास को अग्नी के अंगारों के समान बताया है! कुछ बड़े बुजुर्ग कहते हैं कि जिन लोगों के खेत की सीमा गौचर भुमी से लगती थी वो किसान अपने खेत से गौचर भुमी से लगी सीमा पर १०-२० फुट तक खेती नहीं करता था, उन्हें इस बात का डर था कि कई गौचर भुमी की मीट्टी हवा के द्वारा खेत में आ गई हो, उसमे अनाज पैदा होकर परिवार में आ जाये तो परिवार को नुकसान हो सकता है। कुछ बडे बुजुर्ग बताते हैं कि किसी के खेत का रास्ता गौचर भुमी से होकर गुजरता था, जब लोग गौचर भुमी से होते हुऐ अपने खेत में जाते थे, उससे पहले वो लोग अपने जुतों को भी उल्टा कर झटकते थे कि कहीं गौचर भुमी की मीट्टी खेत में न आ जाए, गौचर भुमी की मीट्टी खेत में आ गई और उनसे अन्न पैदा होकर खा लिया तो परिवार मे भयंकर विनाश हो सकता है।

पहले जमाने मे पंच पंचायती मे भी पहले गौचर भुमी की शपथ खिलाई जाती थी, जब गौचरण भुमी का हवाला देकर उचित सत्य पर फैसला लिया जाता था।

जब देश आजाद हुआ तब ३ करोड़ ३२ लाख ५० हजार ऐकड़ भुमी गायों के लिए आरक्षित की गई थी, आज आखिर कहां गई वो गौचर भुमी, जमीन खा गई या आसमान निगल लिया, आखिर कहा गई वो जमीन?

कुछ भुमी सरकार ने हड़प ली, कुछ नेताओं ने कुछ भुफीयाओं को चंद रूपयों के खातीर बेच दी, कुछ पर नेताओं और भुमाफीयों ने कब्जा कर लिया, सरकार ने सरकारी दफ्तर बना लिए, कुछ लोगों ने अपने खेत की सीमा से लगे गौचर को अपने खेत में मिला दिया, कुछ लोगों ने गौचर भुमी पर बंगला, कोठीयां बांध ली अपने आशियाने बना लिए, गौचर भुमी पर कुछ बाबाओ ने अपने बड़े-बड़े मठ बना लिए। सरकारी आवास बना लिए गौचर भुमी पर कुछ मंदिर बना लिए। गौचर भुमी पर कुछ लोगों ने समाज की संस्थाए खोल लीं, कुल मिला कर लोगो ने गौ माता का हक छिन लिया, इसलिए आज गौ माता को रोड पर आना पडा, आज गौचर भुमी पर स्वार्थी लोगों ने कब्जा जमा लिया इसलिए आज हमारी गौमाता, भुखी प्यासी, कभी कलेक्टर ऑफीस के आगे, कभी कोर्ट कचेरी के आगे, कभी ऐसडीएम, बिडीओ ओफीस के आगे, कभी गली चौराहों बीच बाजार पर भुख प्यास मिटाने के लिऐ मारी-मारी फिर रही हैं। जहां दफ्तरों के आगे बैठे या सर्कल चौराहों पर, और गली-मोहल्लों से डंडा मार मार कर लोग गौ माता को भगा रहे हैं, आखिर दुखियारी गौ माता जाए तो कहां जाए? बहुत बड़ी भयंकर पिड़ा और वेदना को हमारी पुज्य गौ माता झेल रही है। गौओं का हक छिनकर गौओं को बेघर कर, गौओं को रोड पर लाने वालों, एक दिन स्वयं रोड पर आ जाओगे, अगर भुल वश भी गौचर भुमी पर कब्जा किया हो तो भी वो छोड़ दो या उनके बदले गौ ग्रास गौओ को दे दो, नहीं तो इसका परिणाम भुगतना ही होगा। गौ माता का आशियाना छिनने वाले ७ जन्मों तक नर्कगामी होते हैं। गौचर भुमी पर कब्जा करने वाले लोग किसी न किसी प्रकार से दुखी अवश्य रहते है, भले गृह कलेश, पारिवारीक दुखः, कुटुंब अशांति या परिवार में अपंग संतान, बीमारी व्याधि आदि किसी न किसी प्रकार से अवश्य दुखी तो होते ही हैं, माँ को दुखी कर आज तक कौन सुखी हो पाया है भला। गौचर बचाओ, गौ माँ को अपना हक दिलाओ।

- प्रस्तुति ग्राम देवली कलां

मधुसूदन मालानी प्रतिभाओं के धनी

मधुसूदन मालानी एक २० वर्षीय नवयुवक लेखक हैं, जिन्होंने गोपी बिड़ला मेमोरियल स्कूल से अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की और वर्तमान में आप जय हिंद कॉलेज, मुंबई, भारत में अपनी स्नातक की पढ़ाई कर रहे हैं। आप बचपन से ही आध्यात्मिक विचारधारा के रहे हैं और आपकी आध्यात्मिकता हाई स्कूल के शुरुआती वर्षों में बढने लगी, जिसके आपके दोस्तों से तटस्थ कर दिया और आज आपको आध्यात्मिकता के साथ एक गहरा लगाव है। पिछले कुछ समय से मधुसूदन जी आध्यात्मिक आगम ज्ञान के बारे में जिज्ञासु हो रहे हैं, आपकी जिज्ञासा टैरो कार्ड रीडिंग, क्रिस्टल बॉल स्क्राइंग,पेंडुलम डोज़िंग, साइकोमेट्री और ऑटोमेटिक राइटिंग के रूप में प्रदर्शित हुई है। आप एक अन्तरदृष्ठा,एक प्रामाणिक न्यूमेरोलॉजिस्ट, ग्राफॉलोजिस्ट और फेस रीडर के रूप में स्थापित हुए हैं। आपका औरा रीडिंग, माइंड रीडिंग, टेलीपैथी, टेलीकनिसिस, स्पिरीट कम्युनिकेशन, मेरकाबा हीलिंग, तंत्र और वास्तु-शास्त्र का भी ज्ञान है। लोगों के आग्रह पर आपने अपनी एक कंपनी 'साइकिक इनसाइट' की स्थापना की है जिसके अन्तर्गत लोगों का मार्गदर्शन भी करते हैं। आपके द्वारा मन के चमत्कारों में से प्रसिद्ध स्टील के चम्मचों को मोड़ देना और एक कांच के नाजुक बल्ब से एक मजबूत टाइल को तोड़ देना शामिल है, जिसे आपने अपने अवचेतन मन की शक्ति द्वारा कर दिखाया है।

मधुसूदन ट्रिपल मून गोडेजू टेम्पल से सम्बन्धित विक्कन धर्म के प्रीस्ट (गुरू) भी हैं। विक्कन धर्म का आधार प्रकृति की पूजा और पांच तत्वों के साथ गहरे संबंध जोड़ना है। आध्यात्मिक क्षेत्र के अलावा मधुसूदन एक राष्ट्रीय स्तर के घुड़सवार भी हैं, जो कि आप शो जंपिंग और घुड़सवारी की प्रतियोगिताओं में भी भाग ले चुके हैं। आप एक जिला स्तरीय जिमनास्ट, हेयर स्टाइलिस्ट और मधुबनी, कलमकारी तथा वार्ली आर्ट के चित्रकार भी हैं। मधुसूदन एक प्रामाणिक अंतर-प्रजाति संचालक है, आप जानवरों और पौधों के साथ समय बिताने के साथ उनसे एक आत्मीयता का संबंध बनाकर आनंदित होते हैं।

वर्तमान में आप अपने परिवार के साथ मुंबई, भारत में रहते हैं, जहां आपने सभी योजनाओं को साकार करते है, विशेषकर परिजनों द्वारा आपकी आध्यात्मिक यात्रा में सार्थक भूमिका निभाते हैं।

उदयरामसर विशेषांक के प्रकाशन पर सहयोग हेतु विशेष आभार

विमल सिपानी
कोलकाता

बनवारीलाल शर्मा
उदयरामसर

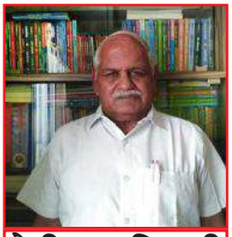

नेमीचन्द सिपानी
कोलकाता

अशोक गहलोत
भीनासर

डॉ. मनमोहन यादव
उदयरामसर

पूर्व बीकानेर रियासत के महाराजा नरेन्द्रसिंह की पत्नी विधायक सिद्धी कुमारी की मातुश्री पद्माकुमारी नहीं रही

बीकानेर: पूर्व बीकानेर रियासत के महाराजा स्व. नरेन्द्रसिंह की पत्नी एवं बीकानेर पूर्व की विधायक सिद्धीकुमारी की माता पद्माकुमारी का निधन हो गया। हार्ट में तकलीफ के चलते तीन दिन पहले उन्हें स्थानीय हल्दीराम हार्ट हॉस्पिटल में भर्ती करवाया गया था। डाक्टर्स के मुताबिक उनकी हालत में सुधार नहीं हो रहा था। इस वक्त विधायक सिद्धीकुमारी उनके पास ही मौजूद थी। हल्दीराम हार्ट हॉस्पिटल के प्रभारी एवं हृदय रोग विभागाध्यक्ष डा.पिंटू नाहटा के मुताबिक उन्हें कार्डिएक अरेस्ट हुआ था।

बीकानेर रियासत की बहू बनकर आई चंबा की राजकुमारी पद्माकुमारी के निधन से लालगढ़ में शोक व्याप्त हो गया। पद्माकुमारी अभी लॉकडाउन में भी प्रभावितों की सहायता के लिए विधायक बेटी के साथ मिलकर महल से ही मदद पहुंचाने में सक्रिय रही थी। हाल ही अपने ट्रस्ट से उन्होंने पीड़ितों के लिए पांच लाख रुपए की नकद सहायता भी दी। हालांकि राज परिवार अभी लालगढ़ पैलेस में निवास करता है लेकिन मूल पैतृक निवास और राजगद्दी जूनागढ़ ही है। ऐसे में देर रात उनका शव जूनागढ़ ले जाया गया। पद्माकुमारी की दोनों बेटियां विधायक सिद्धीकुमारी, महिमाकुमारी सहित राज परिवार से जुड़े प्रमुख सदस्य देर रात यहां पहुंच गए। लगभग ६७ वर्षीय पद्माकुमारी चंबा, हिमाचल प्रदेश रियासत की राजकुमारी थी। बीकानेर रियासत के महाराजा डा.करणीसिंह के राजकुमार नरेन्द्रसिंह से उनकी शादी हुई थी। पति नरेन्द्रसिंहजी का स्वर्गवास २००३ में ही हो चुका है।

महेन्द्र सिपानी जैन
व्यवसायी व समाजसेवी
उदयरामसर निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९३२२८१६४१

महेन्द्र जी का परिवार ५५ वर्षों से कोलकाता का प्रवासी है। आपका मूल निवास स्थान बीकानेर का 'उदयरामसर' है, आपका जन्म गंगाशहर में व बी.कॉम. तक की शिक्षा प. बंगाल के कोलाघाट में हुई। कोलकाता में आप ट्रांसपोर्ट के कारोबार से जुड़े हैं, आप सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय भूमिका निभाते हैं, कोलकाता स्थित कई संस्थाओं में सक्रिय सदस्य के रुप में कार्यरत हैं।

अपनी पैतृक भूमि 'उदयरामसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'उदयरामसर' बहुत ही सुंदर गांव है, यहां के लोग बहुत ही मिलनसार है, सभी एक-दूसरे के सहयोग के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं, यहां के निवासी शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणीय है, देश के निजी व सरकारी प्रतिष्ठानों में विशेष पदों पर कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्रों में भी अग्रणीय भूमिका निभाते हैं, यहां कई भामाशाह हुए हैं जिन्होंने समाज व गांव के विकास में अहम भूमिका निभायी है।

'उदयरामसर' प्राकृतिक दृष्टि से भी सुंदर है, यहां के रेतीले धोरे बहुत ही सुंदर हैं जो अन्य नहीं देखने को मिलते। यहां की 'दादावाड़ी' प्रमुख धार्मिक स्थल है, कहा जाता है कि गांव के बसने के पूर्व ही यह धर्मस्थल बना था। यहां कई हिंदु मंदिर है, जैन मंदिर है, यहां धर्मशाला व अनेक सामाजिक भवन स्थापित हैं जिसका उपयोग सामाजिक कार्यक्रमों के लिए होता है, यहां के निवासी सामाजिक कार्यों में मिलजुल कर अपनी सहभागिता देते हैं।

भाषा के संदर्भ में कहते हैं कि हम कहीं भी रहे, हमें अपनी भाषा को विशेष स्थान देना चाहिए, दैनिक जीवन में मातृभाषा का उपयोग अवश्य करना चाहिए जिससे हम अपनी जड़ों से जुड़े रहें। राष्ट्रभाषा के रुप में 'हिंदी' को मान्यता अवश्य मिलनी चाहिए।

मदनलाल ईनाणियाँ
भू.पू. राष्ट्रीय अध्यक्ष अ. भा. दा. (दाधीच) ब्राम्हण महासभा
चुरू निवासी-सिकर प्रवासी
भ्रमणध्वनि-९४१४०८६६६७

मदनलालजी का जन्म ११ अप्रैल १९३८ को सुजानगढ़ (चुरू) निवासी भागवत् मर्मज्ञ पं. देवीदत्तजी ईनाणियाँ माताश्री धापू देवी के यहां ८वें पुत्ररत्न के रूप में हुआ। आपने बी.कॉम. तक शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर में १९६० से कई पदों पर कार्य एवं कतिपय शाखाओं में ३८ वर्षों तक सेवा कर १९९८ में मीरा नगरी मेड़ता से सेवा-निवृत्त हुए। पारिवारिक संस्कार विरासत में मिलने से सामाजिक, धार्मिक एवं अन्य गतिविधियों में समर्पित भाव रखते हुए सहयोग एवं सेवा करने में आत्मिय सुख की अनुभूति करते हैं। सन् १९९९ में सुजानगढ़ में असहाय, निराश्रित बालकों के जीवन संवारने हेतु 'निराश्रित शिशु विकास समिति (पंजि.) की स्थापना कर सुजला क्षेत्र के बालकों की शिक्षा, आवास, भोजन एवं अन्य आवश्यकताओं की नि:शुल्क व्यवस्था कर, राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाया। २००२-२००५ तक दाधीच समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में समाज सेवा निष्ठापूर्वक, ईमानदारी एवं समर्पण भाव से की। श्री गोपाल गौशाला सुजानगढ़ के संरक्षक के रूप में कार्यरत रहे। आचार्य श्री महाप्रज्ञ के अणुव्रत अभियान में सुजानगढ़ अणुव्रत समिति के अध्यक्ष एवं चुरू जिले के उपाध्यक्ष, मानवाधिकार निगरानी समिति के प्रान्तीय उपाध्यक्ष के रूप में सेवा की। जरूरतमंद, विद्यार्थियों की फीस, गणवेश पुस्तकें वितरण करवाए एवं सर्दी में गावों में रजाई, कंबल आदि का वितरण भी करवाया। आप एक धार्मिक पुरूष हैं, अत: समय-समय पर धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन करते रहते हैं।

महर्षि दधीचि जयंती पर अपने भाव व्यक्त करते हुए कहते हैं कि महर्षि दधीचि ने पूरे विश्व के सम्मुख त्याग की अनुपम मिशाल प्रस्तुत की है। हमें गर्व है कि हम महर्षि दधीचि के वंशज है। उन्होंने सत्य व धर्म की रक्षार्थ अपने शरीर का त्याग किया था। इससे यह संदेश जाता है कि परहित में ही जीवन सार्थक है। समाज द्वारा उनके दिए संदेशों का पालन किया जा रहा है। रक्तदान, नेत्रदान, अव्ययदान, देहदान के लिए प्रेरित हो रहे हैं। इस तरह आज समाज परहित सेवाकार्य के लिए जागरूक हो रहा है। दधीचि जयंती का आयोजन प्रत्येक वर्ष बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है, पर इस वर्ष कोरोना काल के दौरान सभी भाइयों द्वारा घरों में ही पुजा पाठ द्वारा मनाया गया। दधीच जयंती के पावन पर्व को सभी बंधुओं को शुभकामनाएं।

युवाओं के लिए मेरा यही संदेश है कि वे धर्म व समाज के लिए समर्पित रहें। आज की बुर्जुग पिढ़ी युवा पिढ़ी की तरफ आस लगाए बैठी है, उन्हें निराश ना करें। अगर युवा पिढ़ी परिवार, समाज व देश के लिए सोचेगी तो समाज उनके लिए सोचेगा।

-आगे आप कहते हैं कि

मेरे दाधीच समाज में कोई गरीब न हो, कोई अनपढ़ ना हो। समाज से गरीबी व आज्ञानता का उन्मूलन करने के लिए हर सम्पन्न दाधीचि पुत्र में प्रतिस्पर्धा हो। प्रत्येक दधीचि पुत्र एक अग्रगण्य मानवतावादी हो। आपसी विवाद मिल बैठकर निपटाये, जिससे पुलिस व न्यायालय में व्यय होते धन व समय को निजात मिल सकें। प्रत्येक दाधीच के घर में भगवान महर्षि दधीचि एवं माँ दधिमथी की पूजा अर्चना हो। समूचे राष्ट्र में दाधीच समाज एक अग्रगण्य समाज के रूप में पहचाना जाये। दाधीच समाज की एकता व सम्पन्नता देखकर हर समुदाय के यही उदगार हो, 'वाह दाधीच समाज में कैसा विश्वासातीत परिवर्तन आया है। हर दधीचि पुत्र पर माँ की असीम कृपा बरसती रहे।'

'मेरा राजस्थान' का पत्रिका राजस्थानी संस्कृति परम्परा व कला का प्रतिनिधित्व करती है। पत्रिका के माध्यम से प्रवासीय राजस्थानीयों को राजस्थान से जोड़े रखने का प्रयास सराहनीय है। पत्रिका को उसके उद्देश्य में निरंतर सफलता मिले, यही शुभकामनाएं हैं।

मुकुंद डोबा
व्यवसायी व समाजसेवी
नागौर निवासी-हैदराबाद प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३९२६६४७४३

मुकुंद जी मूलत: राजस्थान स्थित नागौर के निवासी हैं। आपका परिवार कई वर्षों से हैदराबाद का प्रवासी है। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा हैदराबाद में सम्पन्न हुई है, यहां आप मुकुंद ट्रेडिंग कं. नामक शुगर (चिनी) के कारोबार से ४० वर्षों से जुड़े हैं। जो आपने स्वयं अपनी मेहनत व लगन से स्थापित की है। आप सामाजिक क्षेत्रों में विशेष रुप सें उल्लेखनीय कार्यरत रहते हैं। आप सभी समाज के सामाजिक कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं, हैदराबाद दधीच समाज के पूर्व उपाध्याक्ष रहे हैं। हैदराबाद शुगर मर्चेंट असोसियेशन के अध्यक्ष रहे हैं। हैदराबाद स्थित इस्कॉन टेम्पल के सलाहकार समिति के डायरेक्टर के पद कार्यरत हैं व अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

महर्षि दाधीचि एक महापुरूष थे, उन्होंने जगत के लोक कल्याण के लिए अपनी हड्डियों को दान कर दिया था, इससे यह संदेश जाता है कि परहित में ही जीवन सार्थक है। दधीचि जयंती का आयोजन हम बड़े ही धूमधाम से करते हैं, जुलूस निकाला जाता है, बच्चों के लिए कार्यक्रम का आयोजन के साथ भोजन, महाप्रसादी की व्यवस्था की जाती है, इस सुअवसर पर यहां समाज कल्याण संबंधित कार्यक्रम एवं रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाता है पर इस वर्ष कोरोना काल में ऑनलाइन कार्यक्रम ही आयोजित होगा।

दधीचि समाज की विशेषता यही है कि हम महादानी महर्षि दधीचि के वंशज हैं। त्याग, दानपुण्य में विश्वास करते हैं। वर्तमान में दाधीचों का सामाजिक स्तर काफी विकसित हुआ है, शिक्षा का स्तर अच्छा हुआ है, महिलाओं का विकास पहले की अपेक्षा ज्यादा हुआ है।

''मेरा राजस्थान'' पत्रिका मैं अवश्य देखना चाहूंगा, मैंने किसी और के यहां देखी है, पत्रिका की तरफ काफी आकर्षित हुआ हूं। पत्रिका परिवार की मेहनत एवं लगन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

-मे.रा

सम्पादक-विजय कुमार जैन

जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

दिगम्बर श्वेताम्बर जैन

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

GREAT ARTISTS CHOOSE GREAT MARBLE

SIPANI
MARBLES

When it comes to home decor, your home
needs a touch of luxury.

Choose a strong, stylish and sophisticated marble,
created solely for your masterpiece.

BANGALORE • KRISHNAGIRI

www.sipanimarbles.com | + 91 99000 22355

RNI No. MAHHIN/ 2003/11570
Postal Registration No. MCN/113/2019-2021
WPP License No. MR/Tech/WPP-246/North/2019-21
'License to post without prepayment'
Published on 28/08/2020 & Posting on 30th of every previous Month
at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

ADD Gel®

ACHIEVER®

THE WORLD'S
FINEST GEL PEN

Non Dry
NOW...UPTO 2 YEARS

ONLY ₹50/- PER PC

LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

Presenting New ADD Gel Achiever, the world's finest gel pen. With improved dye base ink that stays Non-Dry for up to 2 years. For smoother, effortless writing.

www.addpens.com

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के संपादक, मुद्रक व प्रकाशन बिजय कुमार जैन द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इंन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इंन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड़, अंधेरी पूर्व, मुम्बई-400093 से मुद्रित करवाकर बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र-400 059 से प्रकाशित किया, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक - mailgaylordgroup@gmail.com